ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

माघ-फाल्गुन, संवत् नानकशाही ५४८
वर्ष १० अंक ६ फरवरी 2017

संपादक : सतविंदर सिंघ फूलपुर
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ
गुरप्रीत सिंघ भोमा

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**

फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

बेगम पुरा सहर को नाउ ॥ दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ ॥
नां तसवीस खिराजु न मालु ॥ खउफु न खता न तरसु जवालु ॥१॥
अब मोहि खूब वतन गह पाई ॥ ऊहां खैरि सदा मेरे भाई ॥१॥ रहाउ ॥
काइमु दाइमु सदा पातिसाही ॥ दोम न सेम एक सो आही ॥
आबादानु सदा मसहूर ॥ ऊहां गनी बसहि मामूर ॥२॥
तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै ॥ महरम महल न को अटकावै ॥
कहि रविदास खलास चमारा ॥ जो हम सहरी सु मीतु हमारा ॥३॥२॥ *(पन्ना ३४५)*

राग गउड़ी में अंक्ति इस पावन शब्द के माध्यम से भक्त रविदास जी इसी मातलोक में मनुष्य मात्र के सर्वोच्च आध्यात्मिक विकास की मानसिक-आत्मिक मंज़िल की कल्पना करते हुए कथन करते हैं कि हे मेरे भाई! उस शहर का नाम बेगम पुरा (वह स्थान जहां कोई गम नहीं है) है, जो मैंने ढूंढ लिया है। उस स्थान पर दुख-तकलीफ़ है ही नहीं। मैंने वह स्थान पा लिया है जहां माल पर चुंगी-कर लग जाने की कोई अशंका नहीं है। कहने से तात्पर्य, वहां दुनियावी दौलत तथा उसकी सुरक्षा की समस्या नहीं है। एक ऐसा शहर जहां न भूल होती है और न ही उससे उत्पन्न भय का ही सामना करना पड़ता है। दूसरे शब्दों में, अडोल मानसिक-आत्मिक अवस्था में मन पर सांसारिक कार्यों का बोझ नहीं होता और न ही उनके अधूरे रह जाने की आशंका समस्या बनती है। उस अवस्था में कोई दुष्ट-कर्म या पाप-कर्म होने का भय भी नहीं और न ही उससे होने वाली विपदा का ही डर होता है। भक्त जी पूर्ण संतुष्टि की मनोस्थिति में फरमान करते हैं कि मेरा देश बहुत ही अच्छा है जो मैंने दृढ़ता से रहने के लिए पकड़ अथवा चुन लिया है। हे मेरे भाई! वहां सदैव बचाव एवं सुरक्षा है।

भक्त रविदास जी आगे फरमान करते हैं कि अडोल मानसिक-आत्मिक अवस्था सदैव कायम रहने वाली बादशाहत है अर्थात् यह सांसारिक बादशाहत की तरह अस्थिर नहीं। इस बादशाहत में रहने वाले लोगों का प्रथम, द्वितीय और तृतीय दर्जा नहीं है बल्कि सभी एक समान निवास करते हैं। सभी के सभी सुख-सुविधायों सहित जीवन बसर करने वाले धनवान और समान रूप में जाने माने भी हैं। कहने से तात्पर्य मानसिक-आत्मिक अडोल अवस्था में मनुष्य मात्र पदार्थक वस्तुओं के पीछे अनावश्यक रूप से दौड़-धूप में नहीं उलझता तथा वह प्रभु की ओर से बख़्शी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति करते साधन होने पर संतुष्टि महसूस करता है। वह अनचाही भूख और कंगाली की दीन-दशा का शिकार नहीं होता।

भक्त जी फरमान करते हैं कि बेगम पुरा के वासी परमात्मा के महल में विचरण करने के रास्ते में उन्हें किसी प्रकार की बाधा नहीं पड़ती भाव प्रभु के नाम में रत्त भक्त को रूहानी आनंद की प्राप्ति होती है। भक्त रविदास जी अपनी तथाकथित चमार जाति का नि:संकोच और आत्म-सम्मान के साथ उल्लेख करते हुए कहते हैं कि जिसने उपरोक्त मनोस्थिति अथवा मानसिक-आत्मिक अवस्था को प्राप्त किया है वह उनका हम-सहरी अथवा मित्र तथा सतसंगी है, भाव ऐसी मनोस्थिति के धारक सभी सतसंगी होते हैं। ❁
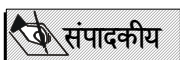
आओ! गुरमति सिद्धांतों के पहरेदार बनें

गुरबाणी में बार-बार गुरु की बात सुनने, मानने तथा हृदय में धारण करने की ताकीद की गयी है। गुरु का एक-एक वचन मानव जीवन को संवारने वाला है, इसलिए सिक्ख ने गुरु की बात में ज़रा-सी भी शंका, तौखला नहीं करना क्योंकि गुरबाणी का फरमान है *"जो गुरु दसै वाट मुरीदा जोलीऐ ॥"*

श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक गुरु साहिबान ने मानवता की भलाई की खातिर प्रचार यात्राएं कीं, गुरबाणी की रचना की तथा समूची मानवता को सच का रास्ता दिखाया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने तख़्त श्री केसगढ़ साहिब, श्री अनंदपुर साहिब तथा चमकौर साहिब की गढ़ी में विश्व की सबसे असमान एवं अतुलनीय जंग लड़ते हुए और अपने अंतिम समय तख़्त सचखंड, श्री हजूर साहिब नांदेड़ में सिक्ख संगत को 'गुरु-ग्रंथ', 'गुरु पंथ' के लड़ लगाया। वर्तमान समय में गुरुता के सिद्धांत को समझने के लिए जोत एवं युक्ति को समझना आवश्यक है। गुरु नानक जोत ने मानवता के उद्धार हेतु युक्ति समझाने की खातिर श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ तक दस स्वरूप-जामे धारण किए। गुरु साहिबान ने इस जगत में शारीरिक जामे में विचरण करते हुए गुरबाणी की रचना की, मानवता को सच के मार्ग पर तोरने के लिए प्रचार यात्राएं कीं, सिक्ख पंथ को जत्थेबंदक रूप देने के लिए नये-नये नगरों का निर्माण करवाया, मानवता की सुविधा हेतु कुएं, सरोवार, बावलियां, धर्मशालाएं आदि कायम कीं। गुरु साहिबान की बख़्शिश तथा परिश्रम सदका जब गुरसिक्खों की रूहानियत तथा रहणी गुरु आशय में प्रवान चढ़ गई तो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'गुरु खालसा पंथ' को इस जत्थेबंदक धर्म की अगुवाही करने हेतु 'गुरु जोत' रूप 'गुरबाणी' (गुरु-ग्रंथ) की अगुवाही में 'गुरु-युक्ति' बरताने के समर्थ बनाकर 'गुरु-पंथ' को गुरुआई बख़्शिश कर दी। अब पंथ के फैसले श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की अगुवाही (रौशनी) में 'गुरु खालसा पंथ' ने लेने हैं। गुरु खालसा पंथ ने गुरुआई की युक्ति के अधिकार प्रयोग करते हुए समय की मांग के अनुसार सिक्ख संस्कार तथा सिक्ख रहणी को निर्धारित करने के लिए गुरबाणी, इतिहास तथा परंपराओं की रौशनी में सिक्ख रहित मर्यादा निर्धारित की, जिसमें सिक्ख की शख़्सी एवं पंथक रहणी, सिक्ख संस्कारों, जन्म तथा नाम संस्कार, अमृत संस्कार, आनंद संस्कार, मृत्यु संस्कार के बारे में बाखूबी वर्णन किया गया है। प्रत्येक गुरसिक्ख ने बिना किसी संशय के गुरु-पंथ की इस गौरवमयी किरत 'सिक्ख रहित मर्यादा' को मानने तथा इसके अनुसार जीवन जीने के लिए वचनबद्ध होना है। सिक्ख रहित मर्यादा से आकी होना गुरु से बागी होने जैसी तोमत का अधिकारी बनना है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हजूरी में 'गुरु-पंथ द्वारा प्रवान की गई सिक्ख रहित मर्यादा का एक-एक शब्द 'गुरु-पंथ' का हुक्म है।

'गुरु-पंथ' की गुरुआई के बारे भी सिक्ख रहित मर्यादा में स्पष्ट किया गया है कि तैयार-बर-तैयार सिक्खों के समूचे समूह को 'गुरु-पंथ' कहते हैं। इसकी तैयारी दस गुरु साहिबान ने की तथा दशम पातशाह जी ने इसका अंतिम स्वरूप बनाकर गुरुआई सौंपी।

गुरुआई 'गुरु-पंथ' के पास है इसलिए पंथक फैसलों का अधिकार मात्र 'गुरु-पंथ' के पास ही है। इसलिए पंथक फैसलों के बारे में किसी के निजी विचार कदाचित्त प्रवान नहीं हो सकते।

सिक्ख इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि गुरमति परंपराओं के विरुद्ध जिसने भी बागी स्वर अपनाया। उसको गुरु-घर का दोखी जानकर दुत्कारा गया, गुरु साहिबान ने अपने जीवन-काल में भी अपने सिक्खों को ऐसे दोखियों की संगत करने से विवर्जित किया तथा सिक्खों ने उनको कभी मुंह नहीं लगाया। इतिहास में ऐसी कई मिसालें मिलती हैं जब गुरु दोखी-निंदकों ने गुरु-घर से माथा लगाया तो समय-समय गुरु के सिक्खों ने इनको रोकने के लिए अपनी शहादतें भी दीं तथा मस्से रंगड़ जैसे दोखियों का सिर भी काट दिया।

इस लिए आज भी पंथक मामलों के बारे में नकारात्मक टिप्पणियां करनी, गुरु-काल से चली आ रही परंपराओं को नकारने का प्रयत्न करना आदि गुरु के प्रति कृतघ्नता का प्रमाण है। जिनके कारण श्री अकाल तख़्त साहिब के रह चुके एक (रागी) जत्थेदार को 'गुरु-पंथ' से खारिज करना पड़ा। प्रत्येक नानक-नाम-लेवा गुरसिक्ख का यह फ़र्ज़ बनता है कि ऐसे पंथ दोखियों की पहचान करके पंथ की अमीर परंपराओं को बरक़रार रखा जाए। गुरु काल से लेकर वर्तमान समय तक गुरु साहिबान की चलाई गयी परंपराओं, मर्यादाओं, सिद्धांत एवं उनके लासानी इतिहास को सिक्ख कौम ने सिर धड़ की बाज़ी लगाकर तथा असंख्य शहीदियां देकर सुरजीत रखा है। वर्तमान समय की प्रासंगिकता में भी सिक्ख कौम इनकी रक्षार्थ हेतु निरंतर कार्यशील भूमिका निभा भी रही है और सभी पंथ दर्दियों को निभानी भी चाहिए। इसी में 'खालसा पंथ' की शान है। ❁

पंजि पिआले पंजि पीर छठमु पीरु बैठा गुरु भारी।
अरजनु काइआ पलटि कै मूरति हरिगोबिंद सवारी।
चली पीड़ी सोढीआ रूपु दिखावणि वारो वारी।
दलिभंजन गुरु सूरमा वड जोधा बहु परउपकारी।
पुछनि सिख अरदासि करि छिअ महलां तकि दरसु निहारी।
अगम अगोचर सतिगुरू बोले मुख ते सुणहु संसारी।
कलिजुगु पीड़ी सोढीआं निहचल नींव उसारि खलारी।
जुगि जुगि सतिगुरु धरे अवतारी ॥४८॥

श्री गुरु ग्रंथ साहिब तथा विश्व-भाईचारा

*-डॉ. कुलवंत सिंघ**

श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना करके १६०४ ई. में श्री हरिमंदर साहिब में इसकी स्थापना की और विश्व-भाईचारे को बहुत बड़ा पैगाम दिया। वो पैगाम यह था :

नानक सतिगुरु ऐसा जाणीऐ जो सभसै लए मिलाइ जीउ ॥ (पन्ना ७२)

उस समय का समाज अलग-अलग जातियों, धर्मों एवं इलाकों के विषय पर आपस में बंटा हुआ था। इसके परिणामस्वरूप विदेशी हमलावरों के लिए विखंडित समाज को गुलाम बनाना बहुत आसान काम था। ऐसे अंधकार के समय भारतीय समाज की अपनी सदियों पुरानी पहचान खत्म होती जा रही थी। जर, जोरू व ज़मीन मालिकों के हाथों से निकलने लगे थे। धीरे-धीरे समूह भारत को अपना अस्तित्व खोता हुआ अनुभव हुआ। इस संकटमयी स्थिति का मुकाबला करने के लिए समूह भारत में संत परंपरा ने जन्म लिया। विभिन्न क्षेत्रों के संतों, भक्तों ने धर्म एवं जाति के नाम पर पैदा हुए विभाजनों को दूर कर समूह भारत में सर्वसांझा समाज निर्मित करने हेतु आवाज़ बुलंद की और मानव-मूल्यों की प्रमुखता को स्वीकार करने पर ज़ोर दिया। दक्षिण से उठी भक्ति लहर उत्तर दिशा में भी फैल गई। उत्तरी भारत विशेषत: पंजाब की धरती विदेशी हमलावरों द्वारा पूरी तरह से रौंदी जा चुकी थी और यहां के सभ्याचार को पूरी तरह से खत्म करने की नीति चल रही थी, जबकि दक्षिणी भारत का सभ्याचार ऐसे संताप से आज़ाद था। धर्म की हिफ़ाजत करना तथा जुल्म को रोकना पंजाबियों के लिए अति आवश्यक हो गया था। श्री गुरु नानक देव जी की सारी बाणी इसी केंद्रीय सूत्र के गिर्द घूमती है।

गुरबाणी का इंकलाबी सुर (स्वर) आध्यात्मिक पक्षों के साथ मिलकर पेश हुआ। आत्मिक आज़ादी को तब ही संभव माना गया जब तक मनुष्य अपने सामाजिक जीवन में पूरी तरह से आज़ाद नहीं हो जाता। श्री गुरु नानक साहिब ने इस पक्ष से पहलकदमी की और गुरु-परंपरा के लिए उन आदर्शों को प्राथमिकता दी जो मानव-मुक्त समाज सृजित करने हेतु आवश्यक थे। बाणी का इंकलाबी सुर अपने युग की स्थापित के खिलाफ़ है। वो सरकार, जो मानवता को दबाकर रखना चाहती है; वो समाज, जो सीनाज़ोरी से प्रजा को गुलाम बनाकर रखना चाहता है, गुरबाणी उसका खुलेआम विरोध करती है। गुरबाणी का सुर ऐसे धार्मिक प्रपंच के भी खिलाफ़ है जो परलोक के नाम पर जनता को अंधविश्वास एवं कर्मकांड की ओर धकेलता है।

श्री गुरु नानक देव जी ने सोई हुई प्रजा को नींद से जगाया, अज्ञानता के कुएं में से निकाला और अपने हकों की प्राप्ति के लिए सुचेत किया। साधारण मनुष्य को आवाज़ बुलंद करने की हिम्मत बख़्शी ताकि बाबर जैसे हमलावर को ख़बर हो सके। गुरु साहिब ने उन लोगों को फटकार लगाई जो विदेशी हाकिमों को

*६५, कबीर पार्क, जी. टी. रोड, श्री अमृतसर-१४३००५

खुश करने के लिए उनके खाने, पीने, पहनने तथा बोलचाल की भाषा को अपना व्यवहार बनाकर मतलब हल करना चाहते थे अथवा अपनी भाषा एवं सभ्याचार का त्रिस्कार करके हाकिम श्रेणी के निकट आना चाहते थे :

--नील बसत्र ले कपड़े पहिरे तुरक पठाणी अमलु कीआ ॥ *(पन्ना ४७०)*

--अंतरि पूजा पड़हि कतेबा संजमु तुरका भाई ॥ *(पन्ना ४७१)*

गुरु साहिब ने अज्ञानहीन प्रजा को झकझोरा और कहा कि यूं इज़्ज़त-मान गंवा कर जीना मर जाने से भी बदतर है :

जे जीवै पति लथी जाइ ॥

सभु हराम जेता किछु खाइ ॥ *(पन्ना १४२)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की समूची बाणी स्वाधीन एवं मानव-मूल्यों पर आधारित समाज सृजित करने की तरफदारी करती है। मानव-मुक्ति वाले समाज की स्थापना करने के लिए गुरबाणी समूह विश्व को प्रेरित करती है। विश्व के कोने-कोने में जहां भी प्रजा पर अत्याचार हो रहा है या प्रशासन द्वारा दमन-वृत्ति अपनाई जा रही है, गुरबाणी उसका डटकर विरोध करती है। गुरबाणी समूह प्रजा के भले के लिए मानव-कल्याण वाले नैतिक विधान का समर्थन करती है।

आधुनिक समाज में मनुष्य की सारी दौड़, सांसारिक वस्तुओं को एकत्र करने में तथा उसका उपभोग करने की तरफ लगी हुई है। मनुष्य में से मानवता गायब है। माया के प्रभाव के कारण मनुष्य का लक्ष्य केवल धन-प्राप्ति तक ही सीमित है। सदाचार, सहानुभूति एवं इंसानियत वाली भावनाएं मनुष्य में से पंख लगाकर उड़ चुकी हैं। व्यवहारिक स्तर वस्तु-व्यवहार तक ही सीमित रह गया है। गुरबाणी माया-जाल से मुक्ति पाने के लिए मनुष्य को प्रेरित करती है और नेकी, नरमी, सहानुभूति जैसे सद्गुणों को धारण करने के लिए प्रेरित करती है। गुरबाणी में सबसे ज्यादा बल इंसान को इंसानियत के साथ जोड़ने की ओर दिया गया है।

स्त्री-कल्याण का नारा आज के विश्व-जगत का सर्वोच्च उद्देश्य है। संसार में पुरुष स्त्री को अपने अधीन समझता आया है। किसी भी समाज में स्त्री को स्वतंत्र जीवन जीने की छूट नहीं मिली। इस संदर्भ में श्री गुरु नानक देव जी पहले पैगंबर हैं, जिन्होंने बुलंद स्वर में स्त्री को आज़ादी दिलाने के लिए आवाज़ उठाई :

सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥ *(पन्ना ४७३)*

शेष गुरु साहिबान ने भी स्त्री को समाज में पुरुष के बराबर सम्मान दिलाया। श्री गुरु अमरदास जी ने सिक्ख धर्म के प्रचार में सिक्ख स्त्रियों को भी 'प्रचारक' होने की उपाधि बख़्शी। परिणामस्वरूप सिक्ख इतिहास सिक्ख स्त्रियों के अलग-अलग उच्च कद्दावर कारनामों से भरा हुआ है। माता खीवी जी लंगर की प्रथा को उच्च स्तर प्रदान करने के कारण प्रसिद्ध हैं। माता भागो जी, रानी साहिब कौर (पटियाला) तथा महारानी सदा कौर (बटाला) सिक्ख वीरांगनाओं के रूप में उभर कर सम्मुख आए चरित्र हैं।

समूह विश्व में समाज की बांट अनेक पक्षों से हुई है और आज भी हीन भावना के साथ जुड़कर मानव समाज को किसी न किसी प्रकार बांटा जा रहा है। आज भी 'दलित वर्ग' तथा 'तीसरा संसार' ये शब्द कायम हैं और इन शब्दों से सम्बंधित मानव व्यवहार के जीवन-मूल्य प्रचलित हैं। एशिया में जन्म, जाति पर

आधारित विभिन्नता आज भी कायम है, चाहे इसकी पकड़ मध्य काल जैसी नहीं रही। आर्थिक विभिन्नताओं के पक्ष से यूरोप एवं शेष देशों में एशिया व मध्य एशिया के लोगों को 'थर्ड वर्डी' कहकर उनका त्रिस्कार किया जाता है। अमेरिकन नीगरो काले होने का जो संताप झेल रहे हैं वो सब संसार के सामने है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी इस भेदभाव के खिलाफ़ आवाज़ उठाने वाले पहले पावन ग्रंथ हैं। सिक्खी सिद्धांतों में समूह मानवता की बराबरी मानी गई है। सिक्ख धर्म 'दलितों' का भी संगी-साथी है :

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥ (पन्ना १५)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के नक़्शे-कदम पर चलकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पांच प्यारों की स्थापना की। सब श्रेणियों के लोगों को एक समान खंडे का अमृत छकाकर समानता का मान बख़्शा। समूह भाईचारे को एक हो जाने का आदेश दिया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज भक्त कबीर जी की बाणी इस मसले के प्रति बहुत सख़्त तर्क पेश करती है। भक्त कबीर जी फरमान करते हैं कि तथाकथित उच्च श्रेणी के लोगों (पंडितों) का जन्म शेष मनुष्यों की भांति ही हुआ है। सबके शरीर में एक जैसा खून हरकत करता है। किसी तथाकथित उच्च जाति के मनुष्य के शरीर में खून की जगह अलग वस्तु हरकत नहीं कर रही। इसी नियम पर पहरा देते हुए श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना करते समय समूह भारत के अलग-अलग धर्मों, क्षेत्रों एवं वर्गों के भक्तों की बाणी को इस पावन ग्रंथ में शामिल किया। इस इंकलाबी व्यवहार से मानवता को 'एक' के आदर्श में बांधने वाला अन्य कोई अलग व्यवहार संसार के धार्मिक ग्रंथों में देखने में नहीं आया। इस पावन ग्रंथ के संपादन-कार्य में संकल्प एवं व्यवहार का इंकलाबी मिश्रण है; कथनी और करनी आपस में एक-सुर हैं।

अंत में मैं यही कहना चाहूंगा कि समूह विश्व में जो तनावपूर्ण समस्याएं नज़र आ रही हैं, उनके हल के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ठोस एवं योग्य प्रयास बताए गए हैं। आवश्यकता है, श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज शिक्षाओं को व्यवहारिक स्तर पर अपनाने की और इनका प्रचार विशाल रूप से विश्व स्तर पर करने की।

अनुरोध

'गुरमति ज्ञान' सिक्ख इतिहास तथा गुरबाणी में दर्ज शिक्षाओं द्वारा मानव समाज का मार्गदर्शन करती धार्मिक पत्रिका है। गुरबाणी के सम्मान को मुख्य रखते हुए 'गुरमति ज्ञान' के पाठक साहिबान से अनुरोध है कि वे 'गुरमति ज्ञान' को पढ़ने के बाद इसे न तो रद्दी में बेचें तथा न ही ऐसी जगह पर रखें जहां इसकी उचित संभाल न हो सके। पत्रिका को यदि घर में संभालकर रखने की उचित व्यवस्था न हो तो पढ़ने के बाद इसे किसी मित्र, रिश्तेदार आदि को दे दें अथवा किसी गुरुद्वारा साहिबान या पुस्तकालय में पहुंचा दें।

-संपादक।

'तवारीख गुरू खालसा' कृत ज्ञानी गिआन सिंघ में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जीवन एवं शख़्सियत

*-डॉ. परमवीर सिंघ**

गतांक से आगे. . .

लेखक ने गुरु जी का संदेश लोगों तक ले जाने के लिए जन्म-मृत्यु तथा पुनर्जन्म की बहुत-सी साखियों का सहारा लिया है। अलग-अलग साखियों के द्वारा वह बताता है कि व्यभिचार, दुराचार तथा भ्रष्टाचार को गुरु जी की शिक्षायों में कोई स्थान हासिल नहीं है। जो व्यक्ति ये काम करते हैं वे पुनर्जन्म में पड़कर दर-दर की ठोकरें खाते हैं एवं जलील होते हैं। मानव-जन्म अनमोल है तथा इसी जन्म में ही प्रभु-प्राप्ति संभव मानी गई है। जो व्यक्ति नकारात्मक कार्यों में लगे रहते हैं वे आखिर दलदल में जा गिरते हैं। लेखक समूह साखियों में पाठकों को निराशावादी नहीं होने देता बल्कि इस बात पर ज़ोर देता रहता है कि गुरु बख्शनहार है तथा कोई भी मनुष्य किए गए बुरे काम का पश्चाताप करके गुरु जी के साथ जुड़ सकता है। गुरु अपने सेवकों पर बख़्शिश करके उनको परमार्थ के रास्ते पर डालता है। गुरु जी की शख़्सियत को उजागर करते समय लेखक उस समय के तथा मौजूदा समय के सिक्खों की तुलना करता हुआ कहता है, "उस समय सिक्ख आपस में सगे भाइयों से भी अधिक प्यार रखते थे। जो गुण जिसे आता था वही गुण वे दूसरे को बड़े प्यार से सिखा देते थे। अगर कोई सिक्ख राह में थक-हार जाता तो उसको उसके साथी उसका शरीर दबाकर, दवाई दिलाकर, खिला-पिला कर तकड़ा कर लेते थे। वे आज जैसे नहीं थे जो प्यासे को पानी भी न दें तथा 'मुख में राम, बगल में छुरी' वाली भावना रखें। यह बात उस समय के सिक्खों में नहीं थी।"

प्रमुख बाणियां : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सिक्खों को जहां शस्त्र-विद्या में निपुण किया था वहीं गुरु जी सिक्खों को शास्त्र-विद्या में भी शिक्षित करना चाहते थे। शस्त्र-विद्या का प्रेम चाहे उनको शुरू से ही था किंतु पाउंटा साहिब में निवास के समय इस कार्य के लिए खुला समय मिल जाता था, जिसके कारण उन्होंने साहित्य-रचना में भारी योगदान डाला था। पाउंटा साहिब में कवि-दरबारों ने इस रुचि को और अधिक प्रचंड कर दिया था। ज्ञानी गिआन सिंघ बताते हैं कि पाउंटा साहिब में निवास के समय गुरु जी यमुना किनारे बैठ कर छंदबंदी में बाणी-रचना करते।

जापु साहिब : दसम ग्रंथ की यह प्रमुख बाणी है जो कि नित्तनेम में तथा अमृत छकाने की बाणियों में शामिल है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में स्थान 'जपु' बाणी (जपुजी साहिब) को जो दिया गया है वही स्थान 'जापु' बाणी (जापु साहिब) को दसम ग्रंथ में प्राप्त है। यह बाणी सिक्खों में बहुत प्रचलित बाणी है। अमृत छकाते समय यह बाणी पढ़ी जाती है इससे अनुमान लगता है कि यह बाणी खालसे की सृजना से पहले रची गई थी। इस बाणी के १९९ बंद हैं। इस बाणी के पहले बंद में अकाल पुरख का जो स्वरूप पेश किया गया है वह हू-ब-हू बाणी के मूल-मंत्र से मेल खाता है :

चक्क्र चिहन अरु बरन जाति अरु पाति नहिन जिह ॥
रूप रंग अरु रेख भेख कोऊ कहि न सकत किह ॥

**सिक्ख विश्व कोश विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२, मो: ९८७२०-७४३२२*

अचल मूरति अनभउ प्रकास अमितोजि कहिज्जै ॥
कोटि इंद्र इंद्राण साहु साहाणि गणिजै ॥
त्रिभवण महीप सुर नर असुर नेत नेत बन त्रिण कहत ॥
तव सरब नाम कथै कवन करम नाम बरनत सुमति ॥१॥

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की यह बाणी अकाल पुरख की स्तुति करते हुए उसके गुणों का बखान करती है। अलग-अलग धर्मों में परमात्मा के अलग-अलग नामों का जिक्र आया है जो उसके किसी एक गुण का वर्णन करते हैं। गुरु साहिब ने प्रमुख रूप से उस समय इस्तेमाल किए जाते समूह नामों को 'जापु साहिब' में शामिल किया है।

अकाल उसतति : दसम ग्रंथ में अनुक्रमणिका के अनुसार यह बाणी जापु साहिब के बाद दूसरी बाणी है। इसके २७१ बंद हैं तथा इनके बाद आखिरी बंद आधा है। मूल पाठ से पहले अकाल पुरख का ओट-आसरा लिया गया है :

अकाल पुरख की रछा हमनै ॥
सरब लोह दी रछिआ हमनै ॥
सरब काल जी दी रछिआ हमनै ॥
सरब लोह जी दी सदा रछिआ हमनै ॥

इससे स्पष्ट है कि गुरु जी केवल अकाल पुरख को इष्ट मानकर उसकी बंदगी करने पर ज़ोर देते हैं तथा उन पर अपनी रक्षा का भरोसा पूर्ण रूप से प्रकट करते हैं। इस बाणी में जहां अकाल पुरख की स्तुति की गई है वहीं बाहरी भेसों तथा कर्मकांडों से दूर रहकर प्रभु-प्रेम की ओर रुचित किया गया है। इसी बाणी में ही गुरु जी ने अलग-अलग विश्वासों के लोगों को 'मानस की जात' का नाम दिया है। यह बाणी मूल रूप में प्रेम तथा भाईचारे के रिश्तों को मज़बूत करने के साथ-साथ अकाल पुरख को इष्ट मानकर उसी की भक्ति करने पर ज़ोर देती है।

बचित्र नाटक : दसम ग्रंथ के एक बड़े हिस्से को पहले 'बचित्र नाटक' कहा जाता था जिसमें कई बाणियां शामिल थीं। अब दसम ग्रंथ में 'बचित्र नाटक' शीर्षक अधीन जिस बाणी का वर्णन किया गया है वो गुरु साहिब की आत्म-कथा मानी जाती है। इस बाणी के चौदह अध्याय हैं, जिनमें गुरु साहिब के जीवन-वृत्तांत के दर्शन होते हैं। इस बाणी के ४७१ बंद हैं, जिनमें गुरु साहिब अपना जीवन-उद्देश्य प्रकट करते हुए कहते हैं :

हम इह काज जगत मो आए ॥
धरम हेत गुरदेव पठाए ॥
जहां तहां तुम धरम बिथारो ॥
दुसट दोखीअनि पकरि पछारो ॥
याही काज धरा हम जनमं ॥
समझ लेहु साधू सब मन मं ॥
धरम चलावन संत उबारन ॥
दुसट सभन को मूल उपारन ॥

इस बाणी में गुरु साहिब ने जहां राजकुमारों में आए अहं को उनके विनाश का कारण बताया है वहीं साथ ही भंगाणी, हुसैनी आदि युद्धों का भी वर्णन किया है। शहजादा मुअज्जम के पंजाब आने के बारे में भी चर्चा की गई है। इस बाणी में प्रमुख रूप से संत-सिपाही के गुणों को उजागर किया गया है, जो कि अहंकार से रहित भावना के अधीन जब्र एवं जुल्म का सामना करते हुए समाज में धर्म तथा सदाचार की चेतना पैदा करते हैं।

चंडी चरित्र उकति बिलास : इस बाणी के लगभग ७०० सलोक हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इन सलोकों को अपने ढंग से पेश किया है। गुरु जी का उद्देश्य साधारण भारतीय जनता को धर्म-युद्ध के लिए तैयार करना था। लोगों के मन में प्रचलित कथा-कहानियों द्वारा निर्भयता का गुण उजागर करने के लिए गुरु जी ने इस बाणी को उनके समक्ष रखा था।

चंडी चरित्र (दूजा) : दसम ग्रंथ में एक ही विषय पर यह दूसरी बाणी है। इस बाणी में २६२ बंद हैं। इस बाणी में स्वाभिमान, देश

तथा धर्म की रक्षा के लिए वचनबद्ध होने की प्रेरणा की गई है।

चंडी की वार : इस बाणी की ५५ पउड़ियां हैं। इस बाणी का उद्देश्य साधारण लोगों में उत्साह और जोश पैदा करना है। उस समय कमज़ोर तथा अबला के रूप में पेश की जा रही स्त्री को बड़े-बड़े दैंत्यों के साथ लड़ते दिखाने, निर्बल हो चुकी भारतीय जनता को उत्साहित करने तथा वीर बनाने का यत्न है। इस बाणी में अकाल पुरख को सृष्टि-सृजक मानकर उसकी स्तुति की गई है। अकाल पुरख ने ही देवताओं एवं दानवों की सृजना करके उनके अंदर बल पैदा किया है, परंतु कोई भी उसका अंत नहीं पा सकता-- *"बडे बडे मुनि देवते कई जुग तिनी तनु ताइआ ॥ किनी तेरा अंतु न पाइआ ॥"*

गिआन प्रबोध : इस बाणी का शीर्षक ही इसके महत्त्व को उजागर करता है कि यह बाणी ज्ञान का मार्ग दर्शाती है। ३३६ बंदों वाली ब्रज भाषा में गुंथी इस बाणी में मिलते विषयों के आधार पर इसे दो भागों में बांटकर देखा जा सकता है। पहले भाग में १२५ बंद अकाल महिमा से संबंधित हैं तथा शेष २११ बंद जगत के व्यवहारिक फलसफे का प्रकटावा करते हैं।

शसत्र नाम माला : इस बाणी में अलग-अलग तरह के शस्त्रों का वर्णन है। 'नाम माला' का अर्थ है- कोश, इसलिए इस बाणी को 'शस्त्रों का कोश' ही समझना चाहिए। १३१८ बंदों वाली यह बाणी पांच अध्यायों में बंटी हुई है। गुरु साहिब शस्त्रों के शौकीन थे तथा समय की परिस्थितियों को सामने रखकर उन्होंने सिक्खों को गुरु-घर में शस्त्र भेंट करने तथा संगत में शस्त्र सजाकर आने का आदेश किया था, इसलिए संगत द्वारा तरह-तरह के शस्त्र उनको भेंट किये जाते थे। जो शस्त्र कोई विशेष महत्त्व वाला होता था उसको शस्त्रों में शामिल करने की प्रेरणा गुरु जी खुद संगत को कर दिया करते थे। गुरु जी के समय इस्तेमाल किए जाते शस्त्रों में तेग, खंडा, कुहाड़ा, नेजा तथा तीर-कमान का प्रयोग आम देखा जाता था। इन शस्त्रों के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए 'शसत्र नाम माला' में गुरु जी कहते हैं-- *"असि क्रिपान खंडो खड़ग तुपक तबर अर तीर ॥ सैफ सरोही सैहथी यहै हमारे पीर ॥"*

तेती सवय्ये : ३३ सवय्ये वाली यह बाणी अवतारवाद से परे अकाल पुरख की स्तुति पर केंद्रित है। इन सवय्यों में यह विश्वास दिलाया गया है कि अकाल पुरख अपने भक्तों की सहायता करता है। इस बाणी में यह प्रेरणा की गई है कि परमात्मा सृष्टि के जर्रे-जर्रे में विद्यमान है। उसे छोड़कर कब्रों, मड़ियों-मसाणों, मठों आदि की पूजा नहीं करनी चाहिए बल्कि प्रेम-भावना के जरिए प्रभु की ज्योति को अनुभव करना चाहिए। यह बाणी मूर्ति-पूजा, पत्थर-पूजा के साथ-साथ योगियों, सन्यासियों, भेसधारियों आदि के बाहरी पाखंडों पर केंद्रित है। इन समूह कर्मकांडों से बचकर रहने तथा प्रभु की भक्ति करने पर ज़ोर दिया गया है-- *"काहे कउ पूजत पाहन कउ कछु पाहन मैं परमेसर नाहीं ॥ ता ही को पूज प्रभू करि के जिह पूजत ही अघ ओघ मिटाही ॥"*

ज़फ़रनामा : इसको 'विजय-पत्र' या 'जीत की चिट्ठी' भी कहा जाता है। गुरु साहिब ने यह चिट्ठी दीने-कांगड़ गांव से भारत के बादशाह औरंगजेब को लिखी थी।

१११ शेयरों वाली इस बाणी में गुरु जी ने बादशाह को उसके अयोग्य कामों के प्रति फिटकार लगाई है तथा अपने द्वारा आरंभ किए धर्म-युद्ध को उचित ठहराया है। गुरु जी कहते हैं कि जब जुल्म हद से अधिक बढ़ जाये तथा बातचीत द्वारा उसको रोकने के सब रास्ते बंद हो जायें तो फिर तेग का इस्तेमाल जायज़ है :

चू कार अज हमह हीलते दर गुज़शत ॥
हलालस्सत बुरदन ब शमशीर दसत ॥

तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि

-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ*

भरी ठंड में हलकी खिली धूप या तपती गरमी में मंद शीतल बयार तन-मन को जो सुकून दे जाती है, आत्मा पर वैसा ही असर पैदा होता है भक्त रविदास जी की बाणी से जुड़ कर, जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल है, अतिशय विनम्रता और प्रेम की सुखद भावना की झिलमिलाहट मन और विवेक को जगाकर आत्मा और परमात्मा के बीच की डोर को इतना मज़बूत कर जाती है कि उनकी बाणी को बार-बार पढ़ने-सुनने की न खत्म होने वाली ललक पैदा हो जाती है। शायद यही कारण रहा होगा कि श्री गुरु अरजन देव जी ने उनकी बाणी का चयन किया श्री गुरु ग्रंथ साहिब के लिए और उन्हें सदा-सदा के लिए सम्मान का अधिकारी बना दिया।

भक्त रविदास जी ने समाज के हालात पर और मनुष्य की अवस्था पर गहरी दृष्टि डाली। उन्होंने कहा कि संसार में सत्य जीवन की राह बड़ी ही विषम है :

घट अवघट डूगर घणा इकु निरगुणु बैलु हमार ॥ (पन्ना ३४५)

भक्त रविदास जी ने कहा कि मनुष्य में यह क्षमता ही नहीं है कि वह संसार की राह पर चल सके क्योंकि उसमें इस हेतु बल और बुद्धि ही नहीं है।

कूपु भरिओ जैसे दादिरा कछु देसु बिदेसु न बूझ ॥
ऐसे मेरा मनु बिखिआ बिमोहिआ कछु आरा पारु न सूझ ॥ (पन्ना ३४६)

भक्त जी के अनुसार मनुष्य की हालत तो कुएं में गहरे पड़े मेंढक की तरह है जिसे न कुछ अंदर दिखता है, न ही बाहर अर्थात् वह अपने अंतर को भी नहीं पहचान पा रहा और बाहर के अर्थात् संसार के सच को भी नहीं देख पा रहा है। मनुष्य की इस विवशता का कारण भी उन्होंने बताया :

म्रिग मीन भ्रिंग पतंग कुंचर एक दोख बिनास ॥
पंच दोख असाध जा महि ता की केतक आस ॥१॥
माधो अबिदिआ हित कीन ॥
बिबेक दीप मलीन ॥१॥ रहाउ ॥
त्रिगद जोनि अचेत संभव पुंन पाप असोच ॥
मानुखा अवतार दुलभ तिही संगति पोच ॥२॥
(पन्ना ४८६)

भक्त रविदास जी ने बड़ा ही सटीक उदाहरण देते हुए मनुष्य की तुलना हिरन, मछली, भंवरे, पतंगे और हाथी से की है। भाई गुरदास जी ने भी इसका उल्लेख किया है :

गज म्रिग मीन पतंग अलि इकतु इकतु रोगि पचंदे।
माणस देही पंजि रोग पंजे दूत कुसूतु करंदे।
आसा मनसा डाइणी हरख सोग बहु रोग वधंदे।
मनमुख दूजै भाइ लगि भंभलभूसे खाइ भवंदे ।
(वार ५:२०)

हिरन, मछली, भंवरा, पतंगा और हाथी में एक-एक अवगुण है। हिरन नाद (आवाज़) का मतवाला है; मछली को जिह्वा का स्वाद है और भंवरे को सुगंध का व्यसन है। इसी तरह पतंगा दीपक की लौ (सुंदरता) का परवाना है और हाथी में काम प्रधान है। इस एक ही

*ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३

रोग-व्यसन के कारण ये सारे अपनी जान गंवा बैठते हैं। मनुष्य तो पांच रोगों-- काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से ग्रस्त है तो उसका कैसा हाल होगा? भक्त रविदास जी ने पांच विकारों को असाध्य रोग की संज्ञा दी है और कहा है कि इसके कारण वह अपना अहित करता जाता है। उसके विवेक का नाश होता जाता है। यदि किसी अन्य जीव-जंतु का यह हाल हो तो ठीक है, क्योंकि उनमें सोचने-समझने की क्षमता, बुद्धि नहीं है, किंतु मनुष्य को परमात्मा ने सोचने-समझने की क्षमता, पाप और पुण्य में अंतर करने की शक्ति दी है और फिर भी उसकी यह दशा है तो भाई गुरदास जी के अनुसार वह 'भंभलभूसे' अर्थात् 'दुविधा' में ही घिरा रहता है।

इस दशा से उबरना तभी संभव है जब परमात्मा अपनी कृपा करके मनुष्य के विवेक, बुद्धि को जागृत करे सच को जानने के लिए।

नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ॥
हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥
(पन्ना ६९४)

परमात्मा का नाम आरती की उस ज्योति की तरह है, जिससे सर्वत्र प्रकाश व्याप्त हो जाता है। वास्तव में भक्त रविदास जी की भक्ति का उन्नयन अपनी अवस्था को समझने से आरंभ होता है और परमात्मा पर अपने सर्वस्व को टिका देने के उत्कर्ष पर संपूर्ण होता है। इसी ने उन्हें अमरत्व प्रदान कर दिया।

अपनी (मनुष्य की) अवस्था का वर्णन करते हुए भक्त जी ने मानो विनयशीलता की परिभाषा लिख दी है। साथ ही इस विनम्रता के चलते संतों, भक्तों में सम्माननीय स्थान बनाकर उन्होंने इसे सिद्ध भी किया। अपनी विनम्रता को उन्होंने परमात्मा के सापेक्ष स्थापित करके स्वयं को परमात्मा से जोड़ लिया।

-हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि अब पतीआरु किआ कीजै ॥
बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै ॥ (पन्ना ६९४)

-तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा ॥
नीच रूख ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा ॥१॥
माधउ सतसंगति सरनि तुम्हारी ॥
हम अउगन तुम्ह उपकारी ॥१॥ रहाउ ॥
तुम मखतूल सुपेद सपीअल हम बपुरे जस कीरा ॥
सतसंगति मिलि रहीऐ माधउ जैसे मधुप मखीरा ॥
(पन्ना ४८६)

-मेरी संगति पोच सोच दिनु राती ॥
मेरा करमु कुटिलता जनमु कुभांती ॥१॥
(पन्ना ३४५)

मनुष्य दिन-रात अवगुणों, विकारों में जी रहा है, कुटिल कर्मों में लिप्त है और दीन-हीन हो गया है। उसे परमात्मा ही बचा सकता है जो परम दयालु और परोपकार करने वाला है।

जब तक मनुष्य को अपनी दीनता का एहसास नहीं होता तब तक उसे परमात्मा की दयाशीलता नहीं दिखती। अपने अवगुण और विकार देखने के बाद ही परमात्मा के गुणों का पता चलता है। इसके लिए अपने आप को भली-भांति जानना और सच को पहचानना आवश्यक है। सुहागिन बनकर ही स्वामी पति (परमेश्वर) को पाया जा सकता है, क्योंकि एक सुहागिन ही पति को जान सकती है :

सह की सार सुहागनि जानै ॥
तजि अभिमानु सुख रलीआ मानै ॥
तनु मनु देइ न अंतरु राखै ॥
अवरा देखि न सुनै अभाखै ॥ (पन्ना ७९३)

जिस तरह एक सुहागिन स्त्री अपना सर्वस्व अपने पति को सौंप देती है और बीच

के सारे अंतर मिटाकर पति के सुख और मान को ही अपना सुख और मान बना लेती है, वह किसी अन्य की ओर भूलकर भी नहीं देखती, इसी तरह मनुष्य परमात्मा से संबंध जोड़े। जैसे सुहागिन और पति के मध्य कोई अंतर नहीं, वैसे ही मनुष्य और परमात्मा के बीच कोई दूरी न रहे :

जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही ॥
अनल अगम जैसे लहरि मइ ओदधि जल केवल जल मांही ॥ *(पन्ना ६५७)*

जिस प्रकार सुहागिन ने अपनी कामनाएं, सुख-दुख, मान-अभिमान त्यागकर अपने पति को अपना लिया, वैसे ही मनुष्य अपने विकार त्यागकर परमात्मा से दूरी को मिटाता है और परमात्मा की इच्छा को अपनाता है। भक्त रविदास जी परमात्मा से संबंध को प्रेम से परिपूर्ण कर देने की बात करते हैं :

साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी ॥
तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी ॥
जह जह जाउ तहा तेरी सेवा ॥
तुम सो ठाकुरु अउरु न देवा ॥ *(पन्ना ६५९)*

परमात्मा से प्रीति सच्ची है। जैसे एक पतिव्रता अपने पति से करती है, शेष सभी से प्रीति का आधार उसके लिए झूठा है, इसी तरह परमात्मा के अलावा अन्य किसी से की गई प्रीति टूट जाती है। ठीक इसी प्रकार एक जिज्ञासु के मन में हर अवस्था में, हर समय परमात्मा का चिंतन ही चलता है।

इस प्रेम में सराबोर अवस्था का वर्णन भी भक्त रविदास जी ने भली-भांति किया है :

जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा ॥
जउ तुम चंद तउ हम भए है चकोरा ॥१॥
माधवे तुम न तोरहु तउ हम नही तोरहि ॥
तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि ॥१॥
(पन्ना ६५८)

उपरोक्त वचन में मानवीय मूल्यों की नायाब और सच्ची अभिव्यक्ति करते हुए भक्त जी ने शिखर को छू लिया है। वे कहते हैं कि परमात्मा से प्रीति तो पर्वत और मोर जैसी है, चांद और चकोर जैसी है। इसके आगे वे अपनी प्रीति को चटकीली चमक प्रदान करते हुए कहते हैं कि उनकी यह प्रीति कभी टूटने वाली नहीं है, जब तक कि परमात्मा इसे अपनी ओर से न तोड़े। वे जानते हैं कि परमात्मा से प्रीति तोड़ और किससे प्रीति की जा सकती है? एक परमात्मा ही प्रेम करने योग्य है। परमात्मा के बिना और कौन है जो गुणहीन, कुलहीन का उद्धार कर सके ?

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥१॥रहाउ॥
जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ॥
नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥
(पन्ना ११०६)

भक्त रविदास जी ने कहा कि परमात्मा ही सर्वशक्तिशाली है तथा निर्बलों, असहायजनों का सहायक है और उन्हें सम्मान देने वाला है। पूरा संसार उसके अधीन है। पूरा संसार जिसके अधीन है प्रीति उसी से ही होनी चाहिए।

मन बच क्रम रस कसहि लुभाना ॥
बिनसि गइआ जाइ कहूं समाना ॥२॥
कहि रविदास बाजी जगु भाई ॥
बाजीगर सउ मोहि प्रीति बनि आई ॥३॥
(पन्ना ४८७)

संसार एक खेल की तरह है जहां लोग मोह-माया के वश में हैं और जीवन के भले अवसर को गंवा रहे हैं। संसार के इस खेल का बाज़ीगर परमात्मा है। उससे प्रेम-संबंध जोड़कर जीवन के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

(शेष पृष्ठ २९ पर)

महान् समाज सुधारक भक्त रविदास जी

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

जिस देश में तथाकथित ऊंची जाति के लोगों द्वारा सदियों तक तथाकथित दलित जातियों से सम्बंधित लोगों के साथ अमानवीय, अति नीच, पशुओं के तुल्य व्यवहार किया जाता रहा है, उस भारत देश में भक्त रविदास जी के जन्म की घटना एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण व क्रांतिकारी घटना थी। किसी को क्या पता था कि यह बच्चा बड़ा होकर केवल भक्तिधारा ही नहीं बहाएगा, बल्कि दलितों का उत्थान करते हुए भारतीय समाज की तसवीर व तकदीर ही बदल डालेगा। पिछड़े, कुचले और अंधविश्वासों में जकड़े किसी भी समाज को केवल दो ढंगों से बदला जा सकता है। एक ढंग है अस्त्रों के उपयोग द्वारा हिंसात्मिक क्रांति से समाज को बदला जाए। ज़ालिमों एवं पाखंडियों, घमंडियों को सबक सिखाया जाए। दूसरा ढंग है उपदेश देकर, शब्दों के अस्त्रों की शक्ति का करिश्मा दिखाकर लोगों को जागरूक किया जाए। उनके मस्तिष्कों में चेतना, ज्ञान, तर्कशीलता की ज्योति प्रज्जवलित की जाए। अत्याचार और शोषण करने वालों को, लूट-खसूट करने वालों को, घमंड में चूर लोगों को तर्कों द्वारा समझा-बुझाकर सीधे रास्ते पर लाया जाए। इस तरह अहिंसात्मिक क्रांति द्वारा समाज को बदला जाए, सुधारा जाए। विश्व में कहीं भी क्रांतियां हुई हैं, सामाजिक परिवर्तन हुए हैं, वे या तो अस्त्रों के उपयोग द्वारा या शब्दों व विचारों की शक्ति द्वारा ही हुए हैं। कहीं-कहीं इन दोनों तरह की क्रांतियों का सम्मिलित उपयोग होते हुए भी देखा गया है। ऐसा उपयोग श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के बाद श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने किया था। तभी तो छठम पातशाह जी को मीरी-पीरी के मालिक तथा दशम् पातशाह जी को संत-सिपाही कहा जाता है।

भक्त रविदास जी ऐसे महान् रहबर, समाज सुधारक और महान् क्रांतिकारी पुरुष हुए हैं जिन्होंने बाणी द्वारा समाज में एक बड़ी प्रभावशाली क्रांति लाई। उन्होंने बिल्कुल एक नई और मज़बूत ऐसी सामाजिक क्रांति की नींव डाली, कि संपूर्ण भक्ति लहर ही क्रांतिकारी लहर बन गई। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समकालीन संत करम दास जी के कथनानुसार भक्त रविदास जी का जन्म यूं हुआ दर्शाया गया है :

"संमत चौदां सै तैंतीसा, माघ सुदी पंद्रास।
दुखीयों के कलियाण हित, प्रगटे श्री रविदास ॥"

इस तरह उनका जन्म संवत् १४३३ अर्थात् १३७६ ई. को हुआ माना जाता है। माघ की पूर्णिमा के दिन रविवार को भक्त जी का जन्म हुआ। इसी के आधार पर उनके माता-पिता जी ने उनका नाम रख दिया। उनके पिता जी का नाम श्री राघव (रघुनाथ मल) और माता जी का नाम श्रीमती करमा देवी था। भक्त रविदास जी भक्त कबीर जी के समकालीन थे और उनका जन्म स्थान काशी था। भक्त कबीर जी बनारस में निवास करते

**बी-एक्स १२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९९०*

थे। श्री रामानंद जी इन दोनों के गुरु थे। श्री रामानंद जी स्वयं भी बहुत बड़े समाज सुधारक थे। वे भी जाति-पाति, ऊंच-नीच और छुआछूत के घोर विरोधी थे।

"जात-पात पूछे नहीं कोए, हरि को भजै सो हरि का होए।"

भक्त रविदास जी की इन्कलाबी (क्रांतिकारी) भक्ति लहर से प्रभावित होकर चितौड़ का राजा भारत सम्राट राणा सांगा उनकी शरण में आया। भक्त रविदास जी की प्रेरणा व आशीर्वाद से राणा सांगा ने जनता की भलाई के लिए अनेक कार्य किए।

उस समय तथाकथित ऊंची जातियों वाले लोग दलितों पर बहुत अत्याचार किया करते थे। उनमें दलितों के प्रति ज़रा भी स्हानुभूति, करुणा नहीं थी। वे उनका शोषण, उत्पीड़न करते थे। उन्हें दबाकर रखते थे यानि उन्हें प्रताड़ित करते थे। दलितों द्वारा प्रभु-भक्ति तथा पूजा-पाठ करने पर उन्हें कठोर दंड दिया करते थे। लेकिन भक्त रविदास जी ने निर्भय होकर निर्गुण भक्ति लहर चलाई और निरंतर प्रभु-भक्ति में विलीन रहते। हर प्रकार से पाखंडी व घमंडी पंडितों, पुजारियों को चुनौती दी। उनके सामने चट्टान की तरह डटकर खड़े हुए। दलितों में साहस भरकर उन्हें दिलेर बनाया। उनमें अत्याचार, जाति-पाति, ऊंच-नीच, छुआछूत के विरुद्ध लड़ने का, संघर्ष करने का जज़्बा और जोश पैदा किया। सामाजिक क्रांति व परिवर्तन के लिए प्रेरित किया। भक्त रविदास जी ने बाणी द्वारा एक नए एवं उत्कृष्ट समाज का निर्माण किया।

पंडित तथा पुजारी लोग पूजा-पाठ और कई प्रकार के कर्मकांडों के नाम पर लोगों को मूर्ख बनाया करते थे अर्थात् उन्हें अज्ञान के अंधेरे में रखा करते थे। वे लोगों का आर्थिक शोषण भी किया करते थे। परोपकार का कोई काम नहीं किया करते थे। दूसरी ओर भक्त रविदास जी के पास भेंट स्वरूप धन व अन्न आता था, वे उससे परोपकारी कार्य करते और भूखे लोगों को छकाने हेतु लंगर लगाते। धर्मशालाओं का निर्माण करवाते। इसलिए पाखंडी एवं लालची पंडित, पुजारी उन्हें अच्छा नहीं समझते थे और उनका बहुत विरोध करते थे। भक्त रविदास जी ज़रा भी विचलित नहीं होते थे। वे अपनी धुन के पक्के थे और अपने लक्ष्य को समर्पित थे। उनमें नम्रता के अतिरिक्त दृढ़ इच्छा शक्ति की कोई कमी नहीं थी। उन्होंने लोक कल्याण के कार्य, जन जागृति के कार्य निरंतर जारी रखे। वे जन-जागृति आंदोलन के सूत्रधार बने।

भक्त पीपा जी द्वारा रचित 'पीपा जी परचई' साखी से ग्वाही मिलती है कि भक्त रविदास जी अपने गुरु स्वामी रामानंद जी के साथ शुभ कार्यों हेतु दूर-दूर तक जाते थे। एकत्र लोगों के बीच हक-सच की आवाज़ बुलंद किया करते थे। प्रभु का नाम सुमिरन करने का, नेकी भरी कमाई करने का, परोपकार के काम करने का उपदेश दिया करते थे।

भक्त रविदास जी एक उच्चकोटि के संत, महान् रहबर थे। उन्होंने विश्व भर के मेहनतकश श्रमिकों का सम्मान बढ़ाने हेतु, समाज में श्रम को ऊंचा स्थान दिलाने हेतु स्वयं श्रम-कार्य किया। आजकल के कई तथाकथित साधुओं-संतों की तरह निठल्ले बैठकर अन्न ग्रहण नहीं करते थे और न ही श्रद्धालुओं द्वारा भेंट की गई वस्तुओं एवं दौलत से गुज़र-बसर (निर्वाह) किया करते थे। यह तो सभी को मालूम है कि भक्त रविदास जी जूते गांठने तथा जूते तैयार

करने का काम करते थे। यह भी ज्ञान होना चाहिए कि वे ऐसी नेक व पवित्र कमाई करते थे कि जूते तैयार करने हेतु वे बूचड़ों (कसाइयों) द्वारा कत्ल किए पशुओं का चाम (चमड़ा) उपयोग में नहीं लाते थे। वे जीवों की हत्या के सख़्त खिलाफ़ थे। प्राकृतिक मृत्यु प्राप्त किसी पशु का चाम लेने लिए यदि उन्हें मीलों लंबा रास्ता तय करना पड़ता था, तो वे करते थे। नीच व निकृष्ट कार्यों द्वारा अर्जित धन से धर्म-कर्म के कामों का फल नहीं मिल सकता। धर्म-कर्म और परोपकार के काम नेक तरीके से जुटाई गई पूंजी एवं साधनों द्वारा ही किए जाने चाहिए। इस संबंध में हम प्रेरणा और अगवानी भक्त रविदास जी के पवित्र व्यक्तित्व एवं महान् जीवन से ले सकते हैं। इस विषय में उनकी बाणी हमें उपदेश देती है :

चमरटा गांठि न जनई ॥
लोगु गठावै पनही ॥१॥रहाउ॥
आर नही जिह तोपउ ॥
नही रांबी ठाउ रोपउ ॥१॥
लोगु गंठि गंठि खरा बिगूचा ॥
हउ बिनु गांठे जाइ पहूचा ॥२॥
रविदासु जपै राम नामा ॥
मोहि जम सिउ नाही कामा ॥३॥७॥ (पन्ना ६५९)

भक्त रविदास जी पावन फरमान करते हैं कि मेरे पास ऐसी कोई रंबी (खुर्पी) नहीं है, जिससे मैं लोगों की मेहनत-मुशक्त द्वारा कमाई हुई राशि को काटूं भाव खुर्च सकूं और न ही ऐसी कोई आर है, जिससे कमाई को अपने शरीर के साथ गाठूं। परंतु ये बिपर (पंडित) लोग अपने शास्त्रों (ग्रंथों) स्वरूप हथियारों से लोगों की नेक (शुद्ध) कमाई को काटकर अपनी शारीरिक जूती (पनही) के साथ गांठते हैं। भावार्थ कि ये निठल्ले लोग मेहनत-मज़दूरी किए बिना अपनी तोंदे फुलाए (बढ़ाए) जाते हैं। भक्त रविदास जी पावन फरमान करते हैं कि जिन जमदूतों की ये बिपर लोग दुहाई देते हैं, मेरा उनसे कोई सरोकार नहीं है। किंतु ये बिपर लोग अपने गुनाहों की सज़ा अवश्य पाएंगे।

भक्त रविदास जी करुणा व दया के सागर थे। नम्रता के पुंज थे। उन्होंने फरमाया है :

मेरी जाति कुट बांढला ढोर ढुवंता
नितहि बानारसी आस पासा ॥
अब बिप्र परधान तिहि करहि डंडउति
तेरे नाम सरणाइ रविदासु दासा ॥(पन्ना १२९३)

अर्थात् मेरी जाति के लोग बनारस के आस-पास से मुर्दा पशुओं को ढोते हैं। मेरे रोम-रोम में परमात्मा का वास है। मैं उसका भजनीक हूं। यही कारण है कि समाज का प्रधान (प्रमुख) माना हुआ बिपर (ब्राह्मण) मुझे लेटकर डंडउत (दंडवत प्रणाम) करता है।

समाजवाद का सपना साकार करने हेतु और उत्कृष्ट समाज के निर्माण के लिए भक्त रविदास जी की बाणी से प्रेरणा एवं अगवानी ली जा सकती है। वे फरमान करते हैं :

बेगम पुरा सहर को नाउ ॥
दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ ॥
नां तसवीस खिराजु न मालु ॥
खउफु न खता न तरसु जवालु ॥१॥
अब मोहि खूब वतन गह पाई ॥
ऊहां खैरि सदा मेरे भाई ॥१॥ रहाउ ॥
काइमु दाइमु सदा पातिसाही ॥
दोम न सेम एक सो आही ॥
आबादानु सदा मसहूर ॥
ऊहां गनी बसहि मामूर ॥२॥
तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै ॥
महरम महल न को अटकावै ॥

कहि रविदास खलास चमारा ॥
जो हम सहरी सु मीतु हमारा ॥३॥२॥
(पन्ना ३४५)

उन्होंने 'बेगमपुरा शहर' के रूप में पूरे विश्व को ही उस बेगमपुरा का निवासी बनाया है, जहां किसी भी प्राणी को किसी प्रकार का गम या फिक्र न हो और न ही कोई दुख-तकलीफ़ हो। किसी प्रकार का कर चुकाने का कष्ट न उठाना पड़े। न कोई खौफ़ (भय) हो, न खता यानि गलती। किसी की भी दयनीय दशा न हो। वे फरमान करते हैं कि मैंने उन स्थानों की अच्छी तरह तलाश की ही, जहां सदैव ही खैरियत है। वहां की बादशाही सदा के लिए कायम रहने वाली है। वहां सभी लोग एक समान हैं। कोई बड़ा-छोटा नहीं है। किसी प्रकार का भेदभाव नहीं है। वह जगह एक स्वर्ग (बहिश्त) का नमूना है। वहां का हर निवासी हद दर्जे तक अमीर होने के साथ-साथ सम्मानीय भी है। इज़्ज़त व गौरव वाला है। उन्हें हर जगह आने-जाने की आज़ादी मिली हुई है। उन सभी का हृदयात्मिक-प्रेम वाला रिश्ता है। एक-दूसरे के दिलों के महिरम (मितवा) हैं। हृदय से प्रेम करने वाले हैं और एक-दूसरे का रास्ता नहीं रोकते हैं। भक्त रविदास जी फरमान करते हैं कि उस 'बेगमपुरा' शहर का हर निवासी मेरा मीत अर्थात् मित्र है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त रविदास जी की बाणी सुशोभित है। उनका विश्व के सभी धर्मों एवं संप्रदायों के लोग बेहद सम्मान व आदर-सत्कार करते हैं। साहिब श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में सुशोभित सिक्ख गुरुओं, भक्त साहिबान, संतों, भट्ट साहिबान, सिक्ख साहिबान जी की बाणी हम सभी को प्रेम, सच, मानवता, एकता, अखंडता, सद्भावना, दया, धर्म भ्रातृत्व भाव (भाईचारा) आदि का अमूल्य संदेश देती है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के प्रथम संपादक और नम्रता व शांति के पुंज श्री गुरु अरजन देव जी ने भक्त कबीर जी, भक्त सैण जी और भक्त नामदेव जी के साथ भक्त रविदास जी का सत्कार, सम्मान करते हुए फरमाया है :

भलो कबीरु दासु दासन को
ऊतमु सैनु जनु नाई ॥
ऊच ते ऊच नामदेउ समदरसी
रविदास ठाकुर बणि आई ॥ (पन्ना १२०७)

भक्त रविदास जी परमात्मा में अभेद थे। भक्त कबीर जी का एक फरमान है :

हरि सो हीरा छडि कै करहि आन की आस ॥
ते नर दोजक जाहिगे सति भाखै रविदास ॥
(पन्ना १३७७)

भावार्थ कि जो मनुष्य हरि जैसे हीरे को छोड़कर किसी अन्य की ओर देखता है, वह सीधा दोजख में आता है अर्थात् जो शख़्स प्रभु पर भरोसा नहीं करता है, उसे कष्ट उठाने पड़ते हैं।

संवत् १५८४ अर्थात् १५२७ ई को वैसाखी वाले दिन चितौड़गढ़ में गांभीरी नदी के किनारे भक्त रविदास जी परम पिता परमात्मा की ज्योति में विलीन हो गए। ❁

शहीद भाई हकीकत सिंह

*-सिमरजीत सिंघ**

पाकिस्तान के ज़िला सियालकोट की तहसील डसका में गलोटियां खुर्द नामक गांव आबाद है। यह गांव गुजरांवाला-सियालकोट मुख्य सड़क पर चार किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब कश्मीर से वापिस आते हुए १६२० ई. में एक वट वृक्ष तले विराजमान हुए थे। १६५९-६० ई. में सप्तम पातशाह श्री गुरु हरिराय साहिब ने भी अपने चरण-स्पर्श से इस गांव को निवाजा था। इस गांव के निवासी भाई नंद लाल जी ने गुरु साहिब की बहुत सेवा की। भाई नंद लाल जी के पूर्वज़ पहले कसूर में बसते थे। इस परिवार को गुरसिक्खी की दात प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी से प्राप्त हुई थी। बाद में यह परिवार सियालकोट के गांव गलोटियां में आकर आबाद हो गया था। यहां पर भाई नंद लाल जी ने अपने पिता सहित श्री गुरु हरिराय साहिब जी से चरण पाहुल लेकर गुरसिक्खी जीवन धारण कर लिया। गुरु जी ने भाई नंद लाल जी को उपदेश देते हुए कहा कि कभी भी केशों का अपमान नहीं करना और न ही तम्बाकू का सेवन करना। भाई नंद लाल जी के घर दो पुत्रों-- भाई बाघ मल्ल तथा भाई भाग मल्ल एवं एक पुत्री बीबी भागवंती ने जन्म लिया। इन्होंने इलाके में सिक्खी का प्रचार किया। ये दोनों भाई बहुत बार दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पास श्री अनंदपुर साहिब कार-भेटा भी लेकर जाते रहे। भाई नंद लाल जी ने अपने दोनों पुत्रों की शादी महान सिक्ख भाई घन्हैया जी के पुत्र भाई लच्छी राम सिंघ की पुत्रियों-- बीबी कौरां तथा बीबी गौरां के साथ कर दी।

बीबी भागवंती की शादी प्रमुख सिक्ख परिवार में भाई शिव राम (कपूर) से वज़ीराबाद में कर दी। इनके घर पुत्री साहिब कौर तथा पुत्र साहिब सिंघ का जन्म हुआ। बीबी साहिब कौर की शादी बाबा बंदा सिंघ बहादुर से हुई थी।

भाई बाघ मल्ल सरकारी कार्यालय में नौकरी करने लग गए। इनके घर बीबी कौरां की कोख से एक पुत्र ने जन्म लिया जिसका नाम हकीकत रखा गया।

भाई अगरा सिंघ (सेठी) वार हकीकत राय में लिखते हैं :

वार हकीकत धरमी दी वासी सिआलकोट विच आइआ।
हकीकत राइ दी सुणो जिस इह धरम रखाइआ।
थित दुआदसी कतक मासे अंम्रित वेले छाइआ।
क्रिशन पख ने राति अंधेरी माता कौरां जाइआ।
अगरा बाग मल घर जनम लीआ, पर सिआल कोट विच आइआ।

उपरोक्त सूचना के अनुसार भाई हकीकत सिंघ का जन्म कार्तिक वदी द्वादशी, संवत् १७७३ बिक्रमी के अनुसार २२ सितंबर, १७१६ ई को शनिवार के दिन हुआ। इस तरह बाबा बंदा सिंघ बहादुर की पत्नी बीबी साहिब कौर भाई हकीकत सिंघ की भूआ की पुत्री (बहन) थी।

भाई हकीकत सिंघ को विद्या-प्राप्ति हेतु सियालकोट की एक मसजिद में भेजा जाता था।

**उप सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००६; फोन : ९८१४८-९८२२३*

यह मसजिद खुसरों की गली में थी। इस मसजिद का मौलवी अब्दुल हक्क था। भाई हकीकत सिंघ की उम्र उस समय ७ वर्ष थी। भाई अगरा सिंघ (सेठी) के अनुसार :

सत्तां बरसां दा होइआ धरमीं मुलां दे पढ़ने आइआ।
रोक रुपईआ गुड़ दी रोड़ी मुलां दी नज़र टिकाइआ।
बाग मल्ल सौंपिआ मुलां नूं बेटा कर बुलाइआ।
कहुजी दोस किसे नूं किआ कोई देवे, जां होणी दसत उठाइआ।

बटाला में भाई किशन सिंघ, भाई डल्ल सिंघ तथा भाई मल्ल सिंघ तीन भाइयों का परिवार बसता था। ये तीनों भाई स. बुद्ध सिंघ बटालिया से खंडे की पाहुल प्राप्त कर सिंघ सजे थे। इस घराने में भाई हकीकत सिंघ के ताऊ भाई भाग मल्ल का पुत्र बटाला निवासी भाई मल्ला सिंघ की सपुत्री बीबी नोभी उर्फ अनोखी से ब्याहा हुआ था। बीबी नोभी ने अपने चाचे किशन सिंघ की पुत्री (बहन) नंदी उर्फ दुरगा के रिश्ते की बात भाई हकीकत सिंघ से करने के बारे में दोनों परिवारों में बातचीत चलाई।

भाई हकीकत सिंघ की शादी छोटी उम्र में ही भाई क्रिशन सिंघ (उप्पल) की पुत्री बीबी नंद कौर (नंदी) से हुई। कई इतिहासकारों ने नाम दुरगा भी लिखा है। भाई अगरा सिंघ (सेठी) इस सम्बंधी लिखते हैं :

अट्ठां बरसां का होइआ धरमी करदा बहु चतुराई।
डल्ल सिंघ, मल्ल सिंघ, किशन सिंघ त्रै भाई।
उपल जात बटाले वासी, भेजी उस कुड़माई।
त्रै लागी समन लिआए, भट्ट प्रोहत नाई।
शादी होई नारी गावण, आ के देण वधाई।

आप जी की शादी सम्बंधी पंथ प्रसिद्ध इतिहासकार ज्ञानी गिआन सिंघ 'पंथ प्रकाश' में लिखते हैं :

मल सिंघ दल सिंघ किशन सिंघ थे खत्री तीनो भाई।
उप्पल गोत बटाले वसदे सुता किशन सिंघ जाई।
दुरगा नाम ताहिका रखयो होई जबै सिआनी।
शादी राइ हकीकत संगैं तिसकी भई महानी।
चाचे ताए बाप तहि के थे हठीए सिंघ भारे।

आप जी के घर एक पुत्र स. बिजै सिंघ ने जन्म लिया। ज्ञानी गिआन सिंघ के द्वारा रचित 'पंथ प्रकाश' के अनुसार :

तब लो पड़िओ फारसी अरबी इक सुत पैदा कीओ।
उमर अठारां दी विच जून रंगीला थीओ।

भाई हकीकत सिंघ तीक्ष्ण बुद्धि के मालिक थे। वे अपनी विद्वता का लोहा अपने सहपाठियों व अध्यापकों को मनवा चुके थे। एक बार सियालकोट के शाही काजी मौलवी अब्दुल हक्क को भी बहस में निरुत्तर कर चुके थे। 'पंथ प्रकाश' के कर्ता ज्ञानी गिआन सिंघ लिखते हैं :

उसी जमाने मैं भये सिआलकोट के मांहि।
बेटा खत्री का भलो राइ हकीकत आहि।
पढत मोलवी ढिग हुत्तों, बहुत भयो हुशिआर।
इक दिन काज़ी सों भई बहिस दीन की डार।
ला जवाब काजी करायो जब लड़के ने नीक।
(पंथ प्रकाश, छाप पहली, अध्याय ३२, पृष्ठ ३३२)

एक बार उनके साथ कुछ मुसलमान विद्यार्थियों ने अपमानजनक शब्दों में बात की। भाई हकीकत सिंघ ने उनको समझाया कि किसी भी धर्म के प्रति अपमानजनक शब्द नहीं बोलने चाहिए। अगर कोई मुसलमान धर्म के प्रति इस तरह के शब्दों का प्रयोग करेगा तो आपके दिल पर क्या गुज़रेगी? मुसलमान विद्यार्थियों ने उनके इस सुझाव को चुनौती के रूप में लिया। उन्होंने इन पर दोष लगा दिया कि ये मुसलमान धर्म के प्रति गलत बयान करते हैं। झगड़ा बहुत

ज्यादा बढ़ गया। भाई हकीकत सिंघ द्वारा दिए गए सुझाव को इसलाम धर्म के प्रति अपमान मानकर (झूठा) दोषी ठहरा दिया गया। पहले यह सारा मामला उसताद सुलेमान खां ने काज़ी अब्दुल हक्क के पास पहुंचा दिया। काज़ी द्वारा की गयी पूछताछ में भाई हकीकत सिंघ ने उसको निरुत्तर कर दिया। ज्ञानी गिआन सिंघ 'पंथ प्रकाश' में इसके बारे में बताते हैं :

होइ निरुत्तर शरमिंदे वहि काजी पास पुकारे।
काजी पाजी जालम खां ढिग हाकम गयो शकारे।
चुगली उगली दुगली के बहु सच्ची झूठी ला कै।
नाम अमीर बेग था हाकम तिस सो मता पका कै।
सद्द हकीकत रा को भाखयो तुम गुनाह किय भारी।
हमरै पैगंबर की बेटी को तैं दीनी गारी।

काज़ी ने उस समय के शासक सियालकोट के प्रबंधक काज़ी अमीर बेग के पास पेश कर दिया। काज़ी ने भाई हकीकत सिंघ को फांसी की सज़ा सुना दी। काज़ी के फैसले के उपरांत सिपाही भाई हकीकत सिंघ को गिरफ्तार करके लाहौर की ओर चल दिए।

लाहौर जाते समय ये पहली रात डसके नगर में ठहरे। डसके शहर के मुखिया, ओहदेदार भाई हकीकत सिंघ के पिता की बहुत इज्ज़त करते थे। डसके के मुखिया रूप चंद ने काज़ी को समझाने की बहुत कोशिश की, किंतु उसने उसके आगे लाहौर के काज़ी फ़तहि बेग का डर पेश किया। अगली रात ऐमनाबाद में बितायी। अगले दिन ऐमनाबाद से चलकर इस काफ़िले ने रास्ते में शाह दउले के पुल पर कुछ समय आराम दिया। शाह दउले के मकबरे के मजाउरों ने भी भाई हकीकत सिंघ को छुड़ाने की बहुत कोशिश की। अगली रात यह काफिला फज़लाबाद पहुंच गया। फज़लाबाद के फौजी अफ़सर कसूर बेग ने भी मौलवी अब्दुल हक्क को इस तरह का पाप करने से रोका। चौथी रात काफ़िला लाहौर के पास शाहदरे पहुंच गया। यहां के मुखिया धर दरगाही ने भी काज़ी को मनाने की बहुत कोशिश की किंतु वह नहीं माना। आखिर पांचवे दिन भाई हकीकत सिंघ का यह सारा मामला लाहौर के हाकिम जकरिया ख़ान की अदालत में पेश किया गया। जकरिया ख़ान ने भाई हकीकत सिंघ को इसलाम धर्म धारण करने अथवा मृत्यु कबूल करने के लिए कहा। 'पंथ प्रकाश' के कर्ता ज्ञानी गिआन सिंघ के अनुसार :

नहीं तु दीन कबूल हमारा जे चाहित हैं जीओ।

भाई हकीकत सिंघ ने काज़ी से जो पूछा उसके बारे में ज्ञानी गिआन सिंघ 'पंथ प्रकाश' में लिखते हैं कि :

इसी बात पर बहिस भयो फिर कहयो हकीकत राने।
किसी किताब शरा विच नाहीं जो तू सुकस बखाने।

दीवान सूरत सिंघ, स. जगत सिंघ तथा जंबर गांव के रहने वाले कोतवाल स. सुबेग सिंघ आदि ने भी भाई हकीकत सिंघ को छुड़ाने के लिए पूरा ज़ोर लगाया, किंतु सब असफल रहे।

भाई हकीकत सिंघ ने अपना धर्म छोड़ने से इन्कार करते हुए मृत्यु की सज़ा को कबूल किया :

तब तिस काज़ी दुषट ने मिल हाकमा सो ठीक।
करना चाहिओ तुरक तह लड़के मानयो नांहि।

भाई हकीकत सिंघ को डराने-धमकाने के लिए कई प्रकार की यातनायें व लालच दिए गए, किंतु भाई साहिब किसी भी तरह से अपना धर्म त्यागने के लिए न माने :

सिरर तजओनह, सिर दयो तब बालक ने चाहि।

भाई अगरा सिंघ (सेठी) के अनुसार भाई हकीकत सिंघ ने जवाब दिया :

हकीकत राइ मुख बचन जो कीता, फिरसी होर जमाना।
न रहे कचहिरी ज़ालम दी, न रहे अमीर दिवाना।
काज़ी मुलां कोई न रहि सी, पढ़ पढ़ गए कुरानां।
निमाज़ वी रोज़े कोई ना रखसी, साबत जिस ईमानां।
सतिर बीबीआं सभ छड्ड जासन, अगद भी नाल गुलामां।
हकीकत कहे खालसा होइआ, फिर बोलण फतह दमामां।

लाहौर के हाकिम द्वारा पहले भाई हकीकत सिंघ को कोड़े (चाबुक) मारने का हुक्म दिया गया। भाई अगरा सिंघ (सेठी) के अनुसार :

बधे ने हकीकत राइ नूं, इक नाल थम दे कड़िआ।
चोभां देवण नाल करद दे, कोटड़िआं मूंह धरिआ।
तोबा तोबना बोले मूंह थीं, ना सवाल रब्ब करिआ।
कहु जी धंन हकीकत दा हीआ, जिस दुख हडां विच जरिआ।

भाई हकीकत सिंघ की शहादत का एक कारण उनके मामा भाई अरजन सिंघ सियालकोट का इनके पास आना-जाना भी माना जाता है, क्योंकि जकरिया ख़ान ने यह एलान किया हुआ था जिसके बारे में भाई रतन सिंघ (भंगू) 'प्राचीन पंथ प्रकाश' में ज़िक्र करते हैं :

जो सिंघन कौ कोऊ लुकावै।
सो वहि आपनी जान गवावै।
आए सिंघ बतावै नांही,
वै भी आपनी जिंद गुवाही।
जो सिंघन को साक करेवै,
मुसलमान सो होवन लेवै।
जो सिंघन कौ देवै 'नाज'।
मुसलमान करों तिस काज ॥४॥
दोहरा ॥
ऐसी ऐसी घूर कर दीनै लोक डराइ।
कईअन को सिरो पाउ दै दीनै विचों पड़ाइ।

भाई अरजन सिंघ पहले मुहम्मद शाह रंगीले का फौजदार था। जिस समय सरकार द्वारा सिंघों को बागी एलाना गया तो यह नौकरी छोड़कर सिंघों के जत्थे में जा मिला। यह बहुत बहादुर था। एक बार जब रंगीले ने इसे काबुल जाने का हुक्म दिया था तो यह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का ध्यान धरकर दरिया अटक में ठेल पड़ा था तथा दरिया पार कर गया था।

भाई हकीकत सिंघ की गिरफ्तारी के समय भाई अरजन सिंघ अपनी बहनों के पास सियालकोट आया हुआ था। किसी ने इसकी मुख़बरी कर दी। इसको भी गिरफ्तार कर लाहौर लाया गया था।

भाई हकीकत सिंघ तथा उनके मामा भाई अरजन सिंघ को ७ दिन तक नज़रबंद रखा गया। आठवें दिन बसंत पंचमी के दिन पेशी हुई। शाही काज़ी, अन्य मल्लां तथा मुफतियों को साथ लेकर नाज़िम की कचहरी में आ गया तथा शोर मचाने लग गया। भाई अगरा सिंघ (सेठी) के अनुसार :

अट्ठ दिहाड़े जब गुजरे काजी ने गिला कराइआ।
पंच हज़ार ले पंज सौ मुलां 'मुफती' काजी लिआइआ।
आइ कचहिरी सोर कीतोओने, दब दबाउ बहु पाइआ।
मुगलां देह जवाब तूं शर्हा न मंने, सभनां मरना पाइआ।
खान बहादर कंब गिआ फिर दिल ते गुसा

आइआ।
अमीर बेग नूं झिड़क दित्ती अमीरां नूं दीवान वेख डराइआ।
विच कचहिरी खौफ पिआ कोई नेड़े मूल ना आइआ।
कहु जी सदु पई हकीकत नूं मारन नूं मंगवाइआ।

भाई हकीकत सिंघ व भाई अरजन सिंघ दोनों मामा-भानजा जंज़ीरों में जकड़े हुए नाज़िम की कचहरी में खड़े थे। दोनों को इसलाम कबूल करने या मरने के लिए तैयार होने के लिए कहा गया।

आखिर १८ वर्ष की उम्र में बसंत पंचमी के दिन भाई हकीकत सिंघ तथा भाई अरजन सिंघ को लाहौर के नखास बाज़ार में शर-ए-आम कत्ल करके शहीद कर दिया गया। ज्ञानी गिआन सिंघ 'पंथ प्रकाश' में लिखते हैं :

इम कहि तुरिओ साथ जलादन चौक निखास मझारे।
नमशकार सबही को कर कै बैठो पंथी मारे।
तेग मार सिरबेग उतारयो इक जलाद ने तबही।
हा हा कार भर गयो धरनभ रोई खलकत सबही।

शहादत पर आने से पहले आपने सुंदर दसतार सजायी। भाई अगरा सिंघ (सेठी) के अनुसार :

चार घड़ी फिर सतिगुर सिमरिआ, सिर पर चीरा धरिआ।

इनका दाह संस्कार मोज़ा कोट ख़्वाज़ा सय्यद (खोजे शाही) के पूरब में बाग-बानपुरा से लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर दीवान सूरत सिंघ, स. जगत सिंघ तथा स. सुबेग सिंघ द्वारा किया गया।

भाई हकीकत सिंघ की पत्नी बीबी नंद कौर अपने परिवार सहित शहीदी वाले दिन लाहौर के नखास चौक में थी। उसने अपनी आंखों देखी घटना अपने पिता भाई किरपाल सिंघ को बताई। भाई किरपाल सिंघ ने सारी घटना का विवरण खालसा दल के मुखिया नवाब कपूर सिंघ को काहनूंवान के छंब में जाकर सुनाया।

खालसा दल ने भाई हकीकत सिंघ को शहीद करवाने वाले ज़ालिम हाकिमों का नाश करने का फैसला कर लिया। ज़ालिम हाकिमों को खत्म करने के लिए सियालकोट शहर पर चढ़ाई कर दी। सियालकोट के नज़दीक तीस कोस की दूरी पर खालसाई फौज ने डेरा लगा लिया। सारे जंगी ज़ायजे लेकर तैयारी कर ली। अगले दिन सियालकोट पहुंचकर एक नाले के किनारे सिंघों ने तेगें खड़काकर ज़ालिमों के रक्त की नहरें बहा दीं। भाई दल सिंघ ने अपनी तेग से अब्दुल हक्क तथा हाकिम अमीर बेग का सर धड़ से अलग कर दिया।

बाद में सियालकोट तथा लाहौर में भाई हकीकत सिंघ और भाई अरजन सिंघ शहीदों की यादगार कायम हो गयी, जहां जुड़कर संगत नाम-सिमरन करने लगी। भाई अगरा सिंघ (सेठी) के अनुसार :

शबद अनाहद पढ़न रबाबी, इंदर छाण कराए।
मद्रग कैंसीआं छैणे वज्जण, संगतां शंख वजाए।

लाहौर के इस इलाके को शाह बहिलोल भी कहा जाता है। यादगार के बिलकुल पास ही नवाब जकरिया ख़ान की माता बेगम जान, पत्नी बाहू बेगम, पुत्र यहीआ खां तथा उसका खुद का मकबरा बना हुआ है।

पहले इस यादगार पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश हुआ करता था। महाराजा रणजीत सिंघ ने इस यादगार की सेवा-संभाल के लिए दो गांव-- सलैर व लालेवाली माफ़ी लगवाए थे, जिनसे ४०० रुपये वार्षिक रकम वसूल होती थी। महाराजा रणजीत सिंघ ने

इसकी सेवा-संभाल के लिए एक निहंग सिंघ भाई शेर सिंघ को लगाया था। आगे इस ख़ानदान के भाई सरूप सिंघ, भाई काहन सिंघ तथा भाई निहाल सिंघ सेवा-संभाल करते रहे। ये दोनों गांव अंग्रेज सरकार ने ज़ब्त कर लिए थे। अन्य गांवों से २०० रुपये वार्षिक जागीर मिलती रही। इस जागीर के अलावा इस यादगार के नाम ३० बीघे ज़मीन भी थी, जिसमें कूप लगा हुआ था। १९४७ ई देश के विभाजन के बाद यह स्थान पाकिस्तान में चला गया। आजकल भाई हकीकत सिंघ की यादगार लगभग खत्म हो चुकी है।

भाई हकीकत सिंघ की शहादत के बाद इनकी माता चिखा में से राख निकालकर सियालकोट ले गयी तथा अपने पुत्र की याद में यादगार कायम की। इस स्थान की सेवा-संभाल कान-फटे योगी करते हैं। इन योगियों का भाई हकीकत सिंघ के परिवार में काफी आना-जाना था। यहां पाकिस्तान बनने से पूर्व लाहौर तथा सियालकोट की यादगारों पर बसंत पंचमी वाले दिन भारी जोड़ मेला लगता था।

महाराजा रणजीत सिंघ के राज्य काल के समय बसंत पंचमी का मेला लाहौर के शालामार बाग के नज़दीक होता था। इस दिन भारी संख्या में संगत भाई हकीकत सिंघ की यादगार पर श्रद्धा-सुमन भेंट करने जाती थी। महाराजा रणजीत सिंघ के अहिलकार भी इस दिन पीले कपड़े पहनकर मेले में जाते थे। दिल खोलकर दान भी किया जाता था।

भाई हकीकत सिंघ के शहीद हो जाने के पश्चात उनकी पत्नी बीबी नंद कौर अपने मायके गांव बटाला आ गयी। इस तरह भाई बिजै सिंघ अपने ननिहाल में ही पला। बीबी नंद कौर ने अपनी सारी उम्र बटाले में ही गुज़ारी। यहां के लोग उसे भूआ नंदी कहकर बुलाते थे। इसने बटाला में एक कूप भी खुदवाया जो अब तक भूआ नंदी के कूप के नाम से जाना जाता है। यह कूप बाज़ार कादियां कूचा उप्पलां में है। जिस उप्पलों के मोहल्ले में बिजै सिंघ बटाले में रहता था, वह मोहल्ला उजाड़ दिया गया। उप्पलां का मोहल्ला अभी भी बटाला में है, किंतु उप्पल वहां से चले गए हैं। अख़बार फ़तिह के १८ सितंबर, १६३५ ई. के अंक के अनुसार स. किशन सिंघ के वंश में से उसका एक घर बटाला से ७ मील दूर सुचानियां गांव में आबाद है। बीबी नंद कौर की यादगार बटाला में उप्पल खत्रियां के शमशान घाट में बनी हुई है, जिसको लोग भूआ नंदी की यादगार से याद करते हैं। भाई बिजै सिंघ की शादी जलालपुर जट्टां ज़िला गुजरात (अब पाकिस्तान) गांव के निवासी भाई बख़तमल्ल (सूरी) की पोती तथा भाई सूरत सिंघ (सूरी) की पुत्री जै कौर से हुई। भाई बिजै सिंघ भी अपने पिता की तरह जवानी में ही देश-धर्म के लिए शहादत प्राप्त कर गया था।

स्रोत पुस्तकें :

१) भाई अगरा सिंघ (सेठी) : हकीकत राए दी वार
२) ज्ञानी करतार सिंघ : सिदक खालसा
३) बिहारी लाल : हकीकत चरित्र (हिंदी)
४) स. गुरमुख सिंघ : ज्ञानी गरजा सिंघ दी इतिहासिक खोज
५) डॉ. गंडा सिंघ : पंजाब दीआं वारां
६) भाई कान्ह सिंघ नाभा : महान कोश
७) डॉ. रतन सिंघ (जग्गी) : सिक्ख पंथ विशव कोश
८) ज्ञानी गिआन सिंघ : तवारीख गुरू खालसा
९) स. रछपाल सिंघ : पंजाब कोश

बड़ा घल्लूघारा : खालसे की चड़दी कला की गौरवगाथा

*-प्रो किरपाल सिंघ बडूंगर**

दुनिया में जहां कहीं भी इन्कलाब आया है, चाहे यह राजनीतिक, आर्थिक, सभ्यचारक तथा धार्मिक था। इन्कलाबियों को बहुत कुर्बानियां करनी पड़ी हैं। दुनिया में संपूर्ण इन्कलाब यदि कोई आया तो वह सिक्ख इन्कलाब था। इस इन्कलाब का प्रारंभ श्री गुरु नानक देव जी ने किया और इस इन्कलाब के लिए सिक्ख फिलासफी जिसको गुरमति विचारधारा कहा जाता है, प्रदान दी और यह विचारधारा जीवन में ढाल कर लोगों के सामने अमलीय रूप में पेश की। यह विचारधारा थी एक नया समाज सृजित करने की, एक नयी आर्थिक प्रणाली विकसित करने की, एक सर्व प्रवानित और सर्व कल्याणी धर्म पेश करने की तथा एक हलेमी राज्य स्थापित करने की अर्थात् जनमानस को नाम जपने, किरत करने, वंड छकने, स्वाभिमान, चढ़दी कला, सांझीवालता, त्याग, शीलता तथा संजम से जीवन जीने की युक्ति।

गुरु साहिबान ने और उनके सिक्खों ने महान लामिसाल कुर्बानियां कीं। छोटी-सी आयु तथा गिनती के बावजूद जो कुर्बानियां सिक्ख कौम ने कीं उसकी मिसाल कहीं भी नहीं मिलती, देगों में उबलने की, आरों से चीरे जाने की, जीते-जी भट्ठियों में झोंके जाने की, गर्म तवी पर बैठने की, खुरपी से खोपड़ी उतारने की, बंद-बंद कटवाने आदि की।

इस तरह जो जंग-युद्ध खालसा पंथ पर ठोसे गए उनमें जो जौहर खालसे ने दिखाए उनकी मिसाल दुनिया के जंगों-युद्धों में कहीं नहीं मिलती। यह भी विलक्षणता रही है खालसे की कि वह आप कभी भी खुद हमलावर नहीं हुआ, उसने अपने ऊपर किए गए हमलों का मुंहतोड़ जवाब अवश्य दिया।

चमकौर की गढ़ी और खिदराणे की ढाब की असमान और बेजोड़ जंगों जहां ४०-४० सिंघों ने दुश्मन की असंख्य फौज का पूरी शक्ति और चढ़दी कला के साथ मुकाबला किया तथा विजयी होकर निकले यह मिसाल कहीं नहीं मिलती। इस तरह यह भी खालसे की विलक्षणता थी कि इतने बड़े जानी और माली नुकसान होने के बावजूद भी खालसा पूरी तरह चड़दी कला में रहा। १७४६ ई का काहनूंवान छंभ का छोटा घल्लूघारा इसकी एक अद्वितीय मिसाल है परंतू १७६२ ई का कुप्प रूहीड़े का बड़ा घल्लूघारा जिस में लगभग ३० हज़ार सिंघ, सिंघणियां और बच्चे शहीद हुए अपने आपमें आज तक एक अश्चर्यजनक ऐतिहासिक घटना है। एक दिन में बहुत बड़ा जानी-माली नुकसान हो जाने के उपरांत भी खालसे ने जो चड़दी कला, दृढ़ता और *"निसचै कर अपुनी जीत करों"* का जो सबूत दिया वह दुनिया की कोई कौम तथा बड़े-बड़े जरनैल सिकंदर महान, नेपोलियन बोनापार्ट, हिटलर आदि भी नहीं दे सके और ये सभी पराजित होकर गए किंतु खालसा विजय होकर निकला।

बड़े घल्लूघारे में अब्दाली की फौजों, मलेरकोटले की फौजों, रायकोटिए की फौजों सरहिंद की फौजों द्वारा एक ही समय में खालसे

**अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर फोन : +९१९९१५८-०५१००*

को घेरा डालकर संपूर्ण रूप में खत्म करने की साजिश थी परंतु खालसा पंथ ने सुलतान-उल-कौम के जत्थेदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया की कमान तले जिस तरह शूरवीरता के जौहर दिखाए, उनको पढ़-सुन कर बड़े-बड़े इतिहासकार, योद्धे, जरनैल चुप हो जाते हैं। यह युद्ध रूहीड़ा, कुतबा बाहमणी और गहिल गावों की ज़मीन पर हुआ। ३०,००० शहीदियां हो जाने के बाद भी जिस तरह खालसे ने मुगलीय असंख्य फौज पर हमला किया, जिसमें दुश्मन के पांव ही नहीं उखाड़े तथा उनको दौड़ा-दौड़ा कर सतलुज दरिया के दूसरी तरफ धकेल दिया।

सिक्खों की बढ़ती ताकत से घबराया और स्थानीय हाकिमों का उकसाया अहमद शाह अब्दाली एक लाख फौज का बड़ा लश्कर लेकर १७६२ ई में पंजाब पहुंचा। सिक्खों के जत्थों ने लुधियाना के पास कुप्प रूहीड़ा के मैदानों में दल सहित डेरे लगाए हुए थे। उनके बाल-बच्चे, स्त्रियां तथा बुजुर्ग भी थे। अहमद शाह ने सिक्खों के दल पर अचानक हमला कर दिया। सिक्खों की दल को मालवे की तरफ भेज दिया तो खुद दुश्मन के साथ युद्ध करने लगे। सिक्ख युद्ध करते हुए अपने दल की तरफ आगे बढ़ रहे थे। इस समय एक तरफ सरहिंद का सूबा जैन ख़ान, दूसरी तरफ मलेरकोटले का नवाब भीखन ख़ान और रायकोट का दीवान लछमी सहाय अपनी-अपनी फौज और कुछ बेशुमार मुसलमान लेकर आ पहुंचे। सिक्ख चारों तरफ से घिर गए थे। उन्होंने जान तली पर रख कर युद्ध करना आरंभ कर दिया। सरदार जस्सा सिंघ, सरदार बघेल सिंघ, शुक्रचकिए, डल्लेवालिए और निशानवालिए सरदार अपने-अपने जत्थों को उत्साहित कर के युद्ध करवाने लगे। अली आज़ाद बिलग्रामी की लिखित 'खज़ाना-इ-अमीरां' के अनुसार सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने इस जंग में अहमद शाह अब्दाली को अपने सामने होकर युद्ध के लिए वंगारा परंतु उसकी आगे से हिम्मत न हुई। कुतबा बाहमणी के पास सिंघ जब पूरी तरह घमासान युद्ध में उलझे हुए थे तो अहमद शाह ने धोखा देकर आगे जा रहे दल पर हमला कर दिया और शीघ्रता से सिक्ख बच्चों व स्त्रियों को कत्ल करने लगा। सिंघ सरदारों को जब पता चला तो वह भी सिघों को साथ लेकर दल की रक्षा हेतु आ पहुंचे। अब वह दल के इर्द-गिर्द होकर मानवीय किले की शक्ल बना कर लड़ने लगे। संध्या होने तक बहुत सारे सिक्ख मारे जा चुके थे। दस मील के घेरे में लाशों के अंबार लगे थे। अनेकों जख़्मी हुए पड़े थे। सिक्खों का इतना जानी नुकसान किसी भी जंग में नहीं हुआ था किंतु वह परमात्मा की रज़ा और चड़दी कला में थे। जत्थेदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के शरीर के पर २० से अधिक चोटें (जख़्म) लगे हुए थे।

रहरासि साहिब के पाठ के पश्चात खालसे ने प्रतिदिन की तरह अरदास की और परमात्मा का शुक्राना करते हुए कहा कि पूरा दिन आप की रज़ा में निकला है व पूरी रात सुखों की निकले परंतु वे रात बहुत दर्दनाक रात थी। चारों ओर दुश्मन ने घेरा डाल रखा था। सिंघों को नींद कैसे आ सकती थी? सिंघों ने गुरमता किया कि बचने का सिर्फ एक ही ढंग है कि अब्दाली पर एक ही बार में भयानक हमला किया जाए। यह दिलेरी की आश्चर्यचकित करने वाली दासतान थी। अहमद शाह अब्दाली अपना ज़ोर लगा बैठा था और उसकी फौज अधिक सफर करने के कारण थकी हुई थी। वह सिंघों के हमले की ताब न झेलता हुआ पीछे की ओर भाग खड़ा हुआ।

हिंदोस्तान की धरती हज़ारों वर्षों से विदेशी हमलावरों के पांवों के नीचे कुचली जाती

रही है। छठी शती पूर्व ईसवी से ही इस पर विदेशियों के हमले शुरू हो गए थे। सिकंदर ने ३२६ पूर्व ईसवी में हमला किया, पोरस को हरा दिया था। दूसरी शती पूर्व ईसवी में इंडो युनानियों और बलख के बैकटीरियन यूनानियों ने उत्तरी हिंदोस्तान के पर मथुरा तक कब्ज़ा कर लिया था। इससे पीछे शक्क, पारसी, कुशन व कनिष्क आदि कबीलों ने हिंदोस्तान की तरफ मुंह किया। पहली शती में कनिष्कों का कब्ज़ा दक्षिण में सांची और पूरब में बनारस तक हो गया था। ७१२ ई. में मुहम्मद-बिन-कासिम ने सिर्फ २०० घुड़सवारों के साथ सिंध पर कब्ज़ा कर लिया था। १००० ई. में यहां पर महमूद गज़नवी के हमले शुरू हुए, जिसने २५ वर्षों में सतरह हमले किए। ११८२ ई. में मुहम्मद गौरी ने लाहौर पर कब्ज़ा कर लिया। ११९२ ई. में उसने पृथ्वी राज चौहान को पराजित कर स्थाई रूप में भारत पर इस्लामी राज्य स्थापित कर दिया। इस पूरे समय के दौरान भारतियों ने कभी भी हमलावरों का मुंहतोड़ जवाब नहीं था दिया। यदि कभी थोड़ा-बहुत मुकाबला किया है तो जल्द पराजय मान ली है। बड़े घल्लूघारे में सिक्खों ने अपने से बहुत ज्यादा अधिक संख्या में दुश्मन का दिलेरी व साहस से मुकाबला किया। अपने लगभग आधे सिक्ख मारे जाने के बावजूद भी पर्वत की तरह अडोल एवं दृढ़ रहे और दुश्मन को भगा दिया।

भारतीय चरित्र में यह बदलाव सिक्ख धर्म के महान दार्शनिक सिद्धांतों और गुरु साहिबान की बेमिसाल कुर्बानियां का परिणाम था। अकाल पुरख की महान कृपा हुई थी कि इस धरती पर श्री गुरु नानक देव जी ने १४६९ ई. में प्रकाश लिया। उस समय हिंदोस्तान की हालत बहुत ही तरसयोग्य हो चुकी थी। हिंदोस्तानी दर्शन और संस्कृति पहले ही उथल-पुथल, उलझनों से भरी और अस्पष्ट थी। यह किसी भी पूर्ण मनुष्य की सृजना करने से असमर्थ थी। इस पर इस्लाम के अंधे जनून और ज़ब्र-जुल्म के राज्य ने लोगों की कमर तोड़ दी थी। वो शीघ्रता से ही इस्लाम को अपना रहे थे। इसके अतिरिक्त उनके आगे कोई भी रास्ता नहीं रह गया था। हिंदोस्तान की धरती पर चारों तरफ पाखंड और मार-धाड़ का पाप हो रहा था। भाई गुरदास जी ने लिखा है :

बहु वाटी जगि चलीआ तब ही भए मुहंमदि यारा।
कउमि बहतरि संगि करि बहु बिधि वैरु विरोधु पसारा।
रोजे ईद निमाजि करि करमी बंदि कीआ संसारा।
पीर पैकंबरि अउलीए गउसि कुतब बहु भेख सवारा।
ठाकुर दुआरे ढाहि कै तिहि ठउड़ी मासीति उसारा।
मारनि गऊ गरीब नो धरती उपरि पापु बिथारा।
काफरि मुलहदि इरमनी रूमी जंगी दुसमणि दारा।
पापे दा वरतिआ वरतारा ॥ (वार १:२०)

श्री गुरु नानक देव जी ने निराश हुए, दबे-कुचले और मुर्दा हो चुके भारतीय मनुष्य को बाणी का अमृत पिला कर उसमें नई रूह फूंक दी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खंडे की पाहुल देकर उसको फौलाद की तरह मज़बूत, निर्भय और संपूर्ण मनुष्य खालसे का रूप दे दिया। गुरु साहिबान, साहिबज़ादे तथा अन्य सिंघों की शहीदियों ने सिक्खों में सदा चड़दी कला में रहने और जूझ मरने की भावना भर दी थी। बाबा बंदा सिंघ बहादुर की बहादुरी और जीतों ने उनमें स्वतंत्र राज्य स्थापित करने

का संकल्प दृढ़ कर दिया था। इसी वीरता की पृष्ठभूमि के कारण खालसे ने बड़े घल्लूघारे में लोहे की दीवार बनाकर अब्दाली के हमले को असफल कर दिया था।

उन्होंने अब्दाली के जाने के बाद उसकी सहायता करने वालों को भी सोधा। मलेरकोटले के भीखन ख़ान और रायकोट के दीवान लछमी सहाय को कत्ल कर दिया गया। अब्दाली के बनाए हुए सरहिंद के नवाब जैन ख़ान को मार कर सरहिंद फ़तिह की। १७६६ ई. में अब्दाली के हमले के समय कोई मुगल हाकिम सिंघों से डरता नवाबी लेने के लिए तैयार न हुआ तो उसने बाबा आला सिंघ को सरहिंद का नवाब मान लिया। अब्दाली ने सिंघों को जागीरों की पेशकश की परंतु सिंघों ने ठुकरा दी। उन्होंने वापिस आ रहे अहमद शाह अब्दाली पर हमला करके उसकी फौज का बुरा हाल किया। पहले आठ दिन गोइंदवाल के पत्तण पर लड़ाई हुई। फिर डल्ले गांव के पास रावी दरिया पार करते हुए अब्दाली को जा घेरा। अनेकों सरदारों सहित ८००० दुर्रानी दरिया की भेंट कर दिए। इसके आगे जेहलम दरिया पार करते समय सिंघों ने फिर अचानक हमला कर दिया। इस हमले में अब्दाली का तोपखाना और कीमती सामान दरिया में बह गया। सिंघों ने बड़े घल्लूघारे का पूरा बदला ले लिया था। अहमद शाह अब्दाली इतना दुखी होकर हिंदोस्तान से गया कि वापिस हमला कर सकने का उसका कभी भी हौसला ही न पड़ा। इस तरह सिक्ख बड़े घल्लूघारे के पश्चात दबक के नहीं बैठे। उन्होंने और अधिक ज़ोर से अब्दाली पर हमले किए और यमुना तक अपना अधिकार ज़माना शुरू कर दिया था। यह अधिकार सिर्फ किसी हालात के कारण उनकी झोली में नहीं आ पड़ा था। यह उन्होंने ने ६ दहाकों के खूनी संघर्ष और बड़े घल्लूघारे की तरह कुर्बानियां देकर हासिल किया था। ❂

तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि

(पृष्ठ १५ का शेष)

भक्त रविदास जी धर्म और संसार के प्रति बड़ी गहरी दृष्टि रखते थे और अपनी सोच को व्यक्त करने में उन्होंने कोई संकोच नहीं किया। अपनी बात को उन्होंने निडरता से सामने रखा जो कि एक सच्चे संत का चरित्र है। उन्होंने बिना किसी संशय और दुविधा के दो टूक बात कही। क्योंकि उनका मन प्रेम से परिपूर्ण था, इसलिए उनकी बाणी में भी एक लय, सरसता और मन को छू लेने की सामर्थ स्पष्ट है।

मनुष्य के रूप में जीवन का मिलना बड़े ही सौभाग्य की बात है। भक्त रविदास जी ने सचेत किया कि ऐसा न हो कि यह अवसर हाथ से चला जाए :

जो दिन आवहि सो दिन जाही ॥
करना कूचु रहनु थिरु नाही ॥
संगु चलत है हम भी चलना ॥
दूरि गवनु सिर ऊपरि मरना ॥१॥
किआ तू सोइआ जागु इआना ॥
तै जीवनु जगि सचु करि जाना ॥१॥ रहाउ ॥
जिनि जीउ दीआ सु रिजकु अंबरावै ॥
सभ घट भीतरि हाटु चलावै ॥
करि बंदिगी छाडि मै मेरा ॥
हिरदै नामु सम्हारि सवेरा ॥२॥ (पन्ना ७९३)

राह लंबी है और जीवन के पल थोड़े हैं। सब छूट जाने वाला है। व्यर्थ के व्यवहार छोड़ कर परमात्मा की शरण में जाने में ही बुद्धिमानी है, जिससे जीवन प्रकाश से भर उठे। ❂

बड़ा घल्लूघारा के प्रति एक अवलोकन

-डॉ. जसबीर सिंघ*

'घल्लूघारा' शब्द अंग्रेजी के 'Holocaust' का समानार्थी है। यह शब्द असल में यूनानी भाषा के शब्द 'Holocaustrum' से निकला है, जिसके अर्थ हैं -- 'burnt whole.' इस तरह 'घल्लूघारा' के शाब्दिक अर्थ हैं -- "सारा कुछ तबाह या भस्म कर देना।"

सबसे पहले यह शब्द दूसरे विश्व युद्ध के समय अस्तित्व में आया जब नौ लाख यहूदियों में से छ: लाख यूरपीन यहूदियों को नाज़ी जर्मनियों ने खत्म कर दिया था। विश्व के इतिहास में ऐसे बहुत-से समय आए जब ऐसे कई खतरनाक घल्लूघारे अस्तित्व में आये।

सिक्ख इतिहास में प्रमुख रूप से तीन घल्लूघारे हुए हैं जब हज़ारों सिंघों को शहीदी-जाम पीने पड़े। पहला सिक्ख घल्लूघारा १७४६ ई. में हुआ जिसमें लगभग १०,००० सिक्ख शहीद हुए। इसको सिक्ख तवारीख में 'छोटा घल्लूघारा' के नाम से याद किया जाता है। दूसरा सिक्ख घल्लूघारा १७६२ ई. में हुआ जिसमें लगभग ३०,००० से ३५,००० तक सिक्ख शहीद हुए। इसको सिक्ख इतिहास में 'बड़ा घल्लूघारा' के नाम से जाना जाता है। तीसरा सिक्ख घल्लूघारा जून १९८४ ई. में हुआ।

अहमद शाह दुर्रानी ने जब १७६१ ई. में ख्वाजा मिर्ज़ा जान को पंजाब के लिए नियुक्त किया तो सिक्खों ने उसको जंग में हार ही नहीं दी बल्कि मैदाने-जंग में ही मार दिया। जब अहमद शाह को यह ख़बर पहुंची तो उसने पंजाब के लिए नूरदीन बामजी को रवाना किया। बामजी ने अभी दरिया चिनाब पार ही किया था कि उसका मुकाबला स. चढ़त सिंघ शुकरचक्कीए के साथ हो गया। बामजी ने मुश्किल से जान बचाकर सियालकोट किले में पनाह ली। जब सिंघों ने किले का घेरा कई दिनों तक न उठाया तो बामजी रात के समय जम्मू की पहाड़ियों की तरफ भाग गया। अफ़गान फौजियों ने सिक्ख सरदार के सामने अपने हथियार फेंक दिये।

लाहौर के ख्वाजा उबैद ख़ान ने जब दुर्रानी जरनैल बामजी के बारे में सुना तो वह आग बबूला हो गया। उसने भारी फौज इकट्ठी करके सिक्खों पर हमला किया, परंतु ख्वाजा की फौज में भर्ती सिक्ख फौजी अपने गुरु-भाइयों के साथ मिल गये। यह देखकर उबैद ख़ान भारी तोपखाना तथा हथियार फेंककर लाहौर की तरफ भाग गया। सिंघों के हौसले बुलंद हो गए तथा विजय उनके कदम चूमने लगी। सिंघों की इस चढ़त ने उनको लाहौर भी दिला दिया। स. जस्सा सिंघ को लाहौर का बादशाह बनाकर 'सुलतान-उल-कौम' के खिताब से निवाजा गया। इस प्रकार सारा पंजाब इंडस से सतलुज तक खालसई झंडे तले आ गया।

श्री अकाल तख़्त साहिब, श्री अमृतसर में २७ अक्तूबर, १७६१ ई को खालसा पंथ ने दीवाली वाले दिन गुरमता पास किया कि वे सिक्ख कौम के दुश्मनों, विशेषत: अफगानियों के प्रतिनिधियों,

*मियां मीर नगर, हमदानिया कालोनी-४, बिमिना, श्रीनगर-१९००१८

मुखबिरों तथा सहयोगियों को सजाएं देंगे, जिनका मुख्य अगुआ जंडिआला का निरंजनीया है।

जंडिआला के आकल दास की इत्तिला पर अहमद शाह दुर्रानी पंजाब पर चढ़ाई करने आ गया। वास्तव में अहमद शाह का यह हमला मात्र सिक्खों को नेसतो-नाबूद करने के लिए किया गया था। यह उसी फरमान का दूसरा रंग था, जो १० दिसंबर, १७१० ई को बहादुर शाह बादशाह ने जारी किया था कि "जहां भी (गुरु) नानक (साहिब) के पजारी (सिक्ख) मिलें उन्हें कत्ल कर दिया जाये।"

जनवरी, १७६२ ई. में सिंघों ने आकल दास के शहर को घेर लिया था। वो सारे दरवाजे बंद करके कुछ समय तक छिपा रहा। उसने तुरंत अहमद शाह अब्दाली को ख़बर भेजी। अब्दाली भारी फौज लेकर ३ फरवरी, १७६२ ई. को लाहौर पहुंच गया। सिंघों को जब यह ख़बर मिली तो उन्होंने घेरा उठा लिया तथा समय की नज़ाकत को पहचानते हुए मालवा क्षेत्र की तरफ हो गये। उस समय सिंघों की गिनती चालीस हज़ार थी, जिसमें दस हज़ार महिलाएं, बच्चे तथा बुजुर्ग दल की शक्ल में थे, जिनको सिंघ बीकानेर की तरफ सुरक्षित ले जाना चाहते थे।

सरहिंद के हाकिम जैन ख़ान ने अहमद शाह को पूरी स्थिति की ख़बर भेजी। अहमद शाह ने जैन ख़ान को हिदायत की कि उसके आने से पहले सिक्खों को पकड़े रखना, सुबह आकर सबको मार देंगे। भाई रतन सिंघ 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में बयान करते हैं :

और शाह पै गए हलकारे, सिंघ आए हैं दाइ हमारे।
हम इत वल तिह राखैं घेर, तुम इन मारो होत सवेर ॥२०॥

जैन ख़ान के साथ मलेरकोटला का भीखन ख़ान भी शामिल हो गया। उस समय सिंघों का दल अपनी रफ़्तार से चल रहा था:

बहीर कोस दुइ तिंन गयो तौ आगे परे रिपु और।
जैना अते मलेरीए मारे उन्हैं बहु दौर ॥३६॥

(श्री गुर पंथ प्रकाश, पृष्ठ ४५३)

५ फरवरी, १७६२ ई. की सुबह को जंग का मैदान गर्म हुआ। जैन ख़ान के फौजियों की गिनती (तोपखाना) २०,००० थी, जिसने पहला हमला किया। सिंघों ने सोचा भी नहीं था कि अब्दाली जैन ख़ान की मदद के लिए तुरंत आ जायेगा। अब्दाली द्वारा ३०,००० घुड़सवारों को लेकर मैदान में आ जाने से जैन ख़ान के फौजियों के हौसले बुलंद होना स्वाभाविक थे। इस समय अब्दाली सिक्खों से पुराने बदले भी लेना चाहता था, जब सिक्खों ने कई पुराने मौकों पर उस पर हमले किये थे। इस बार अब्दाली बढ़िया तोपखाना लेकर तथा हथियारों से लैस होकर आया था।

स. जस्सा सिंघ तथा स. चढ़त सिंघ ने समय को भांपते हुए अपने सिंघों को हुक्म किया कि तुरंत महिलाओं, बच्चों तथा बुजुर्गों के गिर्द गोल घेरा बना लो तथा बरनाला शहर की तरफ कूच करो। सिंघों का एक ही मकसद था कि खालसा दल को बचाया जाये तथा दुश्मन के साथ लड़ाई करके उसे भारी नुकसान पहुंचाया जाये, परंतु दुश्मन की गिनती लाखों में थी और सिंघ आटे में नमक के समान थे :

तुरक आटा हम लूण सिञापैं।
वहि अंधेरी हम बरोलो सिञापैं।
तुर तुर लरो औ लर लर तुरो।
बहीर बचावन खातर अड़ो ॥५३॥

लड़ैं नठैं खड़ खड़ मुड़ लड़ैं।
बहुते गिलजे कया सिंघ करैं ॥५७॥
जिम कर कुकड़ी बचिअन छुपावै।
फिलाइ पंख दुइ तरफ़ रखावै।
इम खालसे नै बहीर छपायो।
जो बच रहयो सु आगै लगायो ॥१२४॥

जब बड़ा घल्लूघारा हुआ उस समय सारे सिंघ मलेरकोटला से १२ किलोमीटर दूर उत्तर दिशा की तरफ कुप्प रुहीड़ा नामक स्थान पर इकट्ठे थे। सिंघ चाहे इस युद्ध-अभ्यास में सफल हुए परंतु उनका भारी जानी नुकसान हुआ। स. चढ़त सिंघ शुकरचक्कीए की बहादुरी तथा युद्ध-नीति के कारण दल में बहुत सारों को बचा लिया गया। 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में इस लड़ाई का चित्रण बाखूबी किया गया है। यह स्रोत पुस्तक इसलिए भी भरोसेयोग्य है क्योंकि इसके लेखक भाई रतन सिंघ के पिता तथा चाचा जी भी इस लड़ाई में शामिल थे। दोनों तरफ से पशु एवं मनुष्य पानी पीने के लिए उतावले थे तथा थकान से चूर हो गये थे। 'पंथ प्रकाश' के अनुसार :

घोड़े मरद पिआसे भए, सबहन के मुख सूक सु गए।
रसते मैं जल हत्थ न आयो, जौ आयौ तौ पीअन कब पायो।
कोस बारां में नहिं जल लब्भा, पीतो दुतरफ़ी चाहै सब्भा।
सभ को जल तहिं नदरी आया, जन मरते किन जीवन पाया ॥३४॥
भरी ढाब बड ढोवै नट्ठ, पयासे परे दुतरफों नट्ठ।
बहीरीए भी चहैं पीओ पानी, परत तलवार न तिन ने मानी ॥१३५॥
गिलजे भी लड़नो भुल गये, पीवन पानी ढाब सु पए।
पयासे विचदों नठ जल पीवैं, भावैं मर डुब भावैं जीवैं ॥१३६॥

शाम के समय बहुत-से सिंघ सही-सलामत बरनाला पहुंच गये। अब्दाली के फौजी भी, जिन्होंने लंबा सफर तय करके इस जंग में हिस्सा लिया था, थक-हार कर वापिस मुड़ गये। सिंघों के जज़्बे को यह घल्लूघारा चढ़दी कला के कलश की तरह प्रदीप्त करता है।

इस जंग में सिक्खों का भारी जानी नुकसान हुआ। इसके बारे में हमारे पास दो ही प्रारंभिक स्रोत हैं। सिक्ख इतिहास में यह गिनती २०,००० से लेकर ५०,००० तक की गई है। पहला स्रोत एक फ़ारसी लिखित 'किसा-ए-थमस-ए-मसकीन' (थमस-नामा) है जो अप्रैल, १७८२ ई. को थमस ख़ान ने पूर्ण किया। यह लिखित बड़ी महत्त्वपूर्ण तथा प्रारंभिक स्रोत है, क्योंकि थमस ख़ान ने इस जंग में खुद हिस्सा लिया था। उसने सिक्खों की चढ़दी कला, तथा युद्ध-नीति, पैंतरेबाज़ी को अपनी आंखों से देखकर यह भविष्यवाणी की थी कि जल्द ही सिक्ख राज्य कायम हो जायेगा, जो बाद में सच साबित हुआ।

थमस ख़ान ने लिखा है, "यह भरोसेयोग्य है कि लगभग २५,००० सिक्ख मारे गये थे।" यह एक गैर-सिक्ख की लिखित थी।

दूसरा स्रोत सिक्ख इतिहासकार स. रतन सिंघ द्वारा लिखित 'श्री गुर पंथ प्रकाश' है जो १८४१ ई. की कृति है। इस लिखित में शहीदों की गिनती तीस हज़ार बताई गई है। आम लोगों में यह विचार था कि सिंघ पूरे एक लाख थे जिसमें से पचास हज़ार मारे गये तथा पचास हज़ार बच गये :

(शेष पृष्ठ ३५ पर)

बड़ा घल्लूघारा

*-स. सुरिंदर सिंघ निमाणा**

सिक्खों के लिए १८वीं सदी का समय अत्यंत संघर्ष का समय था। बेशक उन्हें प्रारंभ से ही संघर्ष करना पड़ा लेकिन इस सदी में जब बाबा बंदा सिंघ बहादुर तथा उनके साथी सिंघों को शहीद कर दिया गया तो समय की हकूमत ने सिक्खों को खत्म करने की मन में धार ली। उन्हें पहाड़ों, रेगिस्तानों एवं जंगलों में रहना पड़ा। छुप कर रहकर भी उन्होंने अपना संघर्ष जारी रखा और गुरु-भरोसे सिदक, सब्र में दिन काटते हुए अपनी सैनिक तथा जत्थेबंदक शक्ति को कायम रखते एवं बढ़ाते रहे।

फरवरी, १७६२ का घल्लूघारा इस सदी की एक बहुत बड़ी घटना थी। वक्त की हकूमत के साथ-साथ सिक्खों की अहमदशाह अब्दाली के साथ भी ठन गई। अहमदशाह अब्दाली मुगलों के शासन काल के दौरान हिंदोस्तानियों को बुरी तरह लूट रहा था। जब वह लूटमार करके वापस जा रहा होता तो सिंघ अचानक रात-बराते उसकी लूटी हुई सामग्री छीन ले जाते। सिंघों ने दो बार उसके द्वारा बंदी बनाई हिंदोस्तानी स्त्रियों को भी छुड़ाकर उनके घरों तक पहुंचाकर गुरु-शिक्षा व गुरु-उपदेश के अनुसार अपना कर्त्तव्य निभाया। लुटेरा तथा अधर्मी अहमदशाह सिक्खों के इस कार्य से बहुत खफ़ा व गुस्से में था। वह एक विशेष आक्रमण सिक्खों के खिलाफ़ करने का इरादा बना चुका था।

जंडियाला का आकल दास सिक्खों को अत्यंत घृणा करता था। वह सिक्खों को पकड़ने-मरवाने के कार्य में बहुत आगे चला गया था। सिक्खों ने १७६१ ई. की दीवाली को सरबत्त खालसा की एकत्रता की। सरबत्त खालसा नामक इस एकत्रता में सिक्खों ने आकल दास के विरुद्ध कार्यवाही करने तथा उसे उसके कार्यों के लिए दंडित करने का निर्णय लिया। अपने ऊपर कष्ट के बादल को भांप कर उसने अहमदशाह अब्दाली को तत्काल ही अपने बचाव के लिए गुहार लगाई। अब्दाली पहले ही सिक्खों को सबक सिखाने का मन बना चुका था। अपनी संगठित विशाल सेना को लेकर वह तुरंत चल पड़ा।

सिक्खों को अब्दाली के तीव्र गति से आने का समाचार मिल गया। एक बड़ा सिक्ख समूह, जिसमें कई प्रसिद्ध सिक्ख शूरवीर अगुआ थे, उसमें सिक्खों के परिवार भी थे, इनमें स्त्रियों, वृद्धों तथा बच्चों की काफी संख्या थी, इकट्ठा हो गया। समय की हकूमत के जुल्मों-ज़ब्र से बचाव का प्रयोजन सिक्खों के समक्ष था।

सिक्ख अब्दाली का टाकरा करना चाहते थे परंतु इस बार उनका प्रमुख उद्देश्य परिवारों की रक्षा-सुरक्षा था। वे परिवारों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाना चाहते थे। अब्दाली के आने से पहले यदि वे ऐसा कर पाते हैं तो वे अवश्य अब्दाली को सिक्ख-शक्ति का आभास करा सकते हैं।

अब्दाली के विशेष आदेशों से उसकी आक्रमणकारी सेना ने बहुत तीव्र गति पकड़ ली। महीनों में तय हो सकने वाला फासला दिनों में तय कर अब्दाली ३ फरवरी, १७६२ ई. को लाहौर आ पहुंचा। फिर यहां से भी तेज

*५, हंसली कवाटर्ज, न्यू तहसीलपुरा अमृतसर। फोन : ८८७२७-३५१११

गति के साथ वह सिक्ख-समूह की ओर बढ़ने लगा। ५ फरवरी को सिक्ख समूह मलेरकोटला के आस-पास था जब उन पर बहुत ही ज़ोरदार आक्रमण हो गया। सिक्ख सरदारों एवं जरनैलों ने इसका कुशल ढंग के साथ सामना करने की वक्त के अनुसार योजना बंदी की।

सिंघों ने बच्चों, वृद्धों तथा स्त्रियों को मध्य में रखकर लड़ने वाली सिक्ख सेना को एक रक्षा-कवच के रूप में परिवर्तित कर दिया। वे आक्रमण का सामना करते सुरक्षित स्थान की दिशा में गतिमान भी होते रहे। वे मलेरकोटला से बरनाला की तरफ बढ़ने लगे। अब्दाली की अपने देश से आई सेना में उसके हिंदोस्तान में स्थित समर्थकों, सूबेदारों ने और बढ़ोतरी कर दी थी। सरहिंद को नवाब जैन ख़ान और मलेरकोटले के वली ख़ान और भीखन ख़ान भी अब्दाली के साथ थे। सिक्खों की कमान मुख्य रूप से सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने संभाली हुई थी।

वैरी का आक्रमण बहुत ही व्यापक तथा तीव्र था। इसको जैसे-कैसे सहते हुए सिक्ख-समूह कौमी अस्तित्व को बचाने के लिए कठोर संघर्ष करने लगा। वैरी के मंद इरादों को निष्फल करने के लिए सिक्ख शूरवीर प्रत्येक संभव कोशिश कर रहे थे तथा शहीदी जाम पी रहे थे। वैरी ने एक अन्य आक्रमण, पहले आक्रमण से भी कई गुना ज़ोर के साथ किया जिससे सिंघ शूरवीरों के पांव उखड़ गए। बहुत बड़ी संख्या में केवल सिंघ शूरवीर ही बल्कि उनके परिवारों के परिवार भी शहीद हो गए। व्यापक जानी नुकसान झेलकर भी सिक्ख अगुआ जरनैलों ने साहस बरक़रार रखा और अधिक से अधिक संभव बचाव करने हेतु प्रयत्नशील रहे। सभी सिक्ख मिसलों के जत्थे अपने जत्थेदारों सहित बहुत ही हौंसले के साथ जूझ रहे थे। उन्होंने आक्रमणकारियों को भी कुछ गिनती में खत्म करके अत्यंत कठिन स्थिति में असंभव को संभव बनाया। फिर भी वैरी की जानी क्षति सिक्खों की इस क्षति के सामने नाममात्र रही। हज़ारों की संख्या में सिक्ख युवक, बच्चे, वृद्ध, महिलाएं शहीद हो गईं। यह असह क्षति थी। यह अब कुछ भरपाई होने के लिए कई सदियों का समय चाहिए था। यह तो सत्य है कि अब्दाली ने अपनी तरफ से जांबाज़ सिंघों की कमर तोड़ दी थी ताकि वे फिर कभी उसके विरुद्ध उठने का कभी हौंसला न कर सकें, परंतु सिक्खों ने इसको उस प्रभु का हुक्म मान कर सहन करते हुए सब्र-सिदक कायम रखा। सिक्ख पंथ के इस भाव मनोस्थिति की एक झलक निम्न पंक्तियों में देखी जा सकती हैं :

इक निहंग बुक तहिं कहयो, ऊचो बचन सुनाइ ॥
तत्त खालसों से रहयो, गयो सु खोट गवाइ ॥१४६॥
सरदार सबै ज़खमी भए, साबत रहयो न कोइ ॥
लई शहीदी थी घनन, गिणती सभन न होइ ॥
(श्री गुर पंथ प्रकाश, कृत भाई रतन सिंघ भंगू, पृष्ठ ४६२)

सिक्ख सैनिकों ने इस घल्लूघारे में अधिक से अधिक संभव रूप में जैसे-कैसे बच्चों, स्त्रियों एवं वृद्धों की जानें बचाने के भरसक प्रयास किए, उसके बारे में लिखा मिलता है :

जिम कर कुकड़ी बचिअन छुपावै।
फिलाइ पंख दुइ तरफ़ रखावै ।
इम खालसे नै बहीर छपायो।
जो बच रहयो, सु आगै लगायो ॥१२४॥ (वही)

एक सिक्ख शूरवीर के भरपूर जवाबी प्रहार का शब्द-चित्र कवि ने यूं खींचा है :

सो सुन चढ़ सिंघ गुस्सा खाया।
अहिमद शाह वल छोड़ो चलाया।
लभयो न टोलत सो रहयो दूर।
दिसै न दूरों उड रही धूर ॥९५॥

फिर सिंघ टोल मुड़ वड़यो बहीर।
तेग मार कढै गिलजे चीर।
मारत तेग गयो हथ थाक।
तौ सिंघ जी लयो नेजो चाक ॥९६॥ (वही)

बड़े घल्लूघारे के वृत्तांत के अध्ययन-विश्लेषण से हमें यह ज्ञात होता है कि कैसे यह घल्लूघारा सिक्ख कौम के समूचे अस्तित्व को खाक में मिलाने के नापाक इरादों से प्रेरित कितना भयंकर आक्रमण था लेकिन सिक्ख पंथ जिसको- *'जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ - सिरु धरि तली गली मेरी आउ इतु मारगि पैरु धरीजै - सिरु दीजै काणि न कीजै'* की प्रारंभिक शिक्षा बचपन में मिली थी और जो साहिबे-कमाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के हाथों अमृत-पान करके मृत्यु के भय से सर्वथा ही ऊपर उठ चुका था, का अस्तित्व मिटाना कदापि संभव न था। सिक्ख पंथ को मिटाने के मंद इरादे पालने वालों ने अंत में स्वयं भी मिटना था। बड़े घल्लूघारे को सिक्ख पंथ कदापि भूलेगा नहीं। यह पंथ को व्यापक वंगारों के सामने अड़ने, व्यापक कौमी संकटों से लड़ने और जब्र-जुल्म के विरुद्ध सदैव संघर्षरत रहने की प्रेरणा देता रहा है और भविष्य में देता रहेगा। ❁

बड़ा घल्लूघारा के प्रति एक अवलोकन

(पृष्ठ ३२ का शेष)

लोक कहैं सिंघ इक लख सारा,
पचास बचयो और सभ गयो मारा।
पिता हमारे तीस बताए,
रहे सु मर और बच कर आए।
पिता चाचे दुइ हम थे साथ,
उन ते सुन हम आखी बात ॥१४४॥

इस जंग में स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया के शरीर पर २२ ज़ख्म आये जबकि स. चढ़त सिंघ शुकरचक्कीये को १० ज़ख्म आये। इन ज़ख्मों से प्रत्यक्ष है कि सारे सिक्ख जरनैलों ने लड़ाई अपने तन पर झेली। यह ऐसी लड़ाई थी जिसमें हर सिक्ख लड़ाकू को कोई न कोई ज़ख्म आया था। चाहे इस लड़ाई में बहुत सारे सिंघ शहीद हो चुके थे, फिर भी सिंघों में चढ़दी कला वाली स्प्रिट खत्म नहीं थी हुई। लड़ाई की शाम को एक निहंग सिंघ ने सभी को आवाज दी :
तत्त खालसो सो रहयो गयो सु खोट गवाइ॥१४६॥
(प्रचीन पंथ प्रकाश)

इस घल्लूघारे में सिंघों ने वही युद्ध-नीति अपनाई जो उन्होंने छोटे घल्लूघारे के समय अपनाई थी। सिंघ दुश्मनों की चाल से पूरी तरह से वाकिफ़ थे। वे सिंघों को नेसतो-नाबूद करना चाहते थे। इस घल्लूघारे में दुश्मन जानें बचाकर लड़ते थे जबकि सिंघ जानें वारकर *"अति ही रण मैं तब जूझ मरों"* के अनुकूल मैदाने-जंग में जूझ रहे थे। सिंघ श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा दर्शाये मार्ग पर चट्टान की भांति अडिग रहे। सिंघों के जोश तथा धैर्य में कोई फर्क न आया; स्वाभिमान तथा गैरत की आभा चमकती रही।

इतिहास में जिक्र आता है कि इस घल्लूघारे में दमदमा साहिब वाली श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ सिक्खों के हाथों से चली गई। भाई कान्ह सिंघ नाभा लिखते हैं, "यह दमदमे वाली बीड़ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी) संवत् १८१८ में कुप्प रुहीड़ा की जंग 'बड़े घल्लूघारे' में खालसा दल के हाथों से जाती रही, परंतु इसके पहले इसकी प्रतिलिपियां हो चुकी थीं। ❁

सिंघों की ज़िंदादिली की एक अन्य उदाहरण श्री ननकाणा साहिब का शहीदी साका

*-स. प्रीत सिंघ**

सबको पता है कि गुरुद्वारा जन्म-स्थान श्री गुरु नानक देव जी, श्री ननकाणा साहिब (पाकिस्तान) के नाम ७०० से अधिक मुरब्बे ज़मीन है। १८४९ ई. में अंग्रेजों ने पंजाब पर कब्ज़ा कर लिया तथा महाराजा दलीप सिंघ को इंग्लैंड ले गये। कुछ वर्षो बाद अंग्रेजों ने सभी दरियाओं से नहरें निकालकर ज़मीनों को पानी देना शुरू कर दिया। पानी देने से फसलें खूब होने लगीं। श्री ननकाणा साहिब की जमीन में से लाखों रुपये की आमदन होने लगी। गुरुद्वारा साहिब पर काबिज़ महंत ऐश करते, शराबें पीते। इनका मुखिया महंत नरैण दास था। वह भी शराब पीता तथा गुरु-घर में कुकर्म करता था।

एक बार एक सिंधी सिक्ख अपनी पत्नी एवं लड़की के साथ गुरुद्वारा जन्म-स्थान श्री ननकाणा साहिब के दर्शन के लिए आया। महंत के आदमियों ने उसकी लड़की के साथ अभद्र व्यवहार किया। एक बार अमावस के दिन गांव जड़ां वाला से कुछ महिलाएं श्री ननकाणा साहिब आईं। सरोवर में स्नान करते समय महंत के आदमियों ने उन महिलाओं के साथ भी अभद्र व्यवहार किया। इस ख़बर का पता जब शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को चला तब कमेटी ने फैसला किया कि महंत को श्री ननकाणा साहिब (४,५ मार्च, १९२१ को) जाकर समझाया जाये। महंत को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के फैसले का पता चल गया कि सिक्ख जत्थे आ रहे हैं तो उसने काफी बदमाश इकट्ठा कर लिए। भारी संख्या में छवियां, कुल्हाड़े, तलवारें, बंदूकें, पिसतौलें, बारूद तथा कई बोरियां कारतूसों की, मिट्टी के तेल के कई पीपे, पेट्रोल तथा लकड़ियां जमा कर लीं। अंग्रेज सरकार महंतों का पक्ष लेती थी, इसलिए कई गुरुद्वारों में मोर्चे लगाते समय सिंघों को शहीदियां देनी पड़ीं।

महंत की इस कार्यवाही का जब भाई लछमण सिंघ धारोवाली को पता चला तो उसने स. तेजा सिंघ समुंदरी, भाई बूटा सिंघ तथा अन्य सिंघों के साथ बातचीत की कि महंत मार्च, १९२१ को सभी सिक्ख लीडरों को खत्म कर देगा। इससे पहले कई हज़ार सिंघों का जत्था श्री ननकाणा साहिब जाये और गुरुद्वारा साहिब पर कब्ज़ा कर ले। भाई करतार सिंघ झब्बर तथा भाई लछमण सिंघ को पता चला कि १९, २० फरवरी, १९२१ ई. को सनातन धर्म की मीटिंग होगी तथा महंत नरैण दास इस मीटिंग में ज़रूर जायेगा कोई खून-खराबा न हो, इस लिए दो-तीन हज़ार सिंघ ले जाकर २० फरवरी, १९२१ ई. को गुरुद्वारा साहिब पर कब्ज़ा कर लिया जाये। यह ख़बर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर के पास पहुंच गई। कमेटी ने चूढ़काणे आदमी भेजे तथा भाई करतार सिंघ झब्बर का जत्था श्री ननकाणा साहिब जाने से रोका। भाई लछमण

*गांव धुड़िआल, डाक: सारोबाद, वाया आदमपुर, ज़िला जलंधर।

सिंघ धारोवाली अपना जत्था लेकर १९ फरवरी, १९२१ ई. को संध्या समय चल पड़ा तथा गांव नज़ामपुर, देवा सिंघ वाला, मूला सिंघ वाला, चेलियांवाला, डल्ला चंदा सिंघ वाला से कोटला काहलवां तथा धामीआं होता हुआ मेटीआणा पहुंचा।

हमारे गांव धनूंआणा ९१ र: ब: से १९ फरवरी, १९२१ ई को जत्थेदार सुंदर सिंघ हुंदल के साथ १३ सिंघों का जत्था (कुछ दूसरे गांवों से अतिथि आये हुए थे; दो सिंघ गांव फराला से, एक गांव माणिक-घंमण तथा एक गांव सिहाड़ का था) भाई लछमण सिंघ के जत्थे को मेटीआणा जा मिला। यहां से भाई लछमण सिंघ ने हमारे गांव के भाई धीर सिंघ तथा एक अन्य सिंघ को चंदरकोट की झाल पर भाई करतार सिंघ झब्बर के जत्थे को देखने के लिए भेजा। भाई लछमण सिंघ उस समय अरदासा करके चल पड़े थे। जब भाई धीर सिंघ चंदरकोट की झाल पर पहुंचे तो वहां पर कोई जत्था नहीं था। तब भाई धीर सिंघ तथा दूसरा सिंघ बहुत देर से श्री ननकाणा साहिब पहुंचे। भाई धीर सिंघ दूसरे सिंघ को साथ लेकर एक दुकानदार के घर चले गये। इस दुकानदार ने धनूंआणा से आकर श्री ननकाणा साहिब में दुकान खोली हुई थीं।

भाई करतार सिंघ झब्बर ने भाई लछमण सिंघ के जत्थे को रोकने के लिए भाई दलीप सिंघ को भेजा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का हुक्म है कि कोई भी जत्था श्री ननकाणा साहिब अभी न जाये तथा अपने गांवों को वापिस मुड़ जाये। १९-२० फरवरी की सारी रात भाई दलीप सिंघ जत्थे से न मिल सका। आखिर वह थककर श्री ननकाणा साहिब स. उत्तम सिंघ के कारखाने में आकर सो गया। भाई दलीप सिंघ ने भाई वरिआम सिंघ को चिट्ठी देकर भेजा कि भाई लछमण सिंघ का जत्था रोका जाये। भाई वरिआम सिंघ को श्री ननकाणा साहिब के बिलकुल पास में जत्था मिला तथा उसे चिट्ठी दिखाई। भाई लछमण सिंघ ने जवाब दिया कि हम अरदासा कर चुके हैं, अब हम वापिस नहीं मुड़ेंगे। तब भाई वरिआम सिंघ वापिस भाई दलीप सिंघ के पास चला गया।

२० फरवरी, १९२१ ई. को सुबह ही जत्था गुरुद्वारा जन्म-स्थान के अंदर दाख़िल हो गया। भाई लछमण सिंघ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की ताबिआ में बैठ गये तथा शेष सिंघ आसा की वार का कीर्तन करने लग गये। महंत नरैण दास रेलवे स्टेशन पर गया हुआ था। जब महंत के गुंडों को जत्थे के आने का पता चला तो वे घोड़े लेकर स्टेशन की ओर गए। उनके स्टेशन पर पहुंचने से पहले गाड़ी चल पड़ी थी। तब उन्होंने घोड़े दौड़ाये तथा बारबटन स्टेशन पर गाड़ी पहुंचने से पहले पहुंच गये। महंत को गाड़ी से उतार कर वे श्री ननकाणा साहिब जल्द ही पहुंच गये। महंत ने आते ही अपने तमाम आदमियों को सिंघों को कत्ल करने का हुक्म दे दिया। बाहर सीढ़ियां लगाकर सब बदमाश दर्शनी ड्योड़ी तथा दरवाज़ों पर चढ़ गये और उन्होनें फायर करने शुरू कर दिये। बाहर के सभी सिंघ ज़ख़्मी हो गये। अब बदमाश छवियां लेकर चुबारे से नीचे उतरे और ज़ख़्मी सिंघों के टुकड़े-टुकड़े करके मिट्टी का तेल तथा पेट्रोल डालकर उन्हें आग लगा दी। चौखंडी का उत्तर दिशा की तरफ का दरवाज़ा तोड़कर उस पर मिट्टी का तेल छिड़का दिया तथा अंदर गोलियां चलाने लग गये। बहुत सारी

गोलियां श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पावन स्वरूप को भी लगीं। भीतर के सिंघों को शहीद कर दिया। भाई लछमण सिंघ को जंड के वृक्ष से उल्टा बांध कर, मिट्टी का तेल डालकर आग लगा दी।

थोड़ी देर बाद महंत एवं उसके कुछ बदमाश गुरुद्वारा साहिब से बाहर निकले। अन्य गुंडे शहीद सिंघों की लाशों को इकट्ठा करके आग लगाते थे। स. उत्तम सिंघ के कारखाने में जब भाई दलीप सिंघ तथा भाई वरिआम सिंघ ने गोली चलने की आवाज़ सुनी तो वे दोनों गुरुद्वारा जन्म-स्थान की ओर चल पड़े। भाई दलीप सिंघ ने कहा, "महंत जी, यह कार्य क्यों किया?" महंत एवं उसके आदमियों ने उन दोनों को भी गोलियों से जख़्मी कर दिया तथा जख़्मियों को कुम्हारों की भट्ठी में फेंक दिया। इनका यादगारी-स्थान 'शहीदगंज' सरोवर से पश्चिम तथा गुरुद्वारा साहिब से दक्षिण दिशा में है।

इस साके की ख़बर उसी वक्त स. करम सिंघ स्टेशन मास्टर ने लाहौर सरकार, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, शेखूपुरा तथा लायलपुर में टेलीग्राम द्वारा भेजी। हमारे गांव धनूंआणा शाम ३ बजे शहीदी साके का पता चला। दूसरे दिन २१ फरवरी, १९२१ ई. सोमवार को सिंघों की अपने गांवों से श्री ननकाणा साहिब की तरफ रवानगी शुरू हो गई। भाई करतार सिंघ झब्बर २२०० सिंघों का जत्था लेकर आये। प्रत्येक सिंघ के पास कोई-न-कोई हथियार था। कुछ सिंघ सियालकोट से आये। इनमें रागी भाई हीरा सिंघ भी थे। लाहौर से कमिश्नर अंग्रेज फौज लेकर स्पेशल गाड़ी द्वारा पहुंचा। अंग्रेज फौज गुरुद्वारा जन्म-स्थान के सामने मशीनगनें लगाकर बैठ गई।

सिंघ बहुत गुस्से में थे तथा आगे बढ़ते जा रहे थे। कमिश्नर ने अंग्रेज फौज गुरुद्वारा साहिब के सामने से हटा ली तथा गुरुद्वारा साहिब की चाबियां सिंघों को दे दीं। सिंघ गुरुद्वारा जन्म-स्थान के अंदर दाख़िल हुए। उन्होंने शहीद सिंघों के शरीर देखे--किसी की टांग नहीं, बहुतों के शीश नहीं तथा कइयों की बाजुयें नहीं। कोई भी पहचाना नहीं जा रहा था। इसके बाद उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब का स्वरूप देखा। रागी भाई हीरा सिंघ ने बीड़ में से गोलियां निकालीं। बाद में पंजाब का गवर्नर अपनी कैबेनिट के सदस्यों के साथ श्री ननकाणा साहिब पहुंचा। उन्होंने साके के शहीद सिंघों के शरीर देखे तथा शहीद सिंघों के प्रति बहुत दुख मनाया। यह दुख तो उनका मात्र दिखावे का ही था, क्योंकि सरकार तो महंतों की मदद करती थी। जहां शहीद सिंघों का अंतिम संस्कार किया गया। वहां गुरुद्वारा शहीदगंज साहिब सुशोभित है।

सरकार ने सिंघों के भारी इकट्ठ के सामने घुटने टेक दिये। सिंघों की फ़तहि हुई तथा गुरुद्वारा जन्म-स्थान श्री गुरु नानक देव जी, श्री ननकाणा साहिब महंतों से आज़ाद हो गया।

❁

साका ननकाणा साहिब

–बीबी अमरजीत कौर

सिक्ख धर्म की नींव श्री गुरु नानक देव जी ने रखी, जिसके सिद्धांत मर्यादा को गुरु साहिबान और उनके सिक्खों ने अमली जामा पहनाया। श्री गुरु नानक देव जी का फरमान है :

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ (पन्ना १४१२)

इस फरमान पर पूरे उतरते हुए अनेकों मरजीवड़ों ने इसे अपने खून से प्रफुल्लित किया। गुरु साहिब द्वारा निर्धारित मर्यादा को तोड़ने वालों के विरुद्ध डट कर मुकाबला किया, कुर्बानियां देते हुए हंस-हंस कर शहीदियां प्राप्त कीं।

सिक्ख धर्म का इतिहास अपने गुरधामों की रक्षा के लिए साकों से भरा पड़ा है। इसमें गुरुद्वारा ननकाणा साहिब का साका सिक्ख इतिहास में अपनी मिसाल आप है।

श्री ननकाणा साहिब वह पवित्र स्थाान है जहां सिक्ख धर्म के बानी श्री गुरु नानक देव जी का जन्म हुआ। यह स्थान प्रत्येक सिक्ख धर्म को मानने वाले के दिल में बहुत पवित्र स्थान रखता है।

सिक्ख धर्म के विकास में समय-मसय स्थापित हुई लहरों में गुरुद्वारा सुधार लहर का अपना योगदान है। २० वीं सदी के दूसरे दशक में पंथक जत्थों ने इस लहर के तहित गुरुद्वारों को आज़ाद करने के लिए जत्थे बनाए। इस लहर में गुरुद्वारा ननकाणा साहिब को महंतों से आज़ाद करवाने और उसमें पुनः स्वीकृत रहित मर्यादा स्थापित करने के लिए पंथ एकजुट हुआ।

सिक्खों के जंगों, युद्धों में व्यस्त रहने के कारण गुरधामों की संभाल और सेवा उदासी साधु एवं परंपरागत महंत करते थे। समय के बीतने पर गुरधामों में सिक्ख मर्यादा के उलट पूजा-विधियां और अन्य गुरमति-विरोधी कार्यवाहियां शुरू हुईं। इन महंतों और डेरेदारों में सब से अधिक और सबसे अयाश ननकाणा साहिब का महंत नरैण दास था। वह और उसके चेले यात्रियों और जिज्ञासुओं का अपमान करने में भी संकोच नहीं करते थे।

उसने गुरुद्वारे के वातावरण को अपनी अशलील और आचरणहीन कार्य करके अपवित्र कर रखा था। गुरुद्वारा साहिब के दर्शनों को आने वाली स्त्रियों की इज्जत महफूज़ नहीं थी। सिक्ख पंथ और खासकर ननकाणा साहिब के आस-पास रहते सिक्खों के मन में महंत नरैण दास के प्रति बहुत रोष था। उन दिनों भाई लक्षमण सिंघ धारोवाली ने समागम रखकर लोगों को महंत की हरकतों के प्रति जागरूक किया और उससे गुरधाम आज़ाद करवाने के लिए लोगों को तैयार किया। उधर बाद में कायम हुई शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने भी मार्च, १९२१ में ननकाणा साहिब में समागम करने का फैसला किया।

महंत नरैण दास को इन सब की जानकारी मिल चुकी थी और उसने इन सबसे निपटने

के लिए अनेक गुंडों को अपने पास नौकर रख लिया और बहुत सारे हथियार भी इकट्ठे कर लिए।

उन दिनों भाई लछमण सिंघ का संपर्क जत्थेदार करतार सिंघ झब्बर के साथ हुआ। उन दोनों ने सलाह कर २० फरवरी, १९२१ को ननकाणा साहिब पहुंच कर गुरुद्वारा साहिब को आज़ाद करवाने का मन बना लिया।

अकाली अगुओं को पता लगने पर उन्होंने भाई दलीप सिंघ को जत्थेदार भाई करतार सिंघ झब्बर की ओर भेजा और कहा कि पार्टी के अनुशासन को कायम रखते हुए ननकाणा साहिब की ओर न जाया जाए। भाई दलीप सिंघ ने भाई झब्बर को जैसे-तैसे मना लिया और वहां से पांच सिंघों का हुक्मनामा लेकर भाई लछमण सिंघ की ओर रवाना हुआ। बहुत ढूंढने के बाद भी भाई लछमण सिंघ जी के साथ उसका संपर्क न हो पाया तो भाई लछमण सिंघ को सूचित करने के लिए यह जिम्मेदारी भाई वरियाम सिंघ की लगा दी गई और आप गुरधाम से थोड़ी दूर भाई उत्तम सिंघ के कारखाने में चला गया। भाई वरियाम सिंघ ने २० फरवरी की सुबह भाई लछमण सिंघ को ढूंढा। वे पहले ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सम्मुख अपने जत्थे सहित ननकाणा साहिब की पवित्र धरती को महंत नरैण दास जैसे नीचों से आज़ाद करवाने के लिए निकल चुके थे और ननकाणा साहिब के पास पहुंच चुके थे। उन्होंने अरदासा सोधा जाने के बाद अपना फैसला बदलने से इन्कार कर दिया। इस बात की ख़बर भाई दलीप सिंघ को देने के लिए भाई वरियाम सिंघ उनके पास चले गए।

भाई लछमण सिंघ २० फरवरी, १९२१ ई. की सुबह अपने जत्थे सहित गुरुद्वारा साहिब में दाख़िल हुए और खुद श्री गुरु ग्रंथ साहिब की ताबिआ में बैठ गए और अन्य सिंघ जिनकी गिनती लगभग १५० के लगभग बताई जाती है, दीवान हाल में बैठ गए और शबद गायन करने में मग्न हो गए।

एकदम गोलियों की बौछाड़ होनी शुरू हो गई, फिर तलवारों, कुलहाड़ियों, गंडासों के साथ गुंडों ने निहत्थे सिंघों पर हमला कर दिया और सिंघों को शहीद कर दिया। लाशों और जख़्मी हालत में पड़े सिंघों को इकटठा कर उन पर मिट्टी का तेल डाल कर आग लगा दी गई। भाई लछमण सिंघ को भी गोलियां लगीं और जख़्मी स्थिति में ज़िंदा पकड़कर जंड के वृक्ष के साथ उलटा बांध कर आग लगाकर शहीद कर दिया गया। महंत नरैणू यह साका वरताकर भाग निकला। इस तरह भाई लछमण सिंघ ने अपने जत्थे के साथ गुरुद्वारा ननकाणा साहिब को आज़ाद करवाने के लिए की गई अरदास की मर्यादा को कायम रखते हुए अपना आपा न्योछावर कर दिया।

अगले दिन इस घटना की ख़बर भाई उत्तम सिंघ ने सभी संबंधित अधिकारियों को भेजी और लाहौर और श्री अमृतसर के सिक्ख लीडरों को सूचित किया। सांयाकाल तक सभी उच्च अधिकारी पहुंच गए। जब भाई करतार सिंघ झब्बर को पता चला तो वह भी अपने जत्थे सहित वहां पहुंच गए। कमिश्नर किंग ने २१ अक्तूबर को शाम तक गुरुद्वारा साहिब की चाबियां देने का फैसला कर लिया और शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के सदस्यों के सहित गुरुद्वारे का कब्ज़ा लिया गया। इस तरह गुरुद्वारा साहिब को आज़ाद करवाने के लिए सिंघों की शहीदियां गुरु-स्थानों पर प्रवान हुईं। महंत नरैण दास को बाद में पकड़कर सज़ा दी गई। ❁

सिक्खी साहस व सिदक का प्रतीक : जैतो का मोर्चा

-बीबी बलजीत कौर

गुरुद्वारा गंगसर जैतो का मोर्चा अकाली लहर का एक बहुत बड़ा मोर्चा था। इसने सिक्ख पंथ में एकता, बलिदान, जत्थेबंदी और पंथक जोश के अद्‌भुत दृश्य पेश किए। जुल्म के विरुद्ध संघर्ष का जो संकल्प पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत से शुरू हुआ उसी की ही एक कड़ी था बीसवीं सदी के तीसरे दशक में घटित हुआ 'गंगसर जैतो का साका'। इसमें अनेक सिक्ख पुरुषों, स्त्रियों एवं बच्चों ने शहादत का जाम पीया। २१ फरवरी, १९२४ ई. को गुरुद्वारा गंगसर की जूह में अंग्रेज़ी सरकार ने सरकारी अन्याय का शांतिमय ढंग से विरोध प्रकट करते जत्थे पर अंधाधुंध गोलियां बरसाईं। जो साका घटित हुआ वह सिक्ख पंथ की स्मृति का सदीवी अंग बन चुका है।

गुरुद्वारा गंगसर साहिब दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज की पावन स्मृति में कसबा जैतो (फूल रियासत नाभा आजकल फरीदकोट) में निर्मित किले के पास बना हुआ है। इस गुरुद्वारा साहिब को रियासत नाभा के महाराजा हीरा सिंघ जी ने बनवाया था। इसके सरोवर को 'गंगसर' नाम से जाना जाता है।

जैतो का मोर्चे के आरंभ होने का कारण महाराजा नाभा को सरकार द्वारा गद्दी से अलग करने के विरुद्ध सिक्खों में फैली नाराज़गी थी। महाराजा रिपुदमन सिंघ ने अपने पिता से सिक्खी संस्कार लिए थे। उनका सिक्ख पंथ से गहरा लगाव था। उनका सिक्ख नेताओं से मेल-जोल था। महाराजा भुपिंदर सिंघ पटियाला को उनका ऐसा किरदार पसंद न था। इस प्रकार उनमें झगड़ा शुरू हुआ। अंग्रेज सरकार पहले ही रियासत नाभा के विरुद्ध थी। इसका लाभ उठाते हुए महाराजा पटियाला ने महाराजा नाभा के विरुद्ध कई मुकद्दमें दायर कर दिए। सरकार ने झगड़े के निपटारे हेतु इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज मिस्टर सटुआर्ट को नियत किया। उसने फैसला महाराजा नाभा के विरुद्ध कर दिया। महाराजा साहिब ने त्याग-पत्र दे दिया। सरकार ने उनको तीन लाख रुपए वार्षिक देने नियत करके देहरादून भेज दिया। सिक्ख पंथ में इसका प्रतिकर्म होना स्वाभाविक था क्योंकि महाराजा नाभा सदैव ही शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और शिरोमणि अकाली दल की हर संभव सहायता करने को तैयार रहते थे। जब ननकाणा साहिब के साके का रोष व्यक्त करने के लिए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने काली दस्तारें सजाने की अपील की तो महाराजा साहिब ने स्वयं भी काली दस्तार सजाई और साथ ही रियासत में अरदास दिवस मनाने के लिए सरकारी छुट्‌टी भी की। जब नवंबर, १९२० को गुरुद्वारा रकाब गंज दिल्ली की गिरी दीवार का निर्माण करने हेतु 'शहीदी जत्था' दिल्ली ले जाने की घोषणा हुई तो महाराजा जी ने मध्य में आकर दीवार का निर्माण कराकर जहां सिक्ख कौम में एक अच्छा कार्य किया वहां सरकार को भी मुश्किल स्थिति में

से निकाला। परंतु ऐसा होने पर भी महाराजा जी सरकार की आंखों में खटकते थे।

सरकार के महाराजा साहिब के विरुद्ध निर्णय के खिलाफ़ लोगों में रोष फैल गया। लोगों ने मते पारित कर शिरोमणि कमेटी के पास भेजे। लोक-राय के प्रभाव में शिरोमणि कमेटी ने यह कार्य अपने हाथ में ले लिया। इसने वायसराये को तार भेज कर निष्पक्ष जांच कमिशन नियत करने के लिए कहा। सरकार ने कोई संतुष्टजनक उत्तर न दिया। लोगों को विश्वास हो गया कि महाराजा जी को गद्दी से उतारा गया है। शिरोमणि कमेटी ने ४ अगस्त को एक बैठक में साहानुभूति मता पारित किया। संगत को जगह-जगह दीवान लगाकर, जलूस निकाल कर उनके साथ हुए अन्याय के विरुद्ध 'नाभा दिवस' मनाने की अपील की गई।

क्षेत्रीय लोगों ने २७ अगस्त को एक बहुत भव्य दीवान आयोजन करने का निर्णय लिया। नयी हकूमत ने इसमें संभावी भाग्य लेने वालों के नाम लिखने आरंभ कर दिए। लोगों को डराया गया।

सिक्ख संगत ने महाराजा जी की पुन: गद्दी प्राप्ति के लिए गुरुद्वारा गंगसर में पाठ आरंभ किया। साथ ही दीवान की भी योजना बनाई। वे कर्मचारी जिनकी साजिश से उनको गद्दी से उतारा गया था, वे यह कैसे सहन कर सकते थे? अत: सब रास्ते बंद कर दिए। मार्शल लॉ लगा दिया गया।

९ सितंबर को महाराजा जी की बहाली हेतु जलूस निकाला गया। जलसे होने आरंभ हो गए। ११ सितंबर को सिंघों का एक जत्था शांतिमय रहने का प्रण करके मुक्तसर से जैतो की ओर निकाला। २४ सितंबर को १०२ सिंघों का जत्था जैतो पहुंचा भाषण हुए। उपरांत आखंड पाठ आरंभ हुआ। रियासत के शस्त्रबद्ध सिपाहियों ने जिसमें विलसन, जोहनस्टन ऐडमिंटेटर और वज़ीर गुरदयाल सिंघ भी शामिल थे। भाई इंदर सिंघ सहित तीस सिंघों को पकड़ लिया। अत: आखंड पाठ खंडित हो गया। सिंघों में जोश की लहर फैल गई। मिस्टर डंनिट ने धर्म में हस्तक्षेप की मूर्खता दिखाई। यह नये नाभा हाकिमों की बेवकूफी थी।

अब मुख्य उद्देश्य खंडित पाठ को संपूर्ण करना सामने रखा गया। यह क्रम सात मास तक चलता रहा। इस मोर्चे की चर्चा देश भर में हुई। धीरे-धीरे सारे देशवासियों का ध्यान इधर हो गया।

दिल्ली में १९२३ ई. में कांग्रेस कमेटी की एक बैठक हुई। डॉ. सैफूदीन किचलू ने इस अमन पसंद आंदोलन की रिपोर्ट बैठक में प्रस्तुत की। कांग्रेस अगुआ इससे अत्यंत प्रभावित हुए। पंडित जवाहर लाल नेहरू, प्रो. गिडवानी एवं श्री सनतानम हालात से अवगत होने हेतु जैतो की ओर चल दिए। मुक्तसर से स. दरबारा सिंघ मल्लण को भी साथ ले लिया।

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने जैतो पहुंच कर अपनी आंखों से सिक्खों को धर्म की शमा पर परवानों की भांति जलते हुए देखा। प्रबंधकों ने उन्हें क्षमा मांगने तथा दोबारा यहां भविष्य में कभी न आने का वादा मांगा। २२ मई को विलसन ने महात्मा गांधी को लिखा कि पंडित नेहरू को फिर कभी नाभा न आने के वायदे के उपरांत छोड़ा गया है।

१२ अक्तूबर,१९२३ ई. के दिन अंग्रेजी सरकार ने शिरोमणि कमेटी और शिरोमणि अकाली दल को अवैद्य घोषित कर दिया। छापामारी से ५९ मुख्य अकाली आगुओं को

गिरफ्तार कर लिया। श्री अमृतसर के सभी द्वारों पर मशीनगनें लगवा दीं। विशेष स्थानों पर मार्शल लॉ लगा दिया गया। नाभा जाने वाले जत्थों की सहायता करने वालों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाई की चेतावनी दी गई। अकाली आगुओं का मुख्य जत्था पकड़कर बंदीगृह में डाल दिया गया। शेष को पकड़ने के लिए प्रयास होने लगे। १७ जनवरी, १९२४ ई में सरकार अपने मंसूबों में सफल हुई।

इस दिन श्री अकाल तख़्त साहिब, श्री अमृतसर पर हो रही बैठक में सरकार की धक्केशाही की आलोचना की गई। सिक्खों की कुर्बानियों की प्रशंसा की गई। आखंड पाठ खंडित होने के गहरे दुख का पश्चाताप करने के लिए १०१ आखंड पाठ करने का निर्णय लिया गया। कार्यवाहक कमेटी को सभी हालात का सामना करने के सभी अधिकार दिए गए। अकाली आगुओं ने घंटाघर जाकर स्वयं गिरफ्तारी दी। ५५ वर्ष की आयु वालों को एक-एक वर्ष कैद और ५००-५०० रुपए जुर्माना या तीन महीने की कठोर सज़ा हुई।

पटियाला, बरनाला, सरहिंद एवं फरीदकोट रियासत में अकाली आंदोलन बहुत ज़ोर पकड़ गया। नाभा के विलसन को सभी अधिकार मिले हुए थे। वह किसी को भी मार-खपा देना मामूली बात समझता था। उसने पांच मास में (अगस्त १९२३ से जनवरी १९२४ तक) ९० सिंघों की संपत्तियां छींन ली। १२००० से नेक चलन की जमानतें ली गईं। राजनैतिक बातें होने के आधार पर धार्मिक दीवानों पर रोक लगा दी गई। प्रभाव इच्छित रूप में न होता देख, शिरोमणि कमेटी ने संघर्ष तीव्र करने का निर्णय लिया। ५०० सिंघों का शहीदी जत्था जैतो भेजने का निर्णय लिया गया ताकि आखंड पाठ पूर्ण हो सकें।

शहीदी जत्थे ने ९ फरवरी, १९२४ के दिन श्री अकाल तख़्त साहिब में चलकर जैतो पहुंचना था। इस जत्थे को विदा करने ३०,००० सिक्ख श्री अकाल तख़्त साहिब पर पहुंचे। शहीदी जत्था एक ही पहनावे में था। एक अद्‌भुत दृश्य रूपमान हो रहा था। तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर की रिपोर्ट में ये शब्द अंकित है कि जहां से जत्था गुज़रता लोग वहां से मिट्टी उठाकर माथे पर लगाते श्री अकाल तख़्त साहिब पर बाद में जाने वाले विचाराधीन शहीदी जत्थों में शामिल होने के लिए हज़ारों नाम पेश किए गए। स्त्री, पुरुष, बूढ़े, बच्चे, युवतियां, युवक सभी कुर्बानियां देने के लिए तैयार थे।

२१ फरवरी को जब जत्था जैतो पहुंचा तो विलसन जोहनसटन ने सेना को जत्थे पर गोलियां बरसाने का हुक्म दिया। लोग टिब्बी साहिब की तरफ जा रहे जत्थे को निहार रहे थे, उन पर लाठी चार्ज किया गया। आगुओं ने विलसन जोहनसटन को जनरल डायर का वारिस बताया। समाचार पत्रों ने समाचार प्रकाशित किए। इस गोली-कांड में कितने शहीद हुए उसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता।

सरकार को भ्रम था कि कत्लेआम करके वह सिक्खों में भय फैला देगी। शायद वह १३ अप्रैल, १९१९ और २० फरवरी के जलियांवाला बाग, श्री अमृतसर और ननकाणा साहिब को शहीदी साकों को भूल चुकी थी। सरकार जैसे-जैसे दमनचक्र तेज़ करती, सिंघों में और अधिक जोश व उत्साह पैदा हो जाता। प्रत्यक्ष दर्शियों ने सिंघों की तुलना गेंद से की। गेंद की भांति सिंघों को जितनी चोट लगाते सिंघ उतना ही अधिक उछलकर दिखाते।

प्रथम जत्थे की अगुआई स. ऊधम सिंघ जी

नागोके ने करनी थी। उनको पहले ही गिरफ्तार कर लिया गया। इसके बावजूद सिंघों में जोश बढ़ता ही चला गया। सरकार के बुरे इरादों को महसूस करके लाला लाजपत राय एवं महात्मा गांधी ने जत्था रोकने का प्रयास किया परंतु शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने प्रत्येक सूरत में जत्था भेजने की घोषणा कर दी। सिक्ख युवक एवं बच्चे गाते हुए जाते थे :

सिर जावे ता जावे, मेरा सिक्खी सिदक न जावे!

सिक्खों के १६ शहीदी जत्थे बारी-बारी रवाना हुए। राष्ट्रीय प्रसिद्धि प्राप्त समाचार पत्रों में पहले पृष्ठों पर समाचार प्रकाशित हुए। एक जत्था वैनकूवर से भाग लेने भारत पहुंचा। कलकत्ता में इसका भव्य स्वागत हुआ। यह जत्था पटना साहिब, बनारस, इलाहाबाद, लखनऊ, दिल्ली और सहारनपुर में से होता हुआ व प्रचार करता हुआ १५ जुलाई को श्री अमृतसर पहुंचा। श्री अकाल तख़्त साहिब से १०१ सिंघों का विशेष जत्था रवाना हुआ। यह जत्था रास्ते में प्रचार करता हुआ जा रहा था। रास्ते में इसको ज्ञात हुआ कि सरकार ने आखंड पाठ पर लगाया प्रतिबंध हटा लिया है। इस जत्थे ने वहां पहुंच कर पहला आखंड पाठ किया।

जब गुरुद्वारा एक्ट पूर्णत: तैयार हो गया तो सरकार ने सिक्खों के जोश व कुर्बानी के सामने हथियार फेंक दिए। अकालियों की रिहाई के आदेश दे दिए। इसके साथ ही जैतो में १०१ आखंड पाठों का क्रम प्रारंभ हुआ। ये सभी आखंड पाठ ७ अगस्त, १९२४ के दिन संपूर्ण हुए। सभी जत्थे रिहा होकर जैतो पहुंचे। सभी अगुआ पहुंचे। सरकार ने सिक्ख संघर्ष में उनका सब छीना सामान वापिस लौटाया। अत: वहां से सिंघों के जत्थों की वापिसी पूर्ण आन-शान एवं स्वीकृत सिक्ख धार्मिक परंपराओं सहित हुई।

इस मोर्चे की विजय की बधाईयों का बहुत बड़े स्तर पर आदान-प्रदान हुआ। एक बहुत बड़ा जलूस निकाला गया। १९ अगस्त, १९२४ को विजयी सिक्ख फौजें तरनतारन से श्री अमृतसर को पैदल रवाना हुईं। अगले दिन विजय समागम हुआ। सभी को गुरु महाराज की बख़्शिश सिरोपा प्रदान किया गया एवं सम्मान पत्र बख़्शे गए। जैतो का मोर्चा सिक्ख पंथ की दृढ़ता, अडोल सिक्खी सिदक, अपार धार्मिक विश्वास व निश्चय की एक ऊंची उदाहरण है। इस मोर्चे से वाहिगुरु जी के खालसा के ऊंचे साहस का समूचे संसार को प्रत्यक्ष सबूत मिल गया। इस मोर्चे ने सिक्ख कौम में पहले से भी अधिक जोश व उत्साह तथा कौमी चेतना का संचार कर दिया। हमको ऐसा भव्य इतिहास सदैव स्मर्ण रहना चाहिए। इसी में कौम की सदैव चढ़दी कला का राज़ छिपा हुआ है। ❁

सिक्ख धर्म के बुनियादी विकास में प्रमुख संस्थाओं का योगदान

*-डॉ. रेणु शर्मा**

राजस्थान में जन्मी-पली मैं आपके सम्मुख सिक्ख धर्म के बुनियादी-विकास की बात करने जा रही हूं। जितनी दिलेरी, ताकत, प्यार व विश्वास मैंने इस धर्म की संस्थाओं में देखा है, उतना शायद किसी अन्य कौम या धार्मिक संस्था में मिलना मुश्किल है। मुझे तो इतने साल पंजाब से दूर रहने का अफ़सोस भी है। अब मैं इन सिक्ख संस्थाओं से जुड़कर तथा इनकी खूबियों को हर आम आदमी से चर्चित करके उद्घोषित करना चाहती हूं तथा करती भी रही हूं।

वैसे तो सभी धर्मों में से इंसानियत की ही खुशबू आती है, मगर धार्मिक संस्थाएं भी किसी धर्म का महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं। सिक्ख धर्म से संबंधित संस्थाएं जिस ईमानदारी तथा सच्चाई के साथ कार्य कर रही हैं उसे नकारा नहीं जा सकता। हम सभी को गैर-धर्मी लोगों के समक्ष गुरबाणी को इस ढंग से पेश करना चाहिए, जिससे अधिकाधिक लोग इसे अपना सकें, ताकि इस धर्म का सर्वोपरि विकास हो सके। जो धारणाएं पूर्वत: चली आ रही हैं, उन्हें परिपक्व करना तथा सही दिशा की ओर अग्रसर करते रहना ही हम सबका या सिक्ख संगत का प्रमुख कर्त्तव्य है।

श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के अंतिम समय तक लगभग २३९ वर्षों का समय बनता है। इस समय के दौरान ही सिक्ख धर्म का उत्थान तथा विकास हुआ। इसी में से सिक्ख धर्म का बुनियादी समय श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना तक का या श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत तक का बनता है। इस बुनियादी समय में सिक्ख धर्म के विकास में सिक्ख धर्म से सम्बद्ध धार्मिक संस्थाओं का अत्यधिक योगदान रहा। इन संस्थाओं में प्रमुख रूप से संगत की सर्वोच्चता, मंजी-प्रथा, मसंद-प्रथा आदि संस्थाएं थीं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब शबद गुरु हैं और शबद की रूहानी विचारधारा की शक्ति है-- ये संस्थाएं, जोकि सिक्ख धर्म के विकास में सहायक हैं। अतएव 'शबद गुरु' के सिद्धांत का वास्तविक रूप है-- 'साक्षात्कार' अर्थात् श्री गुरु ग्रंथ साहिब एक निर्गुण निराकार ब्रह्म से साक्षात् मिलन। श्री गुरु ग्रंथ साहिब से मिलन या प्राप्ति का मार्ग इस धर्म की संस्थाएं ही बताती हैं।

किसी भी धर्म की जड़ें या विचारधारा की लहरों की बुनियाद यही संस्थाएं होती हैं। इन्हीं संस्थाओं द्वारा समूची कौम का विश्वास तथा भावनाएं प्रकट होती हैं। पहले संकल्प अस्तित्व में आता है, फिर सिद्धांत स्थापित किये जाते हैं। सिद्धांतों को वास्तविक ढंग से व्यवहार में लाने के लिए संस्था की ज़रूरत पड़ती है। 'शबद-गुरु' का सिद्धांत आध्यात्मिक ज्ञान तथा अंदर की खोज को प्रकट करता है। सिक्ख धर्म में प्रारंभ से ही शैक्षणिक संस्थाएं चली आ रही हैं, बल्कि कहा जाए कि इस धर्म के संस्कारों में विद्या या पढ़ाई-

**पंजाब इतिहास अध्ययन विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२*

लिखाई है, जो इसे ऊंचा उठाने में सहायक है, तो ग़लत नहीं होगा। संगत की सर्वोच्चता सिक्ख धर्म की प्रजातांत्रिक पहुंच तथा प्रणाली को दर्शाती है, चूंकि यह पहले संगत की सर्वोच्चता से ही प्रारंभ हुई। मंजी-प्रथा तथा मसंद-प्रथा सिक्ख धर्म के प्रचार को दर्शाने वाली संस्थाएं हैं, जिन्होंने समय-समय पर सिक्ख धर्म के विकास में अपना योगदान प्रदान किया। क्रमानुसार विवरण इस प्रकार है--

श्री गुरु नानक देव जी शिक्षा प्राप्त थे। शिक्षा-प्राप्ति के समय से ही श्री गुरु नानक देव जी गंभीर सोच-समझ वाले थे। उन्होंने धर्म-प्रचार आरंभ कर दिया था। उन्हें भिन्न-भिन्न देशों की भौगोलिक स्थिति का ज्ञान प्राप्त था। भारतीय सामाजिक व्यवस्था को उन्होंने बहुत नज़दीक से देखा था। उन्होंने सबसे पहले पंजाब की ज़मीन को उपजाऊ बनाकर इस सामाजिक स्थिति से निपटने का फैसला किया। उन्होंने सभी धार्मिक भिन्नताओं से ऊपर उठकर नारा लगाया कि यहां न कोई हिंदू है, न कोई मुसलमान।[१] यहां सभी बराबर तथा एक ही परमात्मा की संतान हैं, एक ही धरती के पुत्र हैं, अतएव समाज में हर प्रकार से सबके साथ बराबरी होनी चाहिए।

ऊंच-नीच, जात-पात, अमीरी-गरीबी, श्रेणी-विभाजन आदि सभी बातों को गलत, अस्वाभाविक तथा गैर-धार्मिक बताते हुए श्री गुरु नानक देव जी ने इन्हें मनुष्य द्वारा बनाए गए ढकोसले बताया, अतएव इन्हें खत्म करना ज़रूरी है। वैसे तो मध्यकालीन संत-काव्य परंपरा के सभी संतों व भक्तों ने इस भेदभाव को मिटाने का अनथक प्रयास किया, परंतु श्री गुरु नानक देव जी ने स्वयं अपने आपको निम्न से निम्न वर्ग के साथ खड़ा करके देखा तथा ब्राह्मण व काज़ी के रूप में हो रही सामाजिक लूट-खसूट के ख़िलाफ़ लड़ाई प्रारंभ कर दी। इस प्रकार सामाजिक स्तर पर बराबरी का नारा लगाते हुए *"एकु पिता एकस के हम बारिक"* का सिद्धांत सामने लाया गया।

श्री गुरु नानक देव जी ने परमात्मा के संकल्प को भी नवीन व्याख्या के रूप में पेश किया। उनके कथनानुसार परमात्मा सदैव स्थिर रहने वाला हर स्थान पर व्याप्त है; समूचे संसार का जन्म-दाता है, पालनहारा है, सर्वोच्च है, वह जन्म-मरण से मुक्त है, रंग-रूप से मुक्त है, सृष्टिकर्ता है, अतएव उसे किसी भी नाम से पुकारा जा सकता है। उसे किसी तंत्र-मंत्र से प्राप्त नहीं किया जा सकता। गुरु जी ने परमात्मा के संकल्प को परम सत्य का रूप देकर, परंपरागत रूप से चले आ रहे रूढ़िवादी विचारों को जबरदस्त चोट मारी थी। परमात्मा एक भय नहीं बल्कि सृष्टि का मालिक है। परमात्मा पत्थरों में नहीं बसता, वो हर हृदय में निवास करता है। परमात्मा निश्चित आकार वाला नहीं, वो निराकार व निर्गुण है।

समकालीन सिद्धों, नाथों तथा योगियों ने परमात्मा की प्राप्ति या मुक्ति के साधन बड़े कठिन ढंग के जप, तप, व्रत, उपवास आदि बना रखे थे। उनके अनुसार परमात्मा को केवल घर-बार त्यागकर, शरीर को भूखा-प्यासा रखकर, अत्यधिक कष्ट देकर तथा भांति-भांति के जंत्र-मंत्र पढ़कर प्राप्त किया जा सकता है। श्री गुरु नानक देव जी ने इन साधनों की कड़ी निंदा की तथा कहा कि व्यक्ति गृहस्थी के साथ ही परमात्मा की प्राप्ति कर सकता है। मनुष्य की मुक्ति उसके द्वारा काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार पर नियंत्रण पा लेने से ही होती है।

दूसरे शब्दों में, परमात्मा की प्राप्ति आत्म-ज्ञान का ही दूसरा नाम है। आत्म-ज्ञान से ही ब्रह्मांड का ज्ञान प्राप्त होता है। यही परमात्मा की प्राप्ति है।

अध्ययन, ज्ञान, परस्पर विचार-विमर्श तथा खोज करने के साथ ही संभव है। इस बात को श्री गुरु नानक देव जी ने 'शबद-गुरु' का नाम दिया। 'शबद' ही प्रत्येक ज्ञान का साधन है। 'शबद' ही प्रत्येक मुसीबत का समाधान है। 'शबद' के बिना व्यक्ति को किसी भी प्रकार की सूझबूझ संभव नहीं हो सकती। इस प्रकार श्री गुरु नानक देव जी ने 'शबद' की सर्वोच्चता स्थापित की। 'शबद' को आधुनिक बोली में ज्ञान, अध्ययन, पढ़ाई, खोज, कार्य आदि नामों से भी व्याख्यायित किया जा सकता है। इसके साथ-साथ अधिकाधिक विद्यार्जन तथा अध्ययन पर भी ज़ोर दिया जा सकता है। बाणी के उच्च कोटि के स्तर को देखते हुए यह भी कहा जा सकता है कि श्री गुरु नानक देव जी स्वयं उच्च कोटि की विद्या प्राप्त महापुरुष थे। उन्होंने लोगों को भी ज्ञानार्जन की तरफ प्रेरित किया। उनके अनुसार विद्या-प्राप्ति या ज्ञानार्जन ही सब दुखों का समाधान है। ज्ञानार्जन के द्वारा ही परोपकारी हुआ जा सकता है :

विदिआ वीचारी तां परउपकारी ॥
जां पंच रासी तां तीरथ वासी ॥

(पन्ना ३५६)

इस प्रकार गुरु नानक साहिब ने परमात्मा, भक्ति तथा जात-पात के संदर्भ में अत्यधिक स्पष्ट मार्ग अपना लिया। इस प्रचार में सबसे अहम बात यह थी कि उन्होंने लोगों की बात लोगों तक लोगों की बोली में पहुंचाई। संस्कृत कठिन भाषा होने के कारण साधारण लोगों की समझ से परे थी। गुरु जी ने लोगों को साधारण भाषा में उपदेशित किया। इससे लोक-भाषा की महानता उभरनी शुरू हो गयी थी जो कि साधारण लोगों की जमीर की आवाज़ को बुलंद करने का पहला कदम था। दूसरा, परमात्मा के साथ संबंधित संकल्प इतने सरल और स्पष्ट हो गए थे कि लोग पुजारी श्रेणी द्वारा फैलाए कठिन और जटिल उपायों एवं अंधविश्वासों से छुटकारा पाने लगे। इससे गुरु नानक साहिब के अनुयायियों की गिनती भी बढ़ी और धर्म-प्रचार भी भरपूर ज़ोर पकड़ने लगा। अपने अनुयायियों को उन्होंने स्थानीय स्तर पर संगत के रूप में संगठित कर दिया था।[२]

मानव-स्वतंत्रता के इस संदेश का श्री गुरु नानक देव जी ने अपने देश से बाहर जाकर भी प्रचार-प्रसार करने का फैसला किया। फलस्वरूप गुरु जी पंजाब व भारत से बाहर भी गये। अरब देशों जैसे उन देशों में भी गये जहां गैर-मुसलिमों को जाने की मनाही थी। बर्फ़ीली चोटियों में बैठे सिद्धों, नाथों व योगियों की गुफाओं में पहुंचकर भी उन्होंने परिचर्चा की और अपने ज्ञान की शक्ति द्वारा सभी को अपने संकल्प के बारे में सफल रूप से जानकारी मुहैया करवायी। भारत जैसे विशाल भू-खंड तथा अन्य देशों की यात्रा से यह बात भी स्पष्ट होती है कि श्री गुरु नानक देव जी का ज्ञान व दृष्टि कितनी विशाल थी। इसके साथ-साथ उनकी शारीरिक तथा मानसिक शक्ति व दिलेरी का भी प्रमाण मिलता है क्योंकि डरपोक, शारीरिक तथा मानसिक रूप से कमज़ोर व्यक्ति न ही इतनी जटिल यात्राएं कर सकता है और न ही ऐसा दृष्टांत पेश कर सकता है। निश्चित रूप से श्री गुरु नानक देव जी एक प्रबुद्ध तथा प्रवीण पुरुष

थे, इसीलिए तो भाई गुरदास जी ने उनको 'अकाल रूप' कहा है। श्री गुरु नानक देव जी इतनी प्रभावशाली शख़्सियत के मालिक थे कि जब वे ज्ञानात्मक चर्चा करते थे तो उनका कोई अंत नहीं पा सकता था। वे ज्ञान का सागर थे। एशिया के महाद्वीप में उन्होंने एक ऐसे धर्म की नींव रख दी थी जो आने वाले समय में महान प्राप्ति की ओर अग्रसर था।

श्री गुरु नानक देव जी की आज्ञा से ही श्री गुरु अंगद देव जी ने गुरमुखी लिपि का विकास किया और गुरबाणी को गुरमुखी लिपि में लिखा। इससे लोक-भाषा 'पंजाबी' को लिपि 'गुरमुखी' प्राप्त हुई।

श्री गुरु नानक पातशाह द्वारा श्री गुरु अंगद देव जी को अपना उत्तराधिकारी घोषित करना सिक्ख धर्म का एक अहम मोड़ था। यह ज्ञात हो कि भक्ति लहर के कई क्रांतिकारी भक्तों के संप्रदाय केवल इसी कारण खत्म हो गए थे, क्योंकि उन्होंने अपना कोई उत्तराधिकारी नियुक्त नहीं किया था। श्री गुरु नानक देव जी का मत इसलिए कायम रहा क्योंकि इसमें बाकायदा उत्तराधिकारी नियुक्त किए जाते रहे। इससे 'गुरु' का संकल्प एक संस्था बन गया था। श्री गुरु नानक देव जी के अंतिम समय तक सिक्ख धर्म के सिद्धांत, संकल्प तथा कई संस्थाएं स्थापित हो चुकी थीं। अगली ज़रूरत केवल एक उत्तराधिकारी नियुक्त करने की थी, जो श्री गुरु अंगद देव जी के रूप में पूरी हुई। श्री गुरु अंगद देव जी ने सिक्ख संगत को सही दिशा-निर्देश दिए तथा श्री गुरु नानक देव जी द्वारा मान्यता प्राप्त सिद्धांतों व संकल्पों को और अधिक स्पष्टता दी। गुरमुखी लिपि को और अधिक विकसित करने के लिए विविध प्रयास किए गए। श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु नानक देव जी की बाणी को ही नहीं संभाला बल्कि स्वयं भी बाणी की रचना की। लंगर की प्रथा को बाकायदा एक रीति के रूप में विकसित किया गया। चाहे श्री गुरु अंगद देव जी बाहर लंबी प्रचार-यात्राओं पर नहीं गये थे लेकिन उन्होंने प्रचार-केंद्र खडूर साहिब स्थापित करके वहीं से ही सिक्ख संगत को सैद्धांतिक दिशा दी। उन्होंने १५३९ ई से लेकर १५५२ ई तक गुरु-पद को संभाला।

श्री गुरु अंगद देव जी ने अपने पक्के सेवक बाबा अमरदास जी को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। इनका समय १५५२ ई. से लेकर १५७४ ई तक रहा। इन्होंने सिक्ख संगत को संभालते हुए उदासियों और दूसरे समकालीन मतों से दूर रहने का आदेश देते हुए सही व स्पष्ट दिशा-निर्देश दिए। वे हिंदू-तीर्थों पर भी गए ताकि उन्हें वाह्य आडंबरों से हटाकर सही मार्ग का निर्देश दे सकें। उन्होंने पहले दो गुरु साहिबान की बाणी को भी संभाला और खुद बाणी भी रची।[३] सिक्ख संगत के लिए बाकायदा एक केंद्र 'गोइंदवाल साहिब' स्थापित किया। अपने दामाद भाई जेठा जी को हर प्रकार से योग्य जानकर श्री गुरु रामदास जी के रूप में गुरु घोषित करके श्री गुरु अमरदास जी ज्योति-जोत समा गए।

श्री गुरु रामदास जी का गुरु-काल १५७४ ई से लेकर १५८१ ई तक था। इन्हें उच्च कोटि की बौद्धिकता का मालिक कहा जाये तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। ये अपने ससुर श्री गुरु अमरदास जी के साथ हर समय रहते थे। श्री गुरु रामदास जी ने 'अमृतसर' नामक सरोवर की खुदवाई करवाई। इस सरोवर के आसपास नगर स्थापित करने का कार्य सम्पन्न किया गया, जो श्री अमृतसर के नाम से विख्यात हुआ। श्री

अमृतसर नगर गुरु आशा के अनुसार तथा पूरी योजनाओं के तहत स्थापित नगर था। यह नगर सिक्ख सभ्याचार को ध्यान में रखकर स्थापित किया गया।

श्री गुरु अरजन देव जी ने सन् १५८१ ई. से लेकर १६०६ ई. तक गुरु-पद संभाला। इनके समय में सिक्ख धर्म ने सर्वतोमुखी विकास किया था। आप जी महान योजनाकार थे। श्री अमृतसर के पवित्र सरोवर में श्री हरिमंदर साहिब की तैयारी करवाई। यह स्थान एक महान धार्मिक केंद्र के रूप में स्थापित हुआ। १५९३ ई. में करतापुर साहिब की स्थापना की गयी। १५९६ ई. में तरनतारन नगर की स्थापना की गई। १५९७ ई. में ब्यास दरिया के किनारे श्री हरिगोबिंदपुर नामक नगर बसाया।

इसके साथ-साथ ही उन्होंने सिक्ख समाज को अत्यधिक रूप से संगठित करने के लिए पूर्ववत चले आ रहे मंजी-प्रबंध को परिवर्तित करके मसंद-प्रणाली वाला प्रबंध स्थापित किया। इसके तहत मसंद गुरु-घर के प्रचारक के रूप में और गुरु व संगत के बीच एक कड़ी का काम करते थे। श्री अमृतसर का व्यापार, यहां की योजनाबंदी तथा यहां का प्रबंध लाहौर शहर से कहीं ज़्यादा अच्छा था।

श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की आदि बीड़ की संपादना करके समूचे सिक्ख समाज को आदर्श अगुआई प्रदान की। बौद्धिक तथा वैचारिक तौर पर यह गुरु जी की एक बहुत बड़ी देन थी। सिक्खों का अपनी भाषा तथा अपनी लिपि में लिखा गया यह सबसे पहला धार्मिक ग्रंथ था।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सिक्ख धर्म के बुनियादी विकास में प्रथम पांच गुरु साहिबान का तथा उनके द्वारा स्थापित संस्थाओं का अति उत्तम योगदान है। यह समय सिक्ख धर्म के लिए शांति वाला भी था और इसे विकसित करने वाला भी। इस समय तक सिक्ख धर्म के पास अपने सिद्धांत, अपने संकल्प और अपनी संस्थाएं स्थापित हो गयी थीं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना से सिक्ख धर्म के विकास का प्रथम चरण पूरा हो गया था।

यह धर्म विकासशील संभावनाओं की गुंजाइश रखते हुए सभी संबद्ध संस्थाओं के प्रति एक ईमानदार पहुंच तथा स्वस्थ मानसिकता रखने वाला प्रतीत होता है। इसमें अभी विकास की बहुत गुंजाइश है तथा मेरा विश्वास है कि इसकी संस्थाओं का स्वस्थ एवं मेहनतकश होना इसमें शामिल है, ताकि इसकी स्थिति उतनी ही अच्छी व स्पष्ट बन सके जितनी कि किसी नैतिक मूल्यों व स्वस्थ मानसिकता वाले संस्कार लेकर चलने वाले किसी धर्म की होनी चाहिए।

संदर्भ-सूची:

१. मिहरबान वाली जनम-साखी और विलायत वाली जनम-साखी, पृष्ठ ८९; डॉ. किरपाल सिंघ (संपादक), 'जनम-साखी परंपरा: ऐतिहासिक दृष्टिकोण से'; पटियाला, १९९०, पृष्ठ १०

२. तेजा सिंघ, 'सिक्खिज़म इट्स आइडियल एंड इंस्टीट्यूशंस, बम्बई, १९३७, पृष्ठ ४०

३. प्रो. साहिब सिंघ, अबाउट कम्पाइलेशंस ऑफ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, श्री अमृतसर, १९९६, पृष्ठ ५० तथा ८१

भ्रष्टाचार : कारण और निवारण

*-डॉ दादूराम शर्मा**

अर्थ या धन मानव जीवन का आधार है। हमारे मनीषियों ने प्राचीन काल में जिन चार पुरुषार्थों की स्थापना की थी, वे हैं-- धर्म अर्थ, काम और मोक्ष। विज्ञान के इस युग ने धर्म और मोक्ष की मान्यताओं को पूरी तरह नकार दिया है अथवा संदेह के घेरे में लाकर खड़ा कर दिया है। फलत: मानव की सम्पूर्ण सत्ता उसके भौतिक पिंड में सिमटकर रह गई है। ऐसी स्थिति में अर्थ का प्रधान हो जाना स्वाभाविक ही है, क्योंकि उसी पर हमारी समस्त कामनाओं की पूर्ति निर्भर है। फिर भी मनुष्य यदि स्वयं को जीविका-पूर्ति या अपनी रोटी, कपड़ा और मकान तक सीमित रखता तो गनीमत थी, किंतु जब उसके मन में 'तृष्णा' (असीमित और अनियंत्रित भोग-लालसा) ने जन्म लिया तो उसमें उनके साधन भूत धन को बटोरने की प्रबल इच्छा 'वित्तैषणा' जागृत हो गई और यहीं से प्रारंभ हुई मानव जगत में भयानक संघर्ष की कहानी।

हमारी इच्छाएं असीम हैं। एक इच्छा पूरी होती है तो दूसरी जन्म लेती है; दूसरी पूरी होती है तो तीसरी उत्पन्न हो जाती है। इन अनंत लालसाओं की पूर्ति के लिए हमें असीमित धन भी चाहिए। धन कमाने का आदिम उपाय है-- 'श्रम'। श्रम दो तरह का होता है-- शारीरिक और मानसिक या बैद्धिक। शारीरिक श्रम से आदमी किसी तरह पेट भरने लायक ही धन कमा सकता है और मानसिक श्रम से भी उसे पर्याप्त धन तो मिल सकता है किंतु उतना नहीं, जिससे वह अपनी नित्य बढ़ने वाली भोग-लालसाओं की पूर्ति कर सके। अत: उसने त्वरित धन-प्राप्ति के अन्य बेहतर और कारगर उपायों पर विचार किया, जिनमें सर्वप्रमुख था परद्रव्यापहार बल से अथवा छल से दूसरों का धन हड़प लेना। बल से, लूट या युद्ध द्वारा या छल से, ठगी, धोखाधड़ी अथवा जुए आदि द्वारा आदमी आदिम युग से ही दूसरों का धन हड़पता आया है।

बीसवीं सदी के तथाकथित सभ्य मानव ने प्रचुर धन-प्राप्ति का एक अभिनव उपाय खोज निकाला, जिसे 'भ्रष्टाचार' या 'करप्शन' कहा जाता है। वाणिज्य-व्यापार में भ्रष्टाचार जमाखोरी, मिलावटखोरी, कालाबाज़ारी, तस्करी आदि के रूप में व्याप्त हो गया, तो नेताओं और अधिकारियों में वह रिश्वतखोरी है और कर्मचारियों में रिश्वतखोरी के साथ-साथ टालमटोली और कामचोरी। 'दहेज-प्रथा' और 'दहेज-प्रताड़ना' भी इसके सामाजिक रूप हैं।

समाज में सर्वत्र धन और साधन-सम्पन्नता का सम्मान हो रहा है। आज 'व्यक्ति कैसा है' यह कोई नहीं देखता, सभी की दृष्टि 'उसके पास क्या है' पर केंद्रित हो गयी है। सभी का दृष्टिकोण व्यवसायिक हो गया है। संतोष को अकर्मण्यता कहा जाने लगा है। ईमानदारी, कर्त्तव्यनिष्ठा और श्रम आज जैसे मूर्खता के पर्यायवाची बन गए हों; समाज-सेवा पाखंड में

**सेवानिवृत्त प्राध्यापक, महाराज बाग, भैरवगंज, सिवनी (म. प्र.)-४८०६८१, फोन ०७६९२-२२२७९२*

परिणत हो गई हो। स्वाधीनता-संग्राम की अवधि में विदेशी सत्ता को उखाड़ फेंकने के लिए हमारे जननायक जहां अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को सन्नद्ध रहते थे, वहीं स्वाधीन भारत के नेता देश का सब कुछ हड़प लेने को कटिबद्ध हैं तथा अफ़सरों को तो जैसे पद के रूप में राष्ट्र और जनता को दोनों हाथों से लूटने का लाइसेंस (अनुज्ञापन) ही मिल गया हो। हवालों और घोटालों के रूप में इन महामहिमों की यशोगाथा हम आए दिन समाचार पत्रों में पढ़ते हैं, दूरदर्शन पर देखते-सुनते हैं।

सामाजिक स्तर पर भ्रष्टाचार का मूल कारण व्यक्तिवाद है। लोगों में विलासिता की होड़ अपने भौतिक स्तर को ऊंचा, और ऊंचा उठाने की अत्यधिक लालसा तथा इन सबके लिए जल्दी से जल्दी अधिकाधिक धन बटोर लेने की हवस ने समाज में भ्रष्टाचार को फैलाया है। संस्थापित जीवन मूल्यों और आदर्शों के अस्वीकार और बहिष्कार से यह बेरोक-टोक बढ़ रहा है।

बड़ी विडंबना है कि भ्रष्टाचार पर कानून से अंकुश नहीं लग पा रहा है, क्योंकि कानून ही उसके समक्ष नत्मस्तक हो जाता है, न्याय बिक जाता है। समाज की अतिरंजित भौतिकवादी सोच को बदलकर, धन को जीवन का साध्य नहीं, साधन मानकर और अध्यात्म को स्वीकार करके ही भ्रष्टाचार नियंत्रण किया जा सकता है। जिस आस्तिकता को विज्ञान ने नकार दिया है, उसे पुन: स्वीकारना होगा, धर्म की शरण में जाना होगा। धर्म मानवता है, मानवीय संवेदनाओं और जीवन मूल्यों के स्वीकार और अंगीकार का नाम है। धर्म सांसारिक भोगों को नकारने या त्यागने का परामर्श नहीं देता, क्योंकि मनुष्य-मात्र के लिए यह संभव है भी नहीं। वह भोग की अनुमति तो देता है, किंतु त्याग के साथ, सब्र संतोष के साथ :

बिना संतोख नही कोऊ राजै ॥
सुपन मनोरथ ब्रिथे सभ काजै ॥ (पन्ना २७९)

हमें अपने मन को काबू में करना होगा। क्योंकि यही सभी बखेड़ों की जड़ है; समस्त कामनाओं और वासनाओं का उद्गम-स्थान है। कामनाएं पूरी करने से और वासनाएं उपभोग करने से ये कभी शांत या तृप्त नहीं होती, अपितु बढ़ती ही जाती हैं। इन्हें तृप्त करने का प्रयास आग में घी का काम करता है :

लोभ लहिर सभि सुआनु हलकु है
हलकिओ सभहि बिगारै ॥ (पन्ना ९८३)

जब तक मनुष्य उसे हृदयहीन और मानवीय संवेदना-विहीन बनाने वाली वित्तैषणा और भोग लालसा को संयत नहीं करेगा, उन पर अंकुश लगाने का प्रयास नहीं करेगा और संतोष करना नहीं सीखेगा तब तक भ्रष्टाचार पर नियंत्रण सम्भव नहीं है। भौतिकवाद द्वारा रोपा गया और खाद-पानी देकर बढ़ाया गया ज़हरीले फलों से लदा भ्रष्टाचार का यह विशाल वृक्ष अध्यात्म के कुल्हाड़े से ही काटा जा सकता है। राष्ट्रीय स्तर पर न्यायपालिका की भी निष्पक्ष और कारगर भूमिका होनी चाहिए। दंडविधान भी कठोर होना चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर यदि संयुक्त राष्ट्र संघ और भी शक्ति-सम्पन्न होगा तभी वह विश्व स्तर पर व्याप्त तस्करी, आतंकवाद, हथियारों की होड़ आदि पर अंकुश लगा सकता है। ❂

गुरबाणी चिंतनधारा : १०९

आसा की वार : विचार व्याख्या

*-डॉ मनजीत कौर**

सलोकु मः १ ॥
नानक मेरु सरीर का इकु रथु इकु रथवाहु ॥
जुगु जुगु फेरि वटाईअहि गिआनी बुझहि ताहि ॥
सतजुगि रथु संतोख का धरमु अगै रथवाहु ॥
त्रेतै रथु जतै का जोरु अगै रथवाहु ॥
दुआपुरि रथु तपै का सतु अगै रथवाहु ॥
कलजुगि रथु अगनि का कूड़ु अगै रथवाहु ॥१॥
(पन्ना ४७०)

उपरोक्त सलोक में श्री गुरु नानक पातशाह जी ने एक गूढ़ (गहरे) रहस्य का उद्‌घाटन किया है कि यह जीवात्मा की जीवन यात्रा चल रही है। यह यात्रा कब प्रारंभ हुई कब तक चलनी है इसे कौन जान सकता है? बेशक चार युगों का ज़िक्र आया है लेकिन प्रत्येक युग में प्रत्येक स्वभाव के जीव विद्यमान रहते हैं। अत: मनुष्य रूपी शरीर सदैव किसी स्वभाव रूपी रथ पर सवारी करता है तथा इस स्वभाव रूपी रथ का कोई प्रेरक रथवान (सारथी) भी हमेशा मौजूद रहता है।

श्री गुरु नानक देव जी पावन फरमान करते हैं कि इस शिरोमणि शरीर का एक रथ है और एक रथवान अर्थात् सारथी है। (चौरासी लाख योनियों में सर्वोत्तम मानव-जीवन का एक रथ है तथा एक इसे चलाने वाला सारथी है) तथा प्रत्येक युग में मनुष्य के जीवन का उद्देश्य बदलता है तो साथ ही इसके प्रेरक स्रोत बदलते हैं इस गूढ़ रहस्य को कोई विरला ज्ञानी पुरुष ही जानता है। सतियुग में मानव-शरीर का रथ संतोष होता है तथा सारथी धर्म अर्थात् सतियुग में मनुष्य संतोषी होता है तो अंत:करण में प्रेरणा धर्म की रहती है और जहां प्रेरक सारथी धर्म होगा वहां संतोष टिका रहेगा। त्रेता युग में शरीर रूपी रथ यति पालन है (इंद्रीय निग्रह) तब इसका रथवान बल (शूरवीरता) का होता है। द्वापर युग में मानव जीवन तपस्या रूपी रथ बन जाता है तथा ऊंचा आचरण इसका सारथी होता है। कलियुग में मानव शरीर तृष्णा रूपी अग्नि का रथ बना हुआ है और इसका सारथी झूठ बना हुआ है।

गुरु पातशाह श्री गुरु नानक देव जी ने उपरोक्त सलोक में एक गूढ़ तथ्य को उजागर किया है कि किस प्रकार हर युग में प्रत्येक मनुष्य के स्वभाव रूपी रथ को चलाने हेतु कोई न कोई प्रेरक भाव हमेशा उसके साथ होता है और इससे यह भी स्पष्ट होता है कि प्रत्येक युग में हर तरह के व्यक्ति मौजूद रहे हैं। जिस व्यक्ति का प्रेरणास्रोत जिस तरह का होगा वह वैसा ही बन जाता है। इस प्रकार सतियुग में इस शरीर रूपी रथ की आत्मा रूपी सवारी के पास संतोष था। जीव की इच्छाएं धर्म रूपी थी जिसके परिणामस्वरूप प्रत्येक कार्य धर्म को प्रमुख रखकर किया जाता था। भाई गुरदास जी ने इस संदर्भ में बड़ा सुंदर उदाहरण दिया है :

करनि तपसिआ बनि विखै वखतु गुजारनि पिंनी सागे ॥
लखि बरिहआं दी आरजा कोठे कोटि न मंदरि

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

साजे। *(वार १:५)*

वक्त के इस सफर में यात्रा करते-करते कलियुग में शरीर तृष्णा की अग्नि के हो गए अर्थात् मानवीय प्रवृत्ति ईर्ष्यालु हो गई और सर्वत्र झूठ का पासार हो गया और जीवन झूठ और फरेब का बोलबाला हो गया।

लेकिन गुरु पातशाह जीव को प्रत्येक युग में मुक्ति का मार्ग दर्शाते हुए पावन सिद्धांत प्रस्तुत करते हैं :

भाउ भगति करि नीचु सदाए ॥
तउ नानक मोखंतरु पाए ॥२॥ (पन्ना ४७०)

अर्थात् अहंकार से रहित होकर जीव प्रेमा भक्ति करते हुए ही मोक्ष (मुक्तावस्था) प्राप्त कर सकता है। अत: हम कलयुगी जीवों को श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पावन बाणी से प्रेरणा लेकर अपना लोक-परलोक सफल बनाना है। पावन ग्रंथ की संपादना का विलक्षण कार्य करने वाले पंचम पातशाह जी को भट्ट साहिबान ने कलयुगी जीवों हेतु प्रत्यक्ष जहाज़ माना है :

कलजुगि जहाजु अरजुनु गुरू सगल स्रिस्टि लगि बितरहु ॥ *(पन्ना १४०८)*

अत: कलियुग के पापों को दूर करने के लिए सच्चे गुरु का दीदार (दर्शन) समस्त सुखों का खज़ाना है यथा गुरबाणी प्रमाण है :

कलजुग दुरत दूरि करबे कउ दरसनु गुरू सगल सुख सागरु ॥ *(पन्ना १४०४)*

गुरबाणी में स्पष्ट किया गया है कि विकारों के कारण अधोगति को प्राप्त हुई कलियुगी अवस्था में प्रभु का नाम जहाज़ का काम देता है और गुरमुख व्यक्ति को पार उतार देता है; परमेश्वर के नाम से जुड़े रहने वाले गुरमुखों का लोक-परलोक सफल हो जाता है यथा :

कलिजुगि राम नामु बोहिथा गुरमुखि पारि लघाई ॥
हलति पलति राम नामि सुहेले गुरमुखि करणी सारी ॥ *(पन्ना ४४३)*

अकाल पुरख वाहिगुरु आप दया करके जिन्हें यह दात बख़्शता है उन्हीं का जीवन धन्य हो जाता है।

म: १ ॥
साम कहै सेतंबरु सुआमी सच महि आछै साचि रहे ॥
सभु को सचि समावै ॥
रिगु कहै रहिआ भरपूरि ॥
राम नामु देवा महि सूरु ॥
नाइ लइऐ पराछत जाहि ॥
नानक तउ मोखंतरु पाहि ॥
जुज महि जोरि छली चंद्रावलि कान्ह क्रिसनु जादमु भइआ ॥
पारजातु गोपी लै आइआ बिंद्राबन महि रंगु कीआ ॥
कलि महि बेदु अथरबणु हूआ नाउ खुदाई अलहु भइआ ॥
नील बसत्र ले कपड़े पहिरे तुरक पठाणी अमलु कीआ ॥
चारे वेद होए सचिआर ॥
पड़हि गुणहि तिन्ह चार वीचार ॥
भउ भगति करि नीचु सदाए ॥
तउ नानक मोखंतरु पाए ॥२॥ (पन्न ४७०)

उपरोक्त सलोक में श्री गुरु नानक साहिब जी ने चार वेदों का चार युगों में सम्बंध बताकर जो परंपराएं चली आ रही थीं उनके विशेष रंगों एवं मान्यताओं का खंडन करते हुए सार पूर्ण तथ्य समझाते हुए कलयुगी जीवों का मार्ग दर्शन किया है कि मनुष्य केवल इन ग्रंथों के पठन एवं विचार मात्र से मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता अपितु श्रद्धा एवं प्रेम भाव से अहं भाव का त्याग करके ही जीवन सफल हो सकता

है एवं मोक्ष की प्राप्ति संभव है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि सामवेद (ब्राह्मणी मतानुसार) कहता है कि सतियुग में जगत के मालिक का रंग सफेद है और उस समय सब कुछ सत्य में ही लीन था और अंतत: सत्य में समा जाता है अर्थात् जब बहुतायता से (ज्यादातर) लोग सत्य एवं धर्म में लीन हों उस दौरान सतियुग कायम होता है। ऋग्वेद कहता है कि वह प्रभु सर्वोत्तम रूप से उसी प्रकार व्याप्त है जैसे श्री राम चंद्र जी का नाम इष्ट देवों में सूर्य की भांति चमकता है अर्थात् त्रेता युग में श्री राम चंद्र जी ही प्रभु में व्याप्त थे और उनका नाम लेने से समस्त पाप दूर होते थे गुरु पातशाह कथन करते हैं कि इस प्रकार लोग मुक्ति प्राप्त करते थे। ऋग्वेद के अनुसार ऐसी मान्यता है।

यजुर्वेद के समय अर्थात् द्वापर में कृष्ण कन्हैया यदुवंशी (यादव) हुए जिन्होंने अपने बल (शक्ति) से चंद्रावली नामक गोपी (ग्वालिन) को छला। वह अपनी प्रिय गोपी सत्यभामा के लिए इंद्र के बाग से पारिजात वृक्ष भी ले आये और वृंदावन में रास लीलाएं की और अनेक कौतुक किए।

कलियुग में अथर्ववेद प्रधान (प्रमुख) हो गया और इस दौरान विश्व के मालिक का नाम खुदा और अल्लाह विख्यात हो गया। लोगों ने नीले वस्त्र धारण कर लिए और अब तुर्कों एवं पठानों का राज्य हो गया। इस प्रकार चारों वेद अलग-अलग स्वभावों एवं धर्मों का बताकर सच्चे बन गए अर्थात् चारों युगों में संसार के मालिक का नाम अलग-अलग प्रचारित रहा और हर समय में यहीं ख़्याल (विचारधारा) बनी रही कि जो जीव क्रमश:श्वेतांबर राम, कृष्ण तथा अल्लाह- साम, ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद में जपता रहेगा उन्हें मुक्ति प्राप्त होगी तथा श्रेष्ठ युक्ति वाले अर्थात् विचारशील होंगे। लेकिन श्री गुरु नानक पातशाह जी के चिंतनानुसार जब मनुष्य प्रेमा-भक्ति करते हुए अहंकार रहित हो जाता है तभी वह मुक्ति प्राप्त करता है।

वास्तव में एक अकाल पुरख परमेश्वर को छोड़ कर समय-समय पर जगत में आए पीर-पैगंबर अथवा रहबरी पुरुषों को ईश्वर नहीं कहा जा सकता वे धर्म गुरु अथवा पथ प्रदर्शक ईश्वर का मार्ग दर्शाने वाले तो हो सकते हैं लेकिन गुरबाणी आश्यानुसार ईश्वर कदाचित नहीं क्योंकि ईश्वर तो एक ही है और वह योनियों में नहीं आता, आवागमन से पूर्ण तथा मुक्त है जिसका वर्णन श्री गुरु नानक देव जी ने मूल मंत्र में स्पष्ट रूप से किया है पावन ग्रंथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी प्रारंभ मूल मंत्र से ही हुआ है :

੧ੴसति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

अर्थात् वह पारब्रह्म परमेश्वर परमात्मा एक ही है। उसका नाम सदैव सत्य स्वरूप (कालातीत) है। वह सृष्टि का रचयिता (सृजनहार) है तथा सर्वव्यापी है। वह निर्भय स्वरूप (निडर) है निरवैर (शत्रु भाव से मुक्त) है सौंदर्य रूप में वह कालातीत है वह अजन्मा है तथा स्वत: (स्वयं से प्रकाशवान) है। उसे केवल गुरु की कृपा से ही जपा जा सकता अर्थात् स्र्वत्र में बसता प्रतीत किया जा सकता है।

तथा ऐसे एक परिपूर्ण परमेश्वर की गुरु दर्शाए मार्ग द्वारा की गई प्रेमा-भक्ति से ही मुक्ति मुमकिन है। विनम्रता एवं प्रेम भाव से उस सर्वकला समर्थ प्रभु की आराधना से कोई भी भवसागर से पार उतर सकता है तथा गुरबाणी प्रमाण :

खत्री ब्रहमणु सूदु बैसु उधरै सिमरि चंडाल ॥

जिनि जानिओ प्रभ आपना नानक तिसहि रवाल ॥ *(पन्ना ३००)*

गुरबाणी में तो यहां तक समझाया गया है कि वह जीभ (जुबान) ही जल जाए जो उस ठाकुर अर्थात् प्रभु को योनियों में आने वाला कहती है।

अत: श्री गुरु नानक पातशाह जी ने इस सलोक में मिथ्या विश्वासों को छोड़कर केवल एक परमेश्वर की बंदगी पर ज़ोर दिया है। श्री गुरु नानक देव जी ने बाणी में अनेक बार इस भाव को दृढ़ करवाया है कि हे भाई! मेरा मालिक तो एक ही है दूसरा कोई भी नहीं। उस सच्चे प्रभु की कृपा से ही सुख प्राप्त होता है। ऐसे प्रभु को गुरु के बिना नहीं पाया जा सकता। वह परमेश्वर स्वयं ही मार्गदर्शक है और सच्ची भक्ति जीव के मन में दृढ़ करवाता है। यथा गुरबाणी प्रमाण :

साहिबु मेरा एकु है अवरु नही भाई ॥
किरपा ते सुखु पाइआ साचे परथाई ॥३॥
गुर बिनु किनै न पाइओ केती कहै कहाए ॥
आपि दिखावै वाटड़ीं सची भगति द्रिड़ाए ॥४॥
(पन्ना ४२०)

इसलिए गुरु साहिब ने इक ओंकार के भाव को बाणी में बहुतायता से दृढ़ करवाया है यथा गुरबाणी प्रमाण :

साहिबु मेरा एको है ॥
एको है भाई एको है ॥ . .
जैसा वरतै तैसो कहीऐ सभ तेरी वडिआई ॥
(पन्ना ३५०)

अकाल पुरख रहमत करें और हमारा विश्वास पूर्ण तौर पर एक वाहिगुरु पर बने।

पउड़ी ॥
सतिगुर विटहु वारिआ जितु मिलिऐ खसमु समालिआ ॥
जिनि करि उपदेसु गिआन अंजनु दीआ इन्ही नेत्री जगतु निहालिआ ॥
खसमु छोडि दूजै लगे डुबे से वणजारिआ ॥
सतिगुरु है बोहिथा विरलै किनै वीचारिआ ॥
करि किरपा पारि उतारिआ ॥१३॥ (पन्ना ४७०)

प्रस्तुत पउड़ी में गुरु साहिब ने जीव को बणजारा (व्यापारी) सम्बोधित करते हुए स्पष्ट किया है जो एक मालिक को छोड़ कर दूसरों के आसरे रहते हैं वे भवसागर में डूब जाते हैं तथा जीव को इस हकीकत से भी रूबरू करवाया है कि इस संसार रूपी भवसागर से पार उतरने हेतु गुरु जहाज़ सदृश्य है यह समझ किसी विरले को ही आती है तथा गुरु-कृपा से ही भवसागर से पार उतरा जा सकता है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि मैं अपने सतिगुरु पर बलिहार जाता हूं, जिससे मिलकर मैं मालिक प्रभु को याद करता हूं अर्थात् गुरु का मिलाप ही मेरे लिए परमेश्वर से जुड़ने का असल माध्यम है इसलिए मैं गुरु से कुर्बान जाता हूं। जिस गुरु ने अपने ज्ञान के उपदेश (शिक्षा) से मुझे ज्ञान का सुरमा दे दिया जिसकी बदौलत मैं इन आंखों से जीवन की असलियत (वास्तविकता) को समझ सका हूं कि जो इन्सान मालिक प्रभु को भुला देता है और दूसरों में चित्त जोड़ता है, वे इस संसार सागर में डूब गए हैं, गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि (इस संसार में) इस हकीकत को किसी विरले ने ही पहचाना है कि संसार रूपी भवसागर के पार उतरने हेतु सतिगुरु ही जहाज़ के समान है और ऐसे भाग्यशाली जीवों को सतिगुरु ने रहमत करके संसार सागर से पार उतार दिया है।

गुरबाणी में सर्वत्र गुरु की महिमा का बखान है। अकाल पुरख की रहमत से पूर्ण गुरु

की प्राप्ति होती है और पूर्ण गुरु की कृपा से वाहिगुरु का सिमरन मुमकिन है अर्थात् गुरु की कृपा दृष्टि से प्रभु भक्ति हो सकती है जो जीव के जीवन का असल उद्देश्य है। जब गुरु कृपा से ज्ञान का सुरमा हृदय रूपी नेत्रों में पड़ता है तभी अज्ञानता का अंधेरा अर्थात् द्वेत भाव दूर होता है एक पर विश्वास बनता है, झूठे सहारे छोड़ कर जीव जीवन मनोरथ को पूर्णतया समझ लेता है तथा किसी भी प्राप्ति का गुमान न करते हुए उसे गुरु की कृपा समझता है। इसलिए गुरु की मध्यस्था अनिवार्य है।

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने भी पावन बाणी सुखमनी साहिब में स्पष्ट किया है कि गुरु ने मुझे ज्ञान रूपी अंजन दिया है जिसके फलस्वरूप मेरा अज्ञान का अंधेरा मिट गया है। प्रभु की कृपा से मेरा मिलाप संत पुरुष से हो गया, जिससे मेरा मन प्रकाशित (उज्ज्वल) हो गया। यथा गुरबाणी प्रमाण :

गिआन अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु ॥
हरि किरपा ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु ॥१॥ *(पन्ना २९३)*

श्री गुरु नानक पातशाह जी ने वार माझ में भी गुरु की महत्ता समझाते हुए कलियुगी जीवों का मार्ग दर्शन किया है कि गुरु ही दाता है, गुरु जी हृदय को शीतलता प्रदान करने वाला है तथा गुरु जी तीनों लोकों को अलोकित (प्रकाशित) करने वाला दीपक है। गुरु की रहमत से ही सदैव कायम रहने वाले प्रभु-नाम रूपी पदार्थ में अगर मन लीन हो जाए तो सदा कायम रहने वाला सुख प्राप्त हो जाता है। यथा गुरबाणी प्रमाण :

सलोक मः १ ॥
गुरु दाता गुरु हिवै घरु गुरु दीपकु तिहु लोइ ॥
अमर पदारथु नानका मनि मानिऐ सुखु होइ ॥१॥
(पन्ना १३७)

साथ ही जीव रूपी बणजारे को गुरबाणी में अन्यत्र भी गुरु पातशाह ने समझाया है कि--हे व्यापारियो, इस संसार में तुम व्यापार कर लो और अपने सौदे को संभाल कर रखो। ऐसा सौदा ही खरीदो जो सदैव साथ निभने वाला हो क्योंकि वह परमेश्वर रूपी व्यापारी अत्यंत बुद्धिमान है, वह तुम्हारे सत्य के सौदे को पूरी तरह संभाल लेगा। अतः एकाग्रचित होकर प्रभु का नाम लो।

परमेश्वर के गुणानुवाद का सौदा यहां से लेकर चलो ताकि वह मालिक तुम्हें प्रसन्नता की दृष्टि से देखे। यथा :

वणजु करहु वणजारिहो वखरु लेहु समालि ॥
तैसी वसतु विसाहीऐ जैसी निबहै नालि ॥
अगै साहु सुजाणु है लैसी वसतु समालि ॥१॥
भाई रे रामु कहहु चितु लाइ ॥
हरि जसु वखरु लै चलहु सहु देखै पतीआइ ॥१॥
(पन्ना २२)

अतः इस तरह का सच्चा व्यापार भी गुरु के मार्ग दर्शन से ही मुमकिन है। गुरु रहमत करे और हम भी सच्चा सौदा करके जीवन सार्थक बना सकें। ❂

ख़बरनामा

श्री गुरु गोबिंद सिंघ के ३५० वर्षीय प्रकाश पर्व को समर्पित गुरमति समागम शानो-शौकत सहित सम्पन्न हुए

श्री अमृतसर : ५ जनवरी : तख़्त श्री हरिमंदर जी, पटना साहिब के विशेष पंडाल तथा श्री पटना साहिब के गांधी मैदान में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ३५० वर्षीय प्रकाश पर्व को समर्पित करवाए जा रहे गुरमति समागम अपने आखिरी दिन पूरी शानो-शौकत सहित सम्पन्न हुए। लाखों की तादाद में देश-विदेश से संगत नत्मस्तक हुई। तख़्त श्री हरिमंदर जी, पटना साहिब द्वारा सिक्खों की सिरमोर जत्थेबंदी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी तथा श्री नितिश कुमार मुख्यमंत्री, बिहार सरकार एवं प्रशासन के सहयोग से करवाए गए गुरमति समागमों में संत समाज, संप्रदायों, टकसालों, संतों-महापुरुषों, निहंग सिंघ जत्थेबंदियों, सिंघ सभाओं, उदासीन तथा निरमले संप्रदायों तथा सर्व धर्म की प्रमुख शख़्सियतों ने शमूलियत कर अपना-अपना बहुमूल्य योगदान डाला। श्री पटना साहिब रंग-बिरंगी रौशनियों से जगमगा उठा तथा बहशत के नज़ारे जैसा आनंद का अनुभव महसूस हुआ। श्री पटना साहिब के निवासियों तथा दूर-दराज़ से आई संगत पर कलगीधर दशमेश पिता की रहमतों की बख़्शिश की वर्षा हुई और हर धर्म के लोग दशम पिता जी की खुशियों से झोलियां भर कर गए। सब ने श्रद्धा-भावना व सत्कार सहित तख़्त श्री हरिमंदर जी, पटना साहिब तथा इसके साथ लगते गुरु साहिब के ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान के दर्शन-दीदार किए।

आज अमृत वेला से ही श्री पटना साहिब के गांधी मैदान में रखे गए गुरमति समागम तथा तख़्त श्री पटना साहिब के विशेष पंडाल में रखे गए गुरमति समागमों में पंथ प्रसिद्ध जत्थों ने इलाही बाणी का कीर्तन किया। पंथ प्रसिद्ध कथा वाचकों ने संगत से गुरमति विचारों की सांझ डालते हुए दशम पिता जी के जीवन वृत्तांत के भिन्न-भिन्न पहलुओं से अवगत करवाया। ढाडी व कवीशरी जत्थों ने वारों का गायन कर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की महान कुर्बानियों का एहसास करवाया। कवि दरबार में प्रसिद्ध नामवर शायरों ने दशम पातशाह जी के जीवन के अलग-अलग पहलुओं और दिल दहला देने वाली घटनाओं को बड़ी बाखूबी से अपनी कलम की जादूगरी में पिरो पर संगत के रूबरू पेश किया और आंखों से नीर बहा दिया।

समागम के अंत में प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर ने दशम पातशाह जी के ३५० वर्षीय प्रकाश पर्व में शामिल हुई प्रमुख शख़्सियतों व संगत का तह दिल से धन्यवाद किया।

प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर द्वारा दशम पातशाह जी के ३५० वर्षीय प्रकाश पर्व के मौके पर शामिल हुई प्रमुख शख़्सियतों एवं संगत का धन्यवाद

श्री अमृतसर : ५ जनवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर के अध्यक्ष प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर ने सरवंशदानी, साहिबे-कमाल, दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ३५० वर्षीय प्रकाश पर्व को समर्पित उनके प्रकाश-स्थान श्री पटना साहिब में देश-विदेश से उत्साह सहित पहुंचीं प्रमुख शख़्सियतों, धार्मिक जत्थेबंदियों, निहंग सिंघ दलों व संगत का धन्यवाद किया है।

प्रो. बडूंगर ने धन्यवाद संदेश में कहा है कि दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ३५० वर्षीय प्रकाश पर्व को मनाने हेतु धर्म, जाति व नसल से ऊपर उठकर पूरी दुनिया में हर वर्ग के लोग लाखों की तादाद में शामिल हुए हैं। उन्होंने कहा कि आधुनिक तनाव भरे माहौल में मानव एकता व शांति का संदेश देते हुए हिंदू, जैनी, बोधी, निरमले, ईसाई, पारसी, मुस्लिम तथा अन्य अनेकों भिन्न-भिन्न धर्मों के लोग भी गुरु साहिब के प्रकाश पर्व को समर्पित समागमों का हिस्सा बने हैं। यह विश्व स्तर पर भाईचारक सांझ की बहुत बड़ी मिसाल है। उन्होंने पूरे विश्व से पहुंचीं प्रमुख शख़्सियतों व संगत का ज़िक्र करते हुए कहा कि यह दशम पातशाह जी की मानवतावादी शख़्सियत का प्रभाव है जो हदों-सरहदों व भिन्न-भेद को खत्म करने का संदेश देता है।

प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर ने बिहार के मुख्यमंत्री श्री नितिश कुमार सहित समूची बिहार सरकार तथा अफसरशाही की प्रशंसा करते हुए कहा कि समूचे समागमों को योजनाबद्ध ढंग से सम्पन्न करने हेतु वो मुबारकबाद के हकदार हैं। उन्होंने कहा कि बिहार सरकार व तख़्त श्री हरिमंदर जी, पटना साहिब की प्रबंधक कमेटी द्वारा मांगे गए सहयोग के अनुसार शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने अपने ४०० मुलाज़िम, रागी, ढाडी तथा कवीशर भेजकर प्रकाश पर्व को समर्पित समागमों की सफलता के लिए सेवा की है। प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर ने प्रकाश पर्व समागमों में हिस्सा लेने के लिए भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, केंद्रीय मंत्रियों, पंजाब के मुख्यमंत्री स. परकाश सिंघ बादल, बाबा कशमीर सिंघ भूरी वाले, बाबा सेवा सिंघ खडूर साहिब, बाबा हरनाम सिंघ खालसा दमदमी टकसाल, बाबा बलबीर सिंघ शिरोमणि बुड्ढा दल, बाबा अवतार सिंघ सुरसिंघ बिधी चंद संप्रदाय, भाई महिंदर सिंघ बरमिंघम के साथ-साथ सिंघ सभाओं, गतका पार्टियों, लंगर व अन्य सेवाएं निभाने वाली समूह संगत का भी विशेष रूप में धन्यवाद किया है।

अमेरिकी फौज में दसतार व दाड़ी रखने की अनुमति देने का फैसला प्रशंसनीय : प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर

श्री अमृतसर : ६ जनवरी : शिरोमति गु. प्र. कमेटी के अध्यक्ष, प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर ने अमेरिकी फौज में सिक्खों को दसतार सजाने तथा दाड़ी (केश) रखने की अनुमति देने के फैसले का खूब स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि अमेरिकी फौज द्वारा अल्प संख्यक कौम के धार्मिक चिन्हों को मान्यता देने वाले नये नेमों से सिक्ख की पहचान की मान्यता को बल मिलेगा। प्रो. बडूंगर ने उन सिक्ख फौजियों को भी मुबारकबाद दी, जिनकी पटीशनों के बाद अमेरिकी फौज द्वारा नियमों में बदलाव किया गया है। इस ख़बर की दुनिया भर में बसते सिक्खों द्वारा प्रशंसा की जा रही है।

प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर ने कहा कि अमेरिकी फौज के इस फैसले से विदेशों में सिक्खों पर होते नसली हमलों व टिप्पणियों का चलन अवश्य कम होगा, क्योंकि यह फैसला विदेशों में सिक्ख की पहचान को उभारने वाला है। सिक्खों ने हिम्मत, मेहनत, सुहृदयता व दृढ़ता से दुनिया में विलक्षण मुकाम हासिल किया है, इस लिए अलग-अलग देशों की सरकारों की यह जिम्मेदारी बनती है कि सिक्खों की धार्मिक भावनाओं की कद्र करते हुए उनको अलग-अलग विभागों में सेवा निभाते समय धार्मिक चिन्ह धारण करने की पूर्ण छूट देकर स्वतंत्रता सहित विचरण करने दिया जाए।